विक्रम संवत् 2082 ▪ आषाढ़/श्रावण मास (05) ▪ 01 जुलाई 2025 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

श्री हेमंत खंडेलवाल
भाजपा प्रदेश अध्यक्ष

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी को पुष्पांजलि अर्पित की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला से बातचीत की।

▪ केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने संविधान हत्या दिवस पर संबोधित किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी आचार्य विद्यानंद जी महाराज के शताब्दी समारोह में शामिल हुए।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने "तिरंगा यात्रा" में भाग लिया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री नारायण गुरु को पुष्पांजलि अर्पित की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय श्री विजय रूपाणी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

अनुक्रमणिका

» **संपादकीय** • संजय गोविन्द खोचे 04

▪ निर्विरोध प्रदेश अध्यक्ष चुन भाजपा ने रचा इतिहास

» **कवर स्टोरी** • 05

▪ डॉ. मुखर्जी व दीनदयाल जी के सपने को आगे बढ़ाना है - हेमंत खंडेलवाल

▪ **संकल्प से सिद्धि के गौरवशाली 11 वर्ष** 08

» देश नए मुकाम पर - जगत प्रकाश नड्डा...

▪ **संविधान हत्या दिवस** 12

» आपातकाल कांग्रेस का अन्यायकाल था- अमित शाह

▪ **आलेख : हेमंत खंडेलवाल** 16

» डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी-भारत की एकता के अमर प्रहरी...

▪ **संविधान हत्या दिवस** 17

» आपातकाल लोकतंत्र पर हमला था जगत प्रकाश नड्डा

▪ **आलेख : विष्णुदत्त शर्मा** 19

» आपातकाल: लोकतांत्रिक व्यवस्था पर सबसे बड़ा हमला

▪ **आलेख : हितानंद शर्मा** 21

» आपातकाल-लोकतंत्र का काला अध्याय

▪ **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** 22

» आओ! मर्दों नामर्द बनो

▪ **आलेख : शिवप्रकाश** 23

» भारत की सुरक्षा एवं मोदी सरकार

▪ **आलेख : सीए अखिलेश जैन** 25

» मोदी जी दिलों पर राज करते हैं

▪ **अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस** 26

» योग को जन-आंदोलन बनाएं-प्रधानमंत्री

» योग से सकारात्मक बदलाव जगत प्रकाश नड्डा

▪ **सांसद-विधायक प्रशिक्षण वर्ग** 30

» भाजपा ने दशकों तक बेदाग रहकर देश की सेवा करने वाले नेता...

▪ **विकास का नया दौर** 32

» जम्मू-कश्मीर के विकास को नई गति...

▪ **मन की बात** 35

» संविधान के रक्षकों को नमन

▪ **जन्म दिवस** 39

» अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद

» सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रणेता तिलकजी

▪ **विचार प्रवाह** 41

» क्या है सेक्यूलरिज्म ?

• मुख्य व्रत-त्यौहार

4. भड़ली नवमी, नवरात्रा समा. 5. आशा दशमी 6. देवशयनी, हरिशयनी ग्यारस 7. वासुदेव द्वादशी 8. प्रदोष व्रत, मंगला तेरस, विजया पार्वती व्रत 10. स्नानदान व्रत, गुरू पूर्णिमा 14. गणेश चतुर्थी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत प्रारम्भ 15. मौना पंचमी, मंगला गौरी व्रत 17. शीतला सप्तमी 21. कामिका ग्यारस, सोम. व्रत 22. प्रदोष व्रत,मंगला गौरी व्रत 23. शिव चतुर्दशी व्रत 24. हरियाली अमावस्या, स्नानदान श्राद्ध अमावस्या 26. चन्द्रदर्शन, सिंधारा दोज 27. मधुश्रवा, हरियाली तीज, स्वर्ण गौरी व्रत,झूला प्रारम्भ 28. विनायकी चतुर्थी व्रत,दूर्वा गणपति व्रत, सोमवार व्रत, 29. नागपंचमी, मंगला गौरी व्रत

• मुख्य जयंती-दिवस

1. डॉक्टर्स एवं सी.ए. दिवस 6. डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जयंती, विठ्ठलवारी महोत्सव 14. प्राणनाथ परमधाम वास दिवस 19. डॉ. खूबचंद बघेल ज. 23. लोकमान्य तिलक जयंती 24. स्वामी अखंडानंद सरस्वती जयंती 27. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पु. ति. 29. चौरसिया दिवस, कवि. सुभद्राकुमारी चौहान जयंती 31. मुंशी प्रेमचंद जयंती, मोहम्मद रफी पुण्यतिथि, उधमसिंह श.दि.

वर्ष-57, अंक : 05, भोपाल, जुलाई 2025

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

हमें एक ऐसा भारत बनाना है जो हमारे पूर्वजों के भारत से भी अधिक गौरवशाली हो।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

निर्विरोध प्रदेश अध्यक्ष चुन भाजपा ने रचा इतिहास

जनता के दिलों पर राज करने वाले प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के गरीब कल्याण के 11 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। निश्चित रूप से मोदी सरकार के सेवा, सुशासन व गरीब कल्याण के कार्यों को स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जावेगा।

संगठन पर्व के अंतर्गत भाजपा मध्य प्रदेश ने बूथ कमेटियों से प्रदेश अध्यक्ष तक का चयन का कार्य पूरा कर लिया है। आज के राजनीतिक परिदृश्य में, जिस राजनीतिक दल की केंद्र में 11 वर्षों से सरकार हो, मध्यप्रदेश में लंबे समय से राज्य सरकार हो, देश के अधिकांश हिस्से में राज्य सरकारें हों, उस दल के प्रदेश अध्यक्ष का चयन वह भी निर्विरोध? यह अनुशासन केवल भाजपा में ही संभव है। भाजपा में प्रदेश अध्यक्ष का चयन उत्सव के रूप में हुआ। प्रदेश अध्यक्ष के चयन ने सिद्ध कर दिया कि भाजपा कार्यकर्ताओं का संगठन है, और कार्यकर्ता ही भाजपा की वास्तविक ताकत है। भाजपा में कार्यकर्ता होना गर्व की बात है। हर कार्यकर्ता के लिए भाजपा में अवसर समान हैं। किसी परिवार या धर्म विशेष का कोई स्थान आरक्षित नहीं है। त्यागी, तपस्वी कार्यकर्ताओं के बलबूते आज भाजपा विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बना है। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी से श्री नरेंद्र मोदी तक की यात्रा में भाजपा नेतृत्व ने अपने त्याग, तपस्या व स्वच्छ छवि से भारत की जनता के मन में भाजपा कार्यकर्ताओं के लिए एक विशेष स्नेह प्राप्त करने में सफलता पाई है। यही बीजेपी की वास्तविक पूंजी है।

जनता के दिलों पर राज करने वाले प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के गरीब कल्याण के 11 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। निश्चित रूप से मोदी सरकार के सेवा, सुशासन व गरीब कल्याण के कार्यों को स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जावेगा। मोदी सरकार ने अमृत काल में 11 वर्षों में विकसित भारत@2047 का आधार तैयार कर दिया है। देश घोर निराशा के भाव से बाहर आकर दौड़ने के लिए, ऊंची छलांग लगाने के लिए तैयार हो गया है। बीते 11 वर्षों में जहां भारत ने विकास के नए मापदंड तैयार किए हैं, वहीं बीते 11 वर्ष साहसिक निर्णयों से भी भरे हुए हैं। अनुच्छेद 370 को हटाया जाना कभी काल्पनिक प्रतीत होता था पर यह भ्रम भी श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में टूट चुका है। तीन तलाक की प्रथा पर सर्वोच्च न्यायालय भी बहुत कुछ कह चुका था, पर कोई भी सरकार मुस्लिम महिलाओं की परेशानी पर कान देना पसंद नहीं करती थी, मोदी जी ने निर्णायक प्रयास कर मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक की तलवार से सदा-सदा के लिए मुक्त करवा दिया है। महिला आरक्षण चर्चा का विषय तो बन जाता था पर निर्णायक कदम उठाना मोदी जी के लिए भगवान ने संभाल के रखा था। महिलाओं को नीति-निर्णय में भागीदारी मोदी जी को ही देना था। आतंकवाद की जड़ों पर करारा व निर्णायक प्रहार मोदी जी को ही करना था। 10वीं अर्थव्यवस्था से चौथी अर्थव्यवस्था बन जाना-यह केवल मोदी जी ही कर सकते थे। एक समय वो भी गुजरा है जब निवेशक भारत की तरफ रुख भी नहीं करते थे, आज निवेशक भारत के दरवाजे पर लाइन लगाकर खड़े हैं। प्रति व्यक्ति आय में 67 प्रतिशत के वृद्धि हुई है। विदेशी मुद्रा भंडार में 135 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। निर्यात ने 825 अरब अमेरिकी डॉलर से ज्यादा का स्तर प्राप्त किया है। एफडीआई में 106 प्रतिशत की वृद्धि, टैक्स पेयर्स में 127 प्रतिशत की वृद्धि, डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन में 238 प्रतिशत की वृद्धि - मोदी सरकार के निर्णयों की दूरदर्शिता का ही परिणाम है। विश्व बैंक भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था मान चुका है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम तो 2025-26 में वैश्विक आर्थिक वृद्धि का प्रमुख इंजन भारत को कह चुका है। मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने अर्थव्यवस्था में न केवल खुद को मजबूत व स्थिर बनाए रखा बल्कि चुनौतियों का सामना करने के योग्य बनाया। भारत ने हर चुनौती का सामने से डटकर मुकाबला किया, चुनौतियों को अपने कब्जे में लिया। गरीबी हटाओ का नारा भारत में बहुत पुराना था, पर किसी ने गरीबी हटाने का कभी कोई प्रयास नहीं किया, मोदी सरकार ने गरीब कल्याण का नारा नहीं, धरातल पर गरीबों का कल्याण करके दिखाया है। आज 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आ चुके हैं। अत्यधिक गरीबी में 80 प्रतिशत की कमी दर्ज हो चुकी है। 80 करोड़ लोगों को निशुल्क अनाज मिल रहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत 4 करोड़ पक्के मकान बनाए जा चुके हैं 3 करोड़ और पक्के मकान बनाए जाने का संकल्प भी हो चुका है। जनधन-आधार-मोबाइल को जोड़कर बनाई गई जैम ट्रिनिटी के जरिए मोदी सरकार 3.90 लाख करोड़ रुपए का लीकेज रोकने में सफल रही है। सोचिए कितनी विशाल धनराशि को रोकने में मोदी सरकार सफल हुई है।

25 जून 1975 को लोकतंत्र की मर्यादा को तार-तार करके देश के संविधान को कुचल कर तानाशाही ने आपातकाल लागू किया था। प्रधानमंत्री मोदी जी ने संविधान हत्या दिवस मनाने का निर्णय लिया। यह कदम इसलिए भी जरूरी था कि हमारी युवा पीढ़ी को तानाशाही स्वभाव की विभीषिका मालूम हो सके। लोकतंत्र तभी कायम रह सकता है जब तानाशाही स्वभाव उभर कर ना आवे। लोकतंत्र की जड़ों को गहरा करने के लिए- लोकतंत्र सेनानियों के संघर्ष को सम्मान देना अत्यावश्यक है। ये लोकतंत्र सेनानी ही हैं, जिनके कारण देश में लोकतंत्र पुर्नस्थापित हो पाया है। देश की आजादी को कायम रखने के लिए लोकतंत्र की जड़ों का गहरा होना बहुत जरूरी है और लोकतंत्र की रक्षा के लिए संविधान की मर्यादा की रक्षा आवश्यक है। संविधान की भावना का सम्मान आवश्यक है। मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा ने न केवल डॉ. अम्बेडकर के संविधान की रक्षा करी, बल्कि संविधान का मान भी बढ़ाया। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

डॉ. मुखर्जी व दीनदयाल जी के सपने को आगे बढ़ाना है - हेमंत खंडेलवाल

- पितृपुरूषों एवं कार्यकर्ताओं के त्याग एवं तपस्या से सिंचित संगठन है भाजपा।
- अंतिम व्यक्ति की सेवा का विचार और राष्ट्रवादी भाव ही हमारा अटल संकल्प।
- डबल इंजन की सरकार के विकास कार्यों को घर-घर तक पहुंचायेंगे कार्यकर्ता।

हम सभी कार्यकर्ता सौभाग्यशाली हैं, जिसका नेतृत्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति बनकर विश्व गुरू बनने जा रहा है। सभी ने मुझे जो पद सौंपा है, वह पद नहीं एक दायित्व है।

कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत के कारण पार्टी का मध्यप्रदेश संगठन पूरे देश में आदर्श बनकर उभरा है। हमारा संगठन पितृपुरूषों, कार्यकर्ताओं के त्याग, तपस्या और बलिदान से सिंचित है। अंतिम व्यक्ति की सेवा का विचार और राष्ट्रवादी भाव ही हमारा अटल संकल्प है। हम पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर पार्टी संगठन को और ऊंची बुलंदियों पर ले जाएंगे। मेरा पूरा प्रयास रहेगा कि पार्टी के हर कार्यकर्ता के सम्मान में कोई कमी न आए। मैं भी सामान्य कार्यकर्ता हूं। भाजपा संगठन कार्यकर्ताओं को क्षमता और योग्यता के आधार पर दायित्व सौंपता है। भाजपा के निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने संगठन को बहुत आगे ले जाने का कार्य किया है। हम सभी कार्यकर्ता सौभाग्यशाली हैं, जिसका नेतृत्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति बनकर विश्व गुरू बनने जा रहा है। सभी ने मुझे जो पद सौंपा है, वह पद नहीं एक दायित्व है। पार्टी के पूर्ववर्ती प्रदेश अध्यक्षों ने संगठन को मजबूत करने का कार्य किया है। पहले जनसंघ, फिर भाजपा संगठन को श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे, श्रद्धेय सुंदरलाल पटवा, श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी और राजमाता श्रीमती विजयाराजे सिंधिया मध्यप्रदेश की माटी से थे, जिन्होंने भाजपा को शिखर तक पहुंचाने का कार्य किया है। मेरा परिवार पिछले 100 साल से कांग्रेस के विरोध में अपना झंडा बुलंद करता रहा है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने जो सपना देखा था, उसे आगे लेकर हमें चलना है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में एवं केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी के नेतृत्व में हम लोगों को लगातार संगठन को मजबूत बनाना है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश विकास की एक नई परिभाषा लिख रहा है। आम जनता से जुड़कर जनहितैषी व कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं, जो विकसित मध्यप्रदेश की दिशा में बड़ा कदम है। आज समाज भारतीय जनता पार्टी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। हम सभी मिलकर सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा द्वारा लिखी इबारत को आगे ले जाने का काम करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा किए गए हर विकास कार्य को हमारे कार्यकर्ता नीचे तक उतारने का काम करेंगे। राष्ट्रीय एवं प्रदेश नेतृत्व के मार्गदर्शन व सहयोग से सत्ता-संगठन के बीच समन्वय बनाकर चलेंगे। केंद्रीय नेतृत्व, प्रदेश नेतृत्व एवं देवदुर्लभ कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करता हूँ एवं आशा करता हुँ कि आपका आशीर्वाद व सहयोग मुझे मिलता रहेगा। मेरा हर समय यह प्रयास रहेगा कि किसी भी कार्यकर्ता का मान सम्मान कम ना हो, भारतीय जनता पार्टी का झंडा हमेशा बुलंद रहे और हम ऊंचाइयों पर पहुंचे।

"हम" की भावना से बढ़ती है हमारी ताकत डॉ. मोहन यादव

- **मध्यप्रदेश को सर्वश्रेष्ठ राज्य बनाने का संकल्प लेकर आगे बढ़ें।**
- **भाजपा कार्यकर्ताओं में 'तुम' नही 'हम' की भावना, यही संगठन की बड़ी ताकत।**

भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता इस भाव से काम नहीं करता कि मैं राजनीति में काम कर रहा हूं। वह क्षेत्र के विकास और भारत माता की सेवा के लिए काम करता है। अपनी भूमिका को कैसे और आगे बढ़ाऊं, अपनी कमजोरियों को दूर कर किस तरह अच्छाईयों को धारण करूं। इसी भावना के साथ हमारी निर्वाचन प्रक्रिया पूरी हो गई और किसी को पता नहीं चला। हमारे बीच तुम नहीं, हम की भावना है और इसी से हमारी ताकत बढ़ती है। हमारे संगठन पर्व का एक चरण पूरा हो गया है, लेकिन हम सभी यह संकल्प लें कि अपने-अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए मध्यप्रदेश को सर्वश्रेष्ठ राज्य बनाने के लिए आगे बढ़ते रहेंगे।

हमारी संगठन प्रक्रिया बड़ी सहजता के साथ संपन्न हुई, लेकिन चुनौतियां अभी भी हमारे सामने हैं। हमारे विरोधी षडयंत्र पर षडयंत्र रच रहे हैं और इन षडयंत्रों के बलबूते पर अपने मंसूबों को पूरा करना चाहते हैं। जिन्होंने संविधान की हत्या की, वो संविधान हाथों में लेकर जनता की आंखों में धूल झोंकने का काम कर रहे हैं। अपने आपको कानून से भी ऊपर मानकर चलते हैं। जिन्होंने जीवन भर बाबा साहब अंबेडकर जी को अपमानित करने का काम किया, वो उनके नाम पर वोट बटोरने की साजिश रच रहे हैं। ऐसे संकटों से हम 1951 से निपटते आए हैं और आज भारतीय जनता पार्टी दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बनी है।

हम जो राजनीति करते हैं, वो देश की जड़ों से जुड़कर करते हैं। सनातन संस्कृति का वृक्ष, फल-फूल, पत्तियां सब नीचे हैं और जड़ें आसमान में हैं। इसलिए दुनिया के अनेक देशों की संस्कृति मिट गई या बदल गई, लेकिन हमारी संस्कृति आज भी कायम है। ▪

श्रद्धेय ठाकरे जी के पदचिन्हों पर चलकर सामूहिकता की भावना से इतिहास बनाया- विष्णुदत्त शर्मा

- **संगठन कार्यों में मध्यप्रदेश को आदर्श राज्य बनाने में एक-एक कार्यकर्ता का अहम योगदान।**
- **मुख्यमंत्री और प्रदेश अध्यक्ष के नेतृत्व में प्रदेश को और आगे ले जाने संकल्प लें कार्यकर्ता।**

मध्यप्रदेश का संगठन आदर्श है। आदर्श राज्य बनने में जनसंघ से लेकर भाजपा की कई पीढ़ियां खपी हैं। इसमें एक-एक कार्यकर्ता का अहम योगदान है। श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे के पदचिन्हों पर चलते हुए सामूहिकता की भावना से कार्यकर्ताओं ने इतिहास बनाया है। मध्यप्रदेश के 62 संगठनात्मक जिलों में 1313 मंडल के 65014 बूथों में से 99.9 प्रतिशत बूथ समितियों का गठन कर डिजिटली बूथ एनरोल्ड कर पार्टी ने देश में इतिहास बनाने का कार्य किया है। सभी कार्यकर्ता मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल के नेतृत्व में मध्यप्रदेश को और आगे ले जाने का संकल्प लें। मध्यप्रदेश में संगठन पर्व संपन्न हो गया है। पार्टी कार्यकर्ताओं ने पूरे उत्साह और उमंग के साथ संगठन पर्व को पूरा कराया। यह वह मध्यप्रदेश है जिसे श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे, राजमाता श्रीमती विजयाराजे सिंधिया, स्वर्गीय सुंदरलाल पटवा, स्वर्गीय कैलाश जोशी से लेकर सभी वरिष्ठ नेतृत्व ने मिलकर गढ़ा है। संगठन तंत्र की शक्ति ही वैभव का चित्र सजाती है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी के मार्गदर्शन में पूरे मध्यप्रदेश के 41 लाख कार्यकर्ताओं को डिजिटली एनरोल्ड कर गांव-गांव तक संगठन को मजबूत किया गया। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने 2023 के विधानसभा चुनाव में 50 प्रतिशत से ऊपर मत प्राप्त करने का जो लक्ष्य हमें दिया था, उसके आधार पर पार्टी कार्यकर्ताओं ने अथक मेहनत व परिश्रम किया और विधानसभा चुनाव में भाजपा को मध्यप्रदेश में 49 प्रतिशत और लोकसभा में 59 प्रतिशत से अधिक मत प्राप्त किया, यह सामूहिकता के साथ संगठन तंत्र की मजबूती से संभव हुआ है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में आज मध्यप्रदेश द्रुत गति से विकास में आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और नवनिर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल के नेतृत्व में हम सभी कार्यकर्ता मध्यप्रदेश को आदर्श संगठन से और आगे ले जाने का कार्य करेंगे। ▪

प्रधानमंत्री जी के मूल मंत्रों के साथ संगठन को आगे ले जाएंगे नए प्रदेश अध्यक्ष - शिवराज सिंह चौहान

- **आदर्श विधायक की भूमिका निभाई, अब संगठन को और आगे ले जाएंगे हेमंत खंडेलवाल।**
- **नए प्रदेश अध्यक्ष के दिमाग में चलती रहती हैं विकास की योजनाएं।**

निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने अपने कार्यकाल के दौरान अभूतपूर्व काम किया है। निकाय चुनावों से लेकर विधानसभा-लोकसभा चुनावों में बड़ी सफलता अर्जित करने में बड़ी भूमिका अदा की। नव निर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल ने हमेशा पार्टी के कार्यकर्ता के तौर पर पूरी निष्ठा के साथ कार्य किया और पार्टी को आगे बढ़ाने के लिए हमेशा लगे रहे। उन्हें जो कार्य दिया गया उन्होंने उसे सही ढंग से संपादित किया। अब आने वाले समय में चुनौतियां बढ़ी हैं, लेकिन श्री हेमंत खंडेलवाल चुनौतियों का सामना कर सफलता प्राप्त करने के लिए जाने जाते हैं, आगे भी उनका यह सिलसिला जारी रहेगा। जब मैं मुख्यमंत्री था तब एक आदर्श विधायक का उदाहरण श्री हेमंत खंडेलवाल ने प्रस्तुत किया और बैतूल के विकास में कोई कसर नहीं छोड़ी। श्री हेमंत खंडेलवाल के दिमाग में नई-नई योजनाएं चलती रहती हैं। जब मैं स्कूली शिक्षा के लिए सीएम राइज योजना लेकर आया तो उसके पहले श्री खंडेलवाल जी के साथ भी चर्चा हुई थी, उन्होंने कई सुझाव दिए जिन्हें शामिल किया गया। सन् 2014 में भारतीय राजनीति में एक नया उदय हुआ, जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश की कमान संभाली।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी विकसित भारत के संकल्प के साथ देश को वैभवशाली और गौरवशाली बनाकर दुनिया में भारत का डंका बजा रहे हैं। श्री मोदी जी का सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास का मूल मंत्र देश के सभी वर्गों और क्षेत्रों के विकास के साथ रोज नया इतिहास लिख रहा है। श्री हेमंत खंडेलवाल भी प्रधानमंत्री जी के इस मूल मंत्र के साथ आगे बढ़ेंगे तो आने वाले चुनावों में पिछले विधानसभा और लोकसभा चुनावों से ज्यादा मत भाजपा को मिलेगा और प्रदेश की जनता का साथ पार्टी को मिलता रहेगा। ▪

निर्विरोध प्रदेश अध्यक्ष चुनकर कार्यकर्ताओं ने स्थापित की नई परंपरा - धर्मेंद्र प्रधान

- **निर्विरोध प्रदेश अध्यक्ष चुनकर कार्यकर्ताओं ने विशिष्ट परंपरा को और पुष्ट किया।**
- **हम सब मिलकर समर्पित, संवेदनशील एवं जनकल्याणकारी संगठन की रचना करेंगे।**

सभी कार्यकर्ताओं ने श्री हेमंत खंडेलवाल को निर्विरोध प्रदेश अध्यक्ष चुनकर मध्यप्रदेश के संगठन पर्व में एक नया अध्याय जोड़ा है, परंपरा को पुष्ट किया है, जिसके लिए सभी कार्यकर्ताओं और वरिष्ठ नेताओं को धन्यवाद। श्री हेमंत खंडेलवाल जी को काफी समय से जनप्रतिनिधि के रूप में काम करते हुए देखा है। सहज, मृदुभाषी, गंभीर और संगठन की जड़ों तक पहुंचकर काम करने वाले श्री हेमंत खंडेलवाल प्रदेश अध्यक्ष के रूप में सभी को साधते हुए, सभी को साथ लेकर संगठन का खूंटा पूरी मजबूती के साथ गाड़ेंगे। 50 के दशक में जनसंघ के रूप में शुरू हुई भारतीय जनता पार्टी आज दुनिया के सबसे बड़े और ताकतवर संगठन का रूप ले चुकी है। पहले श्रद्धेय अटल जी के नेतृत्व में हमें देश में सरकार चलाने का अवसर मिला और विकास तथा जनकल्याणकारी योजनाओं के कई कीर्तिमान बने। पिछले 11 सालों से दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी सरकार जनता की सेवा का कार्य कर रही है। मध्यप्रदेश में भी लंबे समय से हम सत्ता में रहकर बीमारू राज्य से विकसित प्रदेश बनाया है। वर्तमान में हमारी शासन प्रणाली डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में काम कर रही है। केंद्र और राज्य में हमें इतने लंबे समय तक जनता की सेवा करने का अवसर मिला, इसके पीछे पार्टी कार्यकर्ताओं की प्रतिबद्धता और परिश्रम है। हमारा जो भी दायित्व है, वह इसलिए नहीं है कि कुछ लोग जनप्रतिनिधि बन जाएं, या कुछ और लोग पार्टी कार्यकर्ता बन जाएं। हमारा दायित्व इसलिए है कि हम लंबे समय तक मध्यप्रदेश की 8.5 करोड़ जनता की सेवा कर सकें और सुशासन को उसकी पराकाष्ठा तक पहुंचाएं। श्री हेमंत खंडेलवाल जी प्रदेश अध्यक्ष के रूप में सभी के साथ मिलकर ऐसे समर्पित, संवेदनशील और जनकल्याणकारी संगठन की रचना करेंगे। श्री हेमंत खंडेलवाल के अलावा किसी और उम्मीदवार का नामांकन नहीं आना यह बताता है कि सभी के मन में बस एक ही नाम था और वो श्री हेमंत खंडेलवाल का था। ▪

सभी के सहयोग से दायित्व का निर्वाहन-विवेक शेजवलकर

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर 2 सितम्बर, 2024 को जिस संगठन पर्व की शुरुआत की थी, वह पर्व नए प्रदेश अध्यक्ष के निर्वाचन के साथ संपन्न हो रहा है। इस अभियान के दौरान हमने प्रदेश में 1.73 करोड़ से अधिक नए सदस्य बनाए। सभी के सहयोग से 65014 बूथों में से 64468 बूथ समितियों का गठन हुआ। 1313 मंडलों में से 1101 मंडलों का गठन हुआ और सभी 62 संगठनात्मक जिलों में जिला अध्यक्ष के चुनाव हुए। नए प्रदेश अध्यक्ष एवं 44 राष्ट्रीय परिषद सदस्यों का चुनाव किया है। जब मुझे प्रदेश चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया था, तब मैंने कहा था कि यह जिम्मेदारी मेरी योग्यता देखकर नहीं, अपितु आप सभी कार्यकर्ताओं की योग्यता पर विश्वास के चलते सौंपी गई है। सभी के सहयोग से इस दायित्व का निर्वाह संभव हुआ है। ▪

देश नए मुकाम पर - जगत प्रकाश नड्डा

विकसित भारत के अमृत काल के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 11 वर्षों से सेवा, सुशासन और गरीबों के कल्याण के लिए जो काम किया गया है, वह स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है। क्योंकि जो कार्य किए गए हैं वह अकल्पनीय और अद्वितीय हैं।

- श्री नरेन्द्र मोदी सरकार जन-आधारित और पारदर्शी शासन की प्रतीक है, जिसने बीते 11 वर्षों में भविष्य दृष्टि से आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव रखी है। यही कारण है कि विकसित भारत और अमृतकाल को हम जमीन पर उतरते हुए देख रहे हैं।

- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में पिछले 11 वर्षों में भारत ने गरीब और जन कल्याण के अभूतपूर्व परिवर्तन देखे हैं, जिन्हें स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना चाहिए।

- श्री नरेन्द्र मोदी सरकार रेस्पोंसिव, रेस्पोंसिबल, अकाउंटेबल, ट्रांसपेरेंट, करप्शन-फ्री गवर्नमेंट है। यह reform, perform और transform की अवधारणा को चरितार्थ करने वाली गवर्नमेंट है।

- 11 वर्ष पहले देश तुष्टिकरण और विभाजन की राजनीति में डूबा था, लेकिन मोदी जी के नेतृत्व में अब पॉलिटिक्स ऑफ परफॉर्मेंस, जवाबदेही और रिपोर्ट कार्ड वाली राजनीतिक संस्कृति स्थापित हुई है जो अब न्यू नॉर्मल, न्यू ऑर्डर बन चुका है।

- आज भारत का आम नागरिक कहता है कि ''मोदी हैं तो मुमकिन है।'' माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रति यह धारणा बन चुकी है कि वे समस्याओं का समाधान करेंगे। यह आम नागरिक की सोच बन गई है।

- राष्ट्रहित में मोदी सरकार ने हमेशा ही साहसिक और ऐतिहासिक फैसले लिए हैं, अनुच्छेद 370 को हटाना, तीन तलाक को खत्म करना, नया वक्फ कानून और सीएए लागू करना तथा विधायी निकायों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण इसके उदाहरण हैं।

- आतंकवाद के खिलाफ भारत की रणनीति में अब निर्णायकता और आक्रामकता एक न्यू नॉर्मल बन गई है। सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के बाद ऑपरेशन सिंदूर ने आतंकवाद के खिलाफ भारत की निर्णायक छवि को दुनिया भर में स्थापित किया है।

- पिछले 11 वर्षों में मोदी सरकार ने एससी-एसटी-ओबीसी समेत समाज के सभी वर्गों के सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी है। महिलाओं को नेतृत्व में लाने के लिए उन्हें सेना, शिक्षा, रोजगार और स्वरोजगार के हर क्षेत्र में अवसर दिए गए हैं।

- पहले देश में 126 नक्सल प्रभावित जिले थे, जो अब घटकर 18 रह गए हैं। हिंसा में 53 प्रतिशत, सुरक्षा बलों की हताहत संख्या में 72 प्रतिशत और कुल मृत्यु दर में 70 प्रतिशत की कमी आई है। भारत नक्सलवाद के खात्मे की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

- मोदी सरकार ने सबका साथ, सबका विकास के संकल्प के साथ अनुच्छेद 370 को हटाकर असंभव दिखने वाले काम को संभव कर दिखाया। आज वहां लोकतंत्र फल-फूल रहा है, विधानसभा चुनाव में 63 प्रतिशत मतदान मोदी सरकार के साहसिक निर्णयों का परिणाम है।

- चाहे आतंकी हमला हो या किसी अन्य प्रकार की सुरक्षा चुनौती, बीते 11 वर्षों में मोदी सरकार ने हर चुनौती का सीधा और निर्णायक जवाब दिया है। यह एक सशक्त, आत्मविश्वासी और जवाबदेह राष्ट्र की पहचान है।

- भाजपा सिर्फ गरीबी हटाओ का नारा नहीं देती, बल्कि गरीबों का कल्याण करके दिखाती है। अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के आंकड़े बताते हैं कि भारत में 25 करोड़

लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं और अति गरीबी में 80 प्रतिशत की भारी कमी आई है।

- **स्वच्छ भारत अभियान केवल शौचालय निर्माण तक सीमित नहीं, बल्कि स्वास्थ्य सुधार में भी बड़ा योगदान दिया है। डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांजैक्शन में लगभग 130 गुना वृद्धि हुई और JAM त्रिनिटी ने 3.9 लाख करोड़ रुपये की लीकेज को रोका है।**

- **राज्यों के टैक्स डिवोल्यूशन में 283 प्रतिशत की वृद्धि दी गई है, इसके बावजूद कुछ लोग आरोप लगाते हैं कि राजनीतिक कारणों से राज्यों की उपेक्षा की जा रही है, जबकि आंकड़े गवाही दे रहे हैं कि राज्यों को मिलने वाले केंद्रीय शेयर में काफी इजाफा हुआ है।**

2014 से पहले देश में भ्रष्टाचार से ग्रस्त सरकार थी, लेकिन पिछले 11 वर्षों में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के ऐसे कार्य किए हैं, जिन्हें स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश की सुरक्षा सुदृढ़ होने के साथ ही विकसित भारत की संकल्पना सशक्त कदम से सिद्धि की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा नीत वाली एनडीए सरकार ने 11 साल पूरे किये हैं।

विकसित भारत के अमृत काल के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 11 वर्षों से सेवा, सुशासन और गरीबों के कल्याण के लिए जो काम किया गया है, वह स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है। क्योंकि जो कार्य किए गए हैं वह अकल्पनीय और अद्वितीय हैं। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश की राजनीतिक संस्कृति को बदलकर नया रूप दिया है। 11 साल पहले देश तुष्टिकरण की राजनीति में डूबा हुआ था। कुर्सी को सुरक्षित रखने के लिए तुष्टिकरण के साथ समाज को विभाजित करना ही राजनीतिक संस्कृति का प्रमुख हिस्सा बन गया था। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश की राजनीतिक संस्कृति में बदलाव आया है, अब पॉलिटिक्स ऑफ परफोर्मेंस, जवाबदेह और जिम्मेदार सरकार वाली राजनीतिक संस्कृति आई। रिपोर्ट कार्ड की राजनीति संस्कृति शुरू हुई, यानी ऐसी सरकार जो अपने कार्यों का लेखा-जोखा जनता के सामने प्रस्तुत करती है।

पिछले 11 वर्षों में, आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार ने भारत की राजनीतिक संस्कृति को बदलकर एक न्यू नॉर्मल, न्यू ऑर्डर स्थापित किया है। भाजपा की यह सरकार एक प्रभावशाली, असरदार सरकार है। यह सरकार मजबूत और निर्णायक है। पिछले 11 वर्षों में जो आर्थिक अनुशासन स्थापित किया गया और साहसिक निर्णय लिए गए, वे सभी जनता को साथ लेकर लिए गए। इन सभी विशेषताओं को समझना आवश्यक है। केंद्र में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार एक जिम्मेदार, जन उत्तरदायी और जनता समर्थित सरकार है, अर्थात् जनता को साथ लेकर चलने वाली सरकार। जनभागीदारी को भी हमने बखूबी देखा है। हम सभी जानते हैं कि यह सरकार पिछले 11 वर्षों में पारदर्शिता की एक नई मिसाल बन चुकी है। यह एक पारदर्शी और भविष्यदृष्टि वाली, यानी भविष्यवादी सरकार है।

यह सरकार भविष्य को ध्यान में रखकर, देश को आगे की दिशा में ले जाने की सोच के साथ कार्य कर रही है। इसलिए आज हम विकसित भारत की बात करते हैं। इस अमृत काल और बीते 10-11 वर्षों ने विकसित भारत की नींव रखी है। इस नींव को मजबूत करने के लिए जो भी आवश्यक निर्णय थे, वे सभी लिए गए हैं। आज के समय में 2014 से पहले की ओर लौटने की जरूरत नहीं है, लेकिन यह याद रखना चाहिए कि 2014 से पूर्व की सरकार भ्रष्टाचार और घोटालों में डूबी हुई थी। उस समय नकारात्मकता का माहौल था, जिसमें कुछ नहीं बदलने वाला की सोच व्याप्त थी। लेकिन 2014 में आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद आशावाद ने जगह बनाई। आज भारत का आम नागरिक कहता है कि मोदी हैं तो मुमकिन है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रति यह धारणा बन चुकी है कि वे समस्याओं का समाधान करेंगे। यह आम नागरिक की सोच बन गई है। इसलिए हम कह सकते हैं कि आशावाद के साथ विकास, अविष्कार और नवाचार ये तीनों बातें जुड़ चुकी हैं। आज हम विकास कर रहे हैं, श्रेष्ठ कार्यपद्धतियाँ अपना रहे हैं और नवाचार भी कर रहे हैं, इस प्रकार विकास के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के शब्दों में, विकसित भारत का आधार यही दशक बनेगा। इसी कार्य के अंतर्गत उनके नेतृत्व में दी गई नीतियाँ - प्रदर्शन, परिवर्तन और सुधार, ये तीन बातें हर नीति में स्पष्ट दिखाई देती हैं। हर नीति में कुछ नया नजर आता है। पुरानी नीतियों में जो बदलाव हुए हैं, वे सुधार की आवश्यकता और परिवर्तन की मांग के कारण किए गए हैं और उनके लिए ठोस कार्य भी किए गए हैं। यह मूलभूत सिद्धांत पिछले 11 वर्षों में अपनाया गया है, जो माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सोच पर आधारित है - सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास। अनेक चुनौतियाँ आईं, लेकिन इसके बावजूद हमारा मुख्य सिद्धांत हमेशा स्पष्ट और मजबूत रहा है।

अगर साहसिक निर्णयों की बात करें, तो 11 वर्षों में लिए गए सभी निर्णायक कदमों को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताना बेहद कठिन है। फिर भी कुछ फैसले ऐसे हैं, जिन्होंने भारतीय राजनीति में ऐतिहासिक मोड़ लाए हैं। अनुच्छेद 370 का हटाया जाना एक ऐसा राजनीतिक नैरेटिव था, जिसे देश मान चुका था कि यह संभव नहीं है। यह नहीं हो सकता की धारणा आम हो चुकी थी। लेकिन आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में यह धारणा टूट गई, अनुच्छेद 370 समाप्त हुआ और आज हम इसके परिणाम देख रहे हैं। जम्मू-कश्मीर में लोकसभा चुनाव में 58.46 प्रतिशत और विधानसभा चुनाव में 63 प्रतिशत तक टर्नआउट पहुंचना स्पष्ट करता है कि ये परिवर्तन एक साहसी निर्णय का असर हैं। इसी तरह तीन तलाक की प्रथा, जो मानवता के लिए एक त्रासदी थी, पर वर्षों तक चुप्पी छाई रही। सुप्रीम कोर्ट ने अपनी बात कही, लेकिन कोई निर्णायक कदम नहीं उठाया गया। मोदी सरकार ने तीन तलाक को समाप्त कर यह साबित किया कि वह महिलाओं के सम्मान और अधिकारों के लिए प्रतिबद्ध है। यह निर्णय और भी महत्वपूर्ण हो जाता है जब हम देखते हैं कि बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सीरिया, ईरान, इराक और मलेशिया जैसे इस्लामिक देशों में तीन तलाक जैसी व्यवस्था पहले ही खत्म हो चुकी थी, जबकि भारत में यह जारी था। इसे खत्म कर भारत ने मानवता की दिशा में एक मजबूत कदम उठाया। वक्फ अधिनियम में सुधार की जरूरत लंबे समय से महसूस की जा रही थी। देश हित और समुदाय हित के लिए नया वक्फ अधिनियम लाया गया, जो देश की समरसता और पारदर्शिता की दिशा में एक ठोस प्रयास था। नागरिकता संशोधन अधिनियम, नोटबंदी, महिला आरक्षण, ये सभी ऐसे निर्णय हैं जिन पर वर्षों से चर्चा होती रही, लेकिन निर्णायक कदम नहीं उठाए गए। तीन दशकों से लंबित महिला आरक्षण को 33 प्रतिशत तक सुनिश्चित करना मोदी सरकार के साहसिक और निर्णायक नेतृत्व का उदाहरण है।

आर्थिक अनुशासन लाने के लिए मोदी

सरकार ने योजनाबद्ध ढंग से फैसले लिए। बजट की प्रस्तुति को एडवांस किया गया, योजना और गैर-योजना व्यय के बीच के भेद को समाप्त किया गया और रेल बजट को मुख्य बजट में समाहित कर समेकित आर्थिक दृष्टिकोण अपनाया गया। इस आर्थिक दूरदर्शिता का परिणाम यह है कि आज भारत दुनिया की टॉप 5 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो चुका है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार भारत अब चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। यह लगातार चौथा वर्ष है जब भारत सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था रहा है। प्रति व्यक्ति आय में 67 प्रतिशत, विदेशी मुद्रा भंडार में 135 प्रतिशत, निर्यात में 825 अरब अमेरिकी डॉलर का रिकॉर्ड स्तर, एफडीआई में 106 प्रतिशत, टैक्सपेयर्स की संख्या में 127 प्रतिशत और डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन में 238 प्रतिशत की वृद्धि यह दर्शाती है कि सरकार ने न केवल फैसले लिए, बल्कि उन फैसलों को जमीन पर उतारकर परिवर्तन भी लाया। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष भारत को ब्राइट स्पॉट कहता है, वर्ल्ड बैंक भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था कहता है और वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम यह तक कह चुका है कि भारत 2025 और 2026 में वैश्विक आर्थिक वृद्धि का प्रमुख इंजन बनने जा रहा है। यह तब संभव हुआ है जब वैश्विक परिस्थितियां विपरीत थीं। भारत की अर्थव्यवस्था ने न केवल खुद को स्थिर बनाए रखा, बल्कि हर चुनौती का डटकर सामना किया।

जब हम एक उत्तरदायी सरकार की बात करते हैं, तो यह समझना आवश्यक है कि यह सरकार केवल प्रतिक्रियात्मक नहीं रही, बल्कि हर परिस्थिति में सक्रिय रूप से कार्यरत रही है। ऑपरेशन गंगा के तहत यूक्रेन से न केवल भारतीय नागरिकों को सुरक्षित वापस लाया गया, बल्कि अन्य देशों के नागरिकों को भी भारत के झंडे तले सुरक्षित निकासी मिली। कोविड काल में वंदे भारत मिशन के माध्यम से 67 लाख से अधिक लोगों को स्वदेश लाया गया। ऑपरेशन देवी शक्ति के तहत अफगानिस्तान से नागरिकों को सुरक्षित निकाला गया। यमन में चलाए गए ऑपरेशन राहत के अंतर्गत न सिर्फ 5 हजार भारतीय नागरिकों, बल्कि 1 हजार से अधिक अन्य देशों के नागरिकों को भी सुरक्षित बाहर लाया गया। नेपाल में आए भूकंप के दौरान भारत की राहत टीम सबसे पहले काठमांडू पहुंची और राहत कार्य प्रारंभ किया। वैक्सीन मैत्री के तहत भारत ने 150 से अधिक देशों को वैक्सीन प्रदान की, जिनमें से कम से कम 48 देशों को यह निःशुल्क दी, कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी के दौरान भारत ने जिस तरह प्रतिक्रिया दी, वैसा उदाहरण दुनिया में कहीं और देखने को नहीं मिला। यह इस शताब्दी की सबसे बड़ी महामारी थी, जिसमें भारत ने वैज्ञानिक, प्रशासनिक और मानवीय दृष्टि से अद्वितीय नेतृत्व का परिचय दिया। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में यह लड़ाई सिर्फ सरकार तक सीमित नहीं रही, बल्कि जन-जन की लड़ाई बन गई। यही एक जिम्मेदार और जवाबदेह सरकार की पहचान है, जो निर्णय लेती है, उन्हें जमीन पर उतारती है और परिणाम लाकर दिखाती है।

भारत में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कोविड की लड़ाई जनता के साथ मिलकर लड़ी। उन्होंने यह तय किया कि इस संघर्ष में जनता को साथ लेकर चलना है, और इसी सोच से जनता कर्फ्यू जैसा अभिनव विचार सामने आया। जहां अन्य देशों में लॉकडाउन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन हुए और वैक्सीनेशन का विरोध देखा गया, वहीं भारत अकेला ऐसा देश रहा जिसने 220 करोड़ से अधिक डोज, वह भी डबल डोज, पूरी तरह निःशुल्क लगाकर विश्व का सबसे बड़ा और सबसे तेज वैक्सीनेशन कार्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित किया। यही एक उत्तरदायी और जवाबदेह सरकार की पहचान है, और कोविड के संदर्भ में यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पिछले 11 वर्षों में मोदी सरकार ने समाज के सभी वर्गों की चिंता की है, चाहे वे अनुसूचित जाति के भाई-बहन हों, अन्य पिछड़ा वर्ग हो या हमारे आदिवासी समुदाय के लोग। इनके लिए विशेष नीतियाँ, योजनाएँ और छात्रवृत्तियाँ प्रारंभ की गईं, जो पूरी तरह एससी, एसटी और ओबीसी समाज को समर्पित हैं। महिलाओं के लिए विशेष ध्यान देते हुए वीमेन लेड गवर्नमेंट की भावना को केंद्र में रखा गया और महिलाओं को आगे लाने के लिए ठोस प्रयास किए गए। स्वास्थ्य क्षेत्र में गर्भधारण से लेकर प्रसव तक और उसके बाद टीकाकरण तक सभी चरणों में भारत सरकार की योजनाएं सक्रिय रही हैं। मैटरनिटी लीव को 12 सप्ताह से बढ़ाकर 26 सप्ताह करना, वह भी वेतन सहित, एक बड़ा और संवेदनशील कदम रहा। इसी प्रकार प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के अंतर्गत आर्थिक सहायता प्रदान कर महिलाओं को सशक्त किया गया। जब चंद्रयान की तस्वीरें सामने आईं, तो उसमें सबसे अधिक महिला वैज्ञानिक दिखाई दीं। आज महिलाएं पायलट से लेकर सेना में स्थायी कमीशन प्राप्त कर रही हैं। एनडीए में भी अब लड़कियों की भर्ती हो रही है और वे पास आउट भी हो रही हैं। देश के 73 सैनिक स्कूलों में अब लड़कियों को प्रवेश मिल रहा है। लखपति दीदी योजना और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त किया जा रहा है। समाज के वे वर्ग, जिन्हें पहले केवल नजरअंदाज किया जाता था, आज उन्हें केंद्र में लाकर भरोसा दिया गया है। एससी, एसटी, ओबीसी और महिलाएं, इन सभी की मुख्यधारा में भागीदारी सुनिश्चित की गई है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गरीब कल्याण को केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक क्रियान्वयन का विषय बनाया है। गरीबी हटाओ जैसे पुराने नारों से आगे बढ़कर, इस सरकार ने गरीबों के कल्याण को साकार रूप दिया है। आंकड़े स्वयं इस बदलाव के साक्षी है, 25 करोड़ लोग अब तक गरीबी रेखा से ऊपर उठ चुके हैं। यह केवल हमारा दावा नहीं है, बल्कि नीति आयोग और अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मंचों द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़े हैं। भारत में अत्यधिक गरीबी में 80 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अंतर्गत 80 करोड़ लोगों को प्रति व्यक्ति 5 किलो गेहूं या चावल निःशुल्क उपलब्ध कराया गया, यह कोई साधारण उपलब्धि नहीं है। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 4 करोड़ पक्के मकान बनाए जा चुके हैं और अगले 5 वर्षों में 3 करोड़ और मकानों के निर्माण का संकल्प लिया गया है, जिसे स्वीकृति मिल चुकी है। यदि आज आप गांवों की यात्रा करें, तो पहले जहां खपरैल और फूस के घर दिखाई देते थे, वहां अब पक्के मकान खड़े हैं। सड़क नेटवर्क के क्षेत्र में पहले जो सड़कें अधूरी और टूटी-फूटी रहती थीं, वे अब हाईवे में बदल चुकी हैं। इनकी गति और गुणवत्ता इतनी उन्नत हो चुकी है कि डायवर्जन लेने के लिए अब दो किलोमीटर पहले से ही सतर्क रहना पड़ता है। यह आज के आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का परिचायक है। उज्ज्वला योजना, 100 प्रतिशत

विद्युतीकरण और जल जीवन मिशन के अंतर्गत अब तक 364 प्रतिशत की वृद्धि के साथ घरों में नल से जल कनेक्शन दिए जा चुके हैं। इन सभी योजनाओं और उनके प्रभावी निष्पादन से यह स्पष्ट होता है कि मोदी सरकार न केवल जवाबदेह और संवेदनशील है, बल्कि परिणाम देने वाली एक सक्रिय सरकार भी है।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के माध्यम से किसानों को देश की मुख्यधारा में लाया गया है। इसी तरह, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना ने भी उन्हें आर्थिक सुरक्षा के दायरे में लाकर सशक्त किया है। 100 प्रतिशत विद्युतीकरण की दिशा में सौभाग्य योजना, उज्ज्वला योजना और उजाला योजना के माध्यम से उल्लेखनीय प्रगति हुई है। बीमा योजनाओं की बात करें तो जीवन बीमा और दुर्घटना बीमा के अंतर्गत लगभग 40 करोड़ लोगों को कवर किया गया है। ये वे समाज के हाशिए पर खड़े लोग हैं जो पहले बीमा जैसी सुविधा लेने की स्थिति में नहीं थे। जनभागीदारी को विशेष प्राथमिकता दी गई है। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण कोविड काल है, जब भारत में सरकार के साथ जनता ने भी समान रूप से मिलकर महामारी से लड़ाई लड़ी। कुछ राजनीतिक दलों ने डीमोनिटाईजेशन पर जनता को भड़काने की कोशिश की, तब भी देश का आम नागरिक शांतिपूर्वक घंटों बैंक की कतार में खड़ा रहा और डीमोनिटाईजेशन के निर्णय का समर्थन किया। यह इस बात का प्रमाण है कि जब नेतृत्व पर भरोसा होता है, तो जनता सक्रिय सहभागिता निभाती है। पहले शिक्षा नीति जैसे मुद्दों पर शिक्षा मंत्रियों की साझा बैठक तक नहीं हो पाती थी, लेकिन आज नई शिक्षा नीति 2020 व्यापक परामर्श और सर्वसम्मति से बनाई गई है। यही स्थिति 2017 की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति के साथ भी रही, वह भी बिना किसी विवाद के पारित हुई, क्योंकि इसमें भी समग्र दृष्टिकोण और संवाद की व्यापकता रही। स्वच्छ भारत मिशन केवल शौचालय निर्माण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने स्वास्थ्य संकेतकों में भी सुधार लाया है।

आज डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (DBT) के माध्यम से लेनदेन की संख्या में 130 गुना वृद्धि हुई है। JAM ट्रिनिटी (जनधन, आधार, मोबाइल) के जरिए लगभग 3.9 लाख करोड़ रुपये की लीकेज रोकी गई है। प्रगति मंच के माध्यम से सभी योजनाओं और रुके हुए प्रोजेक्टस की निगरानी की जाती है, जिससे जनता को योजनाओं की वास्तविक स्थिति की जानकारी मिलती है। कोओपरेटिव फेड्रलिस्म केवल नारा नहीं, बल्कि जीएसटी इसका प्रमुख उदाहरण है। जीएसटी लागू होने से पहले 17 कर और 13 उपकर थे, जिन्हें एक साथ समाहित किया गया और सभी राज्य एक साथ आए। अब टैक्स संग्रहण 20.8 लाख करोड़ रुपये प्रतिवर्ष तक पहुंच गया है। राज्यों को टैक्स डिवोल्यूशन में 283 प्रतिशत की वृद्धि दी गई है, जबकि कुछ लोग राजनीतिक कारणों से राज्यों की अनदेखी का दावा करते हैं जबकि आंकड़े बताते हैं कि राज्यों के केंद्रीय शेयर में भारी इजाफा हुआ है। कोविड के दौरान 11 औपचारिक बैठकें आयोजित की गईं, जो को-ओपेरेटिव फेड्रलिस्म का उदाहरण हैं। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बार-बार कहा है कि देश को आगे बढ़ाने के लिए राज्यों को आगे बढ़ाना होगा। इसी संदर्भ में एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट्स की अवधारणा भी प्रस्तुत हुई, जिससे पिछड़े जिलों को मुख्यधारा में लाकर सशक्त बनाया जा रहा है। आज भारत एआई मिशन, योजनाओं का विस्तार, चंद्रयान-3, आदित्य एल-1 और गगनयान मिशन जैसे भविष्य की योजनाओं पर कार्य कर रहा है। ये सभी योजनाएं यह दर्शाती हैं कि देश को भविष्य की दृष्टि से किस तरह देखा जा रहा है और ये फ्यूचरिस्टिक सरकार के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

विकसित भारत की कल्पना को साकार करना हमारी प्रतिबद्धता है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हर चुनौती का सामना सीधा किया है, कभी इधर-उधर की बात नहीं की। उरी हमले के बाद आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का यह स्पष्ट वक्तव्य था कि इसका जवाब दिया जाएगा। देश के इतिहास में पहली बार था जब किसी प्रधानमंत्री ने इतने स्पष्ट शब्दों में आतंकियों को सीधी चेतावनी दी और जिसके बाद सर्जिकल स्ट्राइक हुआ। पुलवामा हमले के समय भी माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा, तुमने बहुत बड़ी गलती कर दी है, इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा, और फिर बालाकोट एयरस्ट्राइक हुआ। पहलगाम हमले के बाद बिहार की एक जनसभा में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आतंकियों को चेतावनी देते हुए कहा, अब तुम्हें जवाब कल्पना से भी परे मिलेगा। यह स्पष्ट करता है कि भारत की रणनीति में अब निर्णायकता और आक्रामकता एक न्यू नॉर्मल बन गई है। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने यह भी कहा है कि अब किसी भी आतंकवादी घटना को ऐक्ट ऑफ वॉर माना जाएगा और न्यूक्लियर युद्ध की गीदड़ भभकी को भारत बर्दाश्त नहीं करेगा। आतंकवादी और उन्हें संरक्षण देने वालों के बीच कोई अंतर नहीं किया जाएगा। यह सरकार बीते 11 वर्षों में हर चुनौती चाहे वह आतंकी हमला हो या किसी अन्य प्रकार की सुरक्षा चुनौती का सीधा और निर्णायक जवाब देने में सक्षम रही है। यही एक सशक्त, आत्मविश्वासी और जवाबदेह राष्ट्र की पहचान है।

लेफ्ट विंग एक्स्ट्रीमिज्म (वामपंथी उग्रवाद) और नक्सलवाद के खिलाफ सरकार ने निर्णायक कार्रवाई की है। पहले देश में 126 जिले नक्सल प्रभावित माने जाते थे, जो अब घटकर मात्र 18 रह गए हैं। हिंसा में 53 प्रतिशत की कमी आई है, सुरक्षा बलों की हताहत संख्या में 72 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है और कुल मृत्यु दर में 70 प्रतिशत तक की कमी हुई है। इससे स्पष्ट है कि भारत अब नक्सलवाद को जड़ से समाप्त करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। पहले की सरकारों की सोच ऐसी थी कि सीमा पर सड़कें नहीं बननी चाहिए ताकि दुश्मन उसका लाभ न उठा सकें । लेकिन आजादी के 75 वर्षों में यह सोच बदली और अब माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सीमाओं को सुदृढ़ बनाने पर जोर दिया जा रहा है। अब तक लगभग 8 हजार किलोमीटर सीमा सड़कें और 400 से अधिक स्थायी पुल बनाए जा चुके हैं। आज अटल टनल, सेला टनल और श्रीकुंला टनल जैसे सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण निर्माण किए जा रहे यह सब इस बात का प्रमाण है कि वर्तमान सरकार केवल शब्दों की नहीं, बल्कि कर्मों की राजनीति करती है, जो देश की सुरक्षा, विकास और स्थिरता के लिए आवश्यक है।

इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में सड़कें, हवाई मार्ग, रेलवे और पुलों पर लंबी चर्चा हो सकती है लेकिन चुनावी संदर्भ में विशेष रूप से यह कहना जरूरी है कि नरसिंह राव जी के समय 1995 में चिनाब ब्रिज प्रोजेक्ट का शिलान्यास रखा गया था, जिसे बाद में श्रद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उसे एक राष्ट्रीय महत्व का प्रोजेक्ट घोषित किया।

इसके बाद, आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 6 जून को, इसे सफलतापूर्वक पूरा किया। यह तथ्य हमें यह समझाता है कि मोदी सरकार ने समस्याओं को टालने के बजाय उनका समाधान किया है। सरकार ने समाज के हर वर्ग की चिंता की और उनके जीवन स्तर को सुधारने के लिए निरंतर प्रयास किया। पिछले 11 वर्षों में वह विकास हुआ जो किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश ने विकसित भारत की दिशा में लंबी छलांग ली है, जिसमें सभी समाज वर्गों को साथ लेकर चलने पर जोर दिया गया। 11 साल के कार्यकाल में हुए इन महत्वपूर्ण कार्यों, नीतियों और कार्यक्रमों को समझाना आसान नहीं है, लेकिन यह स्पष्ट है कि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की दूरदर्शिता और नेतृत्व ने देश को नए मुकाम पर पहुंचाया है। ▪

आपातकाल कांग्रेस का अन्यायकाल था- अमित शाह

25 जून 1975 की सुबह सूरज तो उगा लेकिन उसकी रोशनी आजाद नहीं थी। उस सुबह मौलिक अधिकारों की चादर ओढ़े नागरिक तानाशाही की जंजीरों में बंधे हुए नींद से जगे थे।

उस दिन संविधान की आत्मा को कुचलते हुए, जनादेश से बनी सरकारों को रातों-रात गिरा दिया गया और इस देश के युवाओं को यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए। जब व्यक्ति के भीतर छिपा तानाशाही स्वभाव सतह पर आ जाता है, तब क्या होता है, यह इतिहास बताता है।

- मोदी जी ने 'संविधान हत्या' दिवस मनाने का निर्णय इसलिए लिया, ताकि देश की चिर स्मृति में यह बना रहे कि जब कोई सरकार तानाशाह बनती है, तो देश को कैसे भयानक दुष्परिणाम भुगतने पड़ते हैं।
- वो आपातकाल नहीं कांग्रेस का अन्यायकाल था
- परिस्थिति और मजबूरी की नहीं बल्कि तानाशाही मानसिकता और सत्ता की भूख की उपज होता है आपातकाल।
- मल्टीपार्टी डेमोक्रेसी को एक पार्टी की तानाशाही में बदलने के षड्यंत्र की शुरुआत थी आपातकाल।
- जब किसी व्यक्ति के भीतर छिपा हुआ तानाशाही स्वभाव बाहर आ जाता है, तभी आपातकाल लगता है, यह इतिहास हमारी युवा पीढ़ी को जानना जरुरी है।
- आपातकाल से पहले की रात, आजादी के बाद की सबसे लंबी रात थी, क्योंकि इसकी सुबह 21 महीनों बाद हुई, जब देश का लोकतंत्र फिर से पुनर्जीवित हुआ।
- आज तक कांग्रेस ने आपातकाल को अपनी गलती नहीं माना, बल्कि राजीव गांधी ने आपातकाल को जरूरी फैसला कहकर उचित ठहराया।
- भारत के लोकतंत्र की नींव इतनी गहरी है, कि कोई भी तानाशाह इस नींव को हिलाने जाएगा, तो अपने भविष्य को बर्बाद करने के अलावा उसे कुछ हासिल नहीं होगा।
- आपातकाल- जब विचार, कलम और विरोध को कालकोठरी में डाला गया।
- आपातकाल के दौरान संविधान में इतने संशोधन किये गए कि इसे संविधान का मिनी वर्जन कहा गया।

- **आपातकाल में पत्रकार असामाजिक हो गये, छात्र अस्थिरता फैलाने वाले, सामाजिक कार्यकर्ता देश के लिए खतरा और जनता एक तानाशाह की गुलाम।**
- **आज जो लोग संविधान की दुहाई दे रहे हैं, वो उस पार्टी से आते हैं, जिसने लोकतंत्र की रक्षक बनने की जगह, लोकतंत्र की भक्षक बनने का काम किया।**
- **आपातकाल का मूल कारण सत्ता की भूख थी, न देश पर कोई बाहरी खतरा था, न ही कोई आंतरिक संकट था, खतरा बस इंदिरा जी की कुर्सी पर था।**
- **कांग्रेस के साथ वे लोग भी गठबंधन में हैं और लोकतंत्र पर सवाल उठा रहे हैं, जो कभी स्वयं लोकतंत्र की हत्या के भुक्त-भोगी रहे हैं।**
- **अगर आपातकाल जैसी लोकतंत्र की नींव हिलाने वाली घटना को लेकर समाज की याददाश्त धुंधली होती है तो यह किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए बहुत बड़ा खतरा है।**
- **आपातकाल के दौरान संविधान का ऐसा दुरुपयोग हुआ जो बुरे सपने की तरह भारत के लोकतंत्र को हमेशा याद रहेगा।**

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 25 जून को 'संविधान हत्या' दिवस के रूप में मनाए जाने का निर्णय लिया है। आपातकाल जैसी घटना ने लोकतंत्र की नींव को हिला दिया था यदि उसकी स्मृति समाज के मन से मिटने लगे, तो यह किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए एक बहुत बड़ा खतरा बन सकता है। ऐसी घटनाओं की स्मृति युवाओं और किशोरों की चेतना से धीरे-धीरे मिटने लगती है, तब 'संविधान हत्या दिवस' जैसे आयोजन उस स्मृति को पुनर्जीवित करने का कार्य करते हैं।

अक्सर लोगों के मन में सवाल उठते हैं कि 50 वर्ष पहले हुए आपातकाल की चर्चा करने का अब औचित्य क्या है? माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने यह निर्णय लिया कि 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मनाया जाएगा तब भी यह सवाल बार-बार उठाए गए। हर तरह की घटना के 50 वर्ष पूरे होने पर सामाजिक स्मृति में उसकी तस्वीर धुंधली पड़ने लगती है। आपातकाल जैसी घटना ने लोकतंत्र की नींव को हिला दिया था, यदि उसकी स्मृति समाज के मन से मिटने लगे, तो यह किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए एक बहुत बड़ा खतरा बन सकता है। लोकतंत्र और तानाशाही केवल व्यक्ति से जुड़े हुए नहीं हैं, बल्कि मन की दो अलग-अलग प्रवृत्तियां हैं, जो मानव स्वभाव में निहित हैं। ये भावनाएं समय-समय पर समाज और देश के समक्ष फिर से उभर कर चुनौती बन सकती हैं। अगर तानाशाही की प्रवृत्ति दोबारा चुनौती बन सकती है, तो लोकतांत्रिक स्वभाव भी देश के कल्याण के लिए उतना ही आवश्यक है।

जब पीढ़ियां बदलती हैं, और ऐसी घटनाओं की स्मृति युवाओं और किशोरों की चेतना से धीरे-धीरे मिटने लगती है, तब 'संविधान हत्या दिवस' जैसे आयोजन उस स्मृति को पुनर्जीवित करने का कार्य करते हैं। यह सदैव याद रखना चाहिए कि आपातकाल को हटाने के लिए कितनी बड़ी लड़ाई लड़ी गयी थी। उस समय लाखों लोग जेलों में बंद थे, लोग अपना परिवार, अपना कैरियर और यहां तक कि अपना सब कुछ न्योछावर करके भी डटे रहे। मगर इसी लड़ाई ने भारत में लोकतंत्र को जीवित रखा और आज, भारत विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में गर्व से खड़ा है। इस जीत का मूल कारण था भारत देश की जनता। भारत की जनता तानाशाही को कभी स्वीकार नहीं कर सकती। क्योंकि, सच्चाई यही है कि पूरी दुनिया में लोकतंत्र का बीज तो सबसे पहले भारत की धरती पर ही प्रस्फुटित हुआ था। भारत को लोकतंत्र की जननी माना जाता है। यहां लोकतंत्र सिर्फ संविधान की भावना में नहीं, बल्कि जनमानस के स्वभाव में बसा हुआ है। संविधान निर्माताओं ने जनता की भावना को ही शब्दों में ढालकर संविधान में व्यक्त किया है। कोई डर के कारण चुप रहा होगा, कोई कफन बांध कर लड़ा होगा, किसी ने पीड़ा सहकर सब कुछ झेला होगा, तो कोई समय की प्रतीक्षा करता रहा होगा, लेकिन उस समय के किसी भी सजग नागरिक को आपातकाल पसंद नहीं आया होगा। सिवाय तानाशाहों और उनके चारों ओर जमा एक छोटे से स्वार्थी गुट को। जब यह भ्रम फैल गया कि कांग्रेस को कौन चुनौती देगा, तब जनता खड़ी हो गई, आपातकाल हटाने पर मजबूर हुई, चुनाव हुआ और आजादी के बाद पहली बार एक गैर-कांग्रेसी सरकार बनी, जिसमें जनता पार्टी के श्री मोरारजी देश के प्रधानमंत्री बने।

दस्तावेजों में भले ही पचास साल बीत चुके हों, परंतु करोड़ों भारतीयों के मन में उस समय की स्मृति आज भी उतनी ही ताजा है जितनी 24 जून 1975 की रात को थी। स्वतंत्र भारत के इतिहास की वह रात शायद सबसे लंबी थी और एक प्रकार से सबसे छोटी भी। सबसे लंबी भी इसलिए, क्योंकि इस रात की सुबह पूरे 21 महीने बाद आई। 21 महीनों के बाद ही देश में फिर से लोकतंत्र लौटा और सबसे छोटी इसलिए, क्योंकि जिन अधिकारों को स्थापित करने के लिए विधिक प्रक्रिया, संसद की गरिमा और नागरिक सम्मान की रक्षा हेतु जो नियम बनाए गए थे, जिनका निर्माण दो वर्ष, 11 महीने और 18 दिन में हुआ, उन्हें एक झटके में नष्ट कर दिया गया। हमारे संविधान का निर्माण एक तपस्या था। इसमें 13 समितियां बनीं, 11 सत्रों में 165 दिनों की चर्चा हुई, 163 दिनों में 114 दिन संविधान के विभिन्न प्रावधानों पर व्यापक बहस हुई। कुल 1100 घंटे और 32 मिनट चर्चा हुई, सात सदस्यीय ड्राफ्टिंग कमिटी ने उसे अंतिम रूप दिया। यह संविधान, जो विचार और विमर्श में दुनिया के तमाम लोकतांत्रिक संविधान से कहीं अधिक गहरा और परिश्रम से बनाया गया था, उसे एक 'किचन कैबिनेट' के तुगलकी फरमान ने एक ही मिनट में खारिज कर दिया।

आपातकाल की व्याख्या इससे बेहतर और क्या ही हो सकती है? एक बहुदलीय लोकतांत्रिक देश के मूल स्वभाव को एक व्यक्ति की तानाशाही में बदलने का षड्यंत्र ही आपातकाल है। इस षड्यंत्र का उस समय बहुत से लोगों ने पुरजोर विरोध किया। उस काली रात की सुबह ने भारत की आत्मा को झकझोर दिया। स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी त्रासदी को तर्कों, तथ्यों और घटनाओं की श्रृंखला के माध्यम से समझा जा सकता है। परंतु तर्क और तथ्य से अधिक प्रभावी मनुष्य की संवेदना और कल्पना होती है। उस आपातकाल के समय कि उस क्षण की कल्पना करने पर याद आता है कि कल तक भारत के नागरिक अगली सुबह एक तानाशाह के गुलाम बन गए। कल तक का एक पत्रकार अगली सुबह असामाजिक तत्व करार दे दिया गया। कल तक का एक छात्र अस्थिरता फैलाने वाला युवा घोषित हो गया। कल तक का एक सामाजिक कार्यकर्ता अचानक राष्ट्र के लिए खतरा घोषित हो गया। एक आम नागरिक को अपनी सोच आजाद रखने के जुर्म में जेल में डाल दिया गया। उस एक सुबह की क्रूरता कितनी भयानक रही होगी इसकी कल्पना करने मात्र से ही रूह कांप जाती है।

आज लोग मुस्कुराते हुए कह देते हैं हम तो उस वक्त पैदा भी नहीं हुए थे लेकिन मैं उस समय 11 वर्ष का था। गुजरात में आपातकाल का असर बाकी राज्यों की तुलना में कम था, क्योंकि वहां जनता पार्टी की सरकार बन चुकी थी। लेकिन बाद में वह सरकार भी गिरा दी गई और एक साल के भीतर आपातकाल का

कहर गुजरात पर भी टूटा। गाँव में जनसंघ के कार्यकर्ता, संघ के स्वयंसेवक, समाजवादी और सर्वोदय आंदोलन से जुड़े पुनर्निर्माण के लक्ष्य के साथ चल रहे सभी लोगों को देशद्रोही घोषित कर दिया गया और जेल में बंद कर दिया गया। मेरे अकेले गांव से 184 लोगों को एक साथ ब्लू जेल वैन में भरकर साबरमती जेल भेजा गया। मैं आज तक वह दृश्य नहीं भूल पाया हूँ और मरते दम तक नहीं भूल पाऊँगा। उस समय हम गाँव के बड़ों को पूजते थे। आज भी मैं सोचता हूँ, प्रोफेसर मंगलदास का दोष क्या था? उस समय न कोई बता सकता था, न कोई बताना चाहता था। किसी में हिम्मत भी नहीं थी क्योंकि जो दृश्य देखा गया था, वह अत्यंत क्रूर और हृदयविदारक था।

25 जून 1975 की सुबह सूरज तो उगा लेकिन उसकी रोशनी आजाद नहीं थी। उस सुबह मौलिक अधिकारों की चादर ओढ़े नागरिक तानाशाही की जंजीरों में बंधे हुए नींद से जगे थे। उस दिन संविधान की आत्मा को कुचलते हुए, जनादेश से बनी सरकारों को रातों-रात गिरा दिया गया और इस देश के युवाओं को यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए। जब व्यक्ति के भीतर छिपा तानाशाही स्वभाव सतह पर आ जाता है, तब क्या होता है, यह इतिहास बताता है। यह इतिहास देश के युवाओं को समझाना पड़ेगा, जिन्हें उसका अनुभव नहीं है। आज जो लोग संविधान की दुहाई देते हैं, उन्होंने क्या 25 जून की सुबह को देखा था? उस सुबह ठीक आठ बजे ऑल इंडिया रेडियो से प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की आवाज गूंजी कि राष्ट्रपति ने देश में आपातकाल की घोषणा की है।

क्या आपातकाल जैसे निर्णय के लिए संसद की सहमति ली गई थी? क्या मंत्रिमंडल की बैठक बुलाई गई थी? क्या विपक्ष या देशवासियों को विश्वास में लिया गया था? आज लोकतंत्र की खोखली बातें कर रहे लोग उसी पार्टी से जुड़े हैं जिसने लोकतंत्र के रक्षक की नहीं बल्कि भक्षक की भूमिका निभाई थी। आपातकाल के लिए कारण बताया गया राष्ट्र की सुरक्षा, जबकि वास्तविक कारण था अपनी सत्ता की सुरक्षा। क्योंकि, जब इंदिरा गांधी के विरुद्ध चुनाव लड़ने वाले राजनारायण ने उनके चुनाव को इलाहाबाद हाई कोर्ट में चुनौती दी थी, तब कोर्ट ने उनके (इंदिरा गांधी) चुनाव को निरस्त कर दिया और कहा कि उन्होंने सरकारी संसाधनों का दुरुपयोग किया। सुप्रीम कोर्ट ने तकनीकी आधार पर उन्हें स्थगन तो प्रदान कर दिया, लेकिन यह शर्त रखी कि वे प्रधानमंत्री तो रह सकती हैं, परंतु संसद में मतदान नहीं कर सकतीं और सांसद के रूप में कोई अधिकार नहीं ले सकतीं। इसके बाद इंदिरा गांधी ने नैतिक आधार पर इस्तीफा नहीं दिया, बल्कि इसी संवैधानिक परिस्थिति का सहारा लेकर, संविधान की धाराओं को ही तोड़-मरोड़कर संविधान की आत्मा की हत्या की। उस समय देश में न कोई बाहरी सुरक्षा का संकट था, न कोई आंतरिक संकट। देश महंगाई से जूझ रहा था। गुजरात में छात्रों ने सबसे पहले विरोध की मशाल जलाई, जो बिहार तक पहुंच गई। जेपी आंदोलन शुरू हुआ, रेलवे कर्मचारी हड़ताल पर चले गए और जगह-जगह कांग्रेस के भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाजें उठने लगीं। मोरारजी देसाई आमरण अनशन पर बैठ गए और देश की जनता जाग उठी थी। बहुमत के नशे में चूर इंदिरा गांधी की सत्ता की कुर्सी डगमगाने लगी थी। एक व्यक्ति ने अपनी सत्ता को बचाने के लिए देश को आपातकाल की आग में झोंक दिया गया। सुबह 4 बजे कैबिनेट की आपात बैठक बुलाई गई। तत्कालीन कैबिनेट सदस्य बाबू जगजीवन राम और स्वर्ण सिंह ने बाद में कहा कि जब हम बैठक में पहुँचे, तो हमें न कोई एजेंडा बताया गया, न कोई विचार-विमर्श हुआ, केवल सूचना दी गई। गृह सचिव को बुलाकर आगे की कार्रवाई आरंभ कर दी गई।

जिस संविधान के बल पर यह देश दशकों तक चलने वाला था, उस संविधान का निर्माण भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, हर विचारधारा के प्रतिनिधियों, यहां तक कि राजे-रजवाड़ों के सम्मिलित प्रयासों से हुआ था। लोकतांत्रिक प्रक्रिया से गठित उस संविधान सभा ने यह संविधान निर्मित किया। लेकिन इंदिरा गांधी ने संविधान के अनुच्छेद 352 का दुरुपयोग किया। अनुच्छेद 352 का उद्देश्य देश पर गंभीर संकट आने की स्थिति में आपातकाल लागू करना था, किंतु इंदिरा गांधी ने उसी अनुच्छेद का प्रयोग कर केवल सत्ता बचाने के लिए, देश में आपातकाल लागू कर दिया। इस आपातकाल के दौरान 1,10,000 से अधिक विपक्षी राजनीतिक नेताओं को जेल में ठूंस दिया गया। केवल नेता ही नहीं, पत्रकार, संपादक, रिपोर्टर, छात्र नेता, समाजसेवी सभी को जेल में बंद कर दिया गया। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, प्रेस, मीडिया, कलाकार और आम जन सभी स्तब्ध रहकर यह दृश्य देख रहे थे। किसी को यह समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करना चाहिए। देखते ही देखते पूरा देश एक कारागार में परिवर्तित हो गया। श्री जयप्रकाश नारायण, श्री मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह, श्रद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी, श्री लालकृष्ण आडवाणी जी, श्री नानाजी देशमुख, श्री जॉर्ज फर्नांडिस और आचार्य कृपलानी जैसे वरिष्ठ नेताओं को जेल की काल कोठरियों में डाल दिया गया। जो लोग संसद की समितियों में सदस्य थे, उन्हें भी जेल में डाल दिया गया। आगे चलकर गुजरात और तमिलनाडु की गैर कांग्रेसी सरकारों को गिराने का भी प्रयास किया गया।

समय भी एक अजीब विडंबना लेकर आता है। अनेक बार समय दोहरे चरित्रों को सतह पर उजागर कर देता है। आज कांग्रेस पार्टी के साथ वे लोग भी खड़े हैं, जिनकी सरकारें तत्कालीन कांग्रेस सरकार द्वारा गिरा दी गई थीं। सपा और डीएमके के अनेक नेता स्वयं 19 महीने तक जेल में रहे थे। कई ऐसे लोग आज संसद में बैठे हैं और लोकतंत्र को लेकर प्रश्न उठा रहे हैं। कांग्रेस का साथ देने वाले इन दलों को लोकतंत्र पर प्रश्न खड़े करने का कोई अधिकार नहीं है। वह समय भारत की लोकतांत्रिक यात्रा के लिए किसी दुःस्वप्न से कम नहीं था। आपातकाल के दौरान इंदिरा गांधी ने संविधान में इतने व्यापक परिवर्तन किए कि उन परिवर्तनों को ''मिनी संविधान'' कहा जाने लगा। संविधान की प्रस्तावना में बदलाव किया गया, अनुच्छेद 14 में संशोधन किया गया, सातवीं अनुसूची में फेरबदल किया गया। 40 से अधिक धाराओं में परिवर्तन किए गए, नए अनुच्छेद और खंड जोड़े गए। 42वें संविधान संशोधन द्वारा तो सीमाएं ही लांघ दी गईं। इस संशोधन के माध्यम से संविधान के मूल ढांचे को परिवर्तित करने का प्रयास किया गया। न्यायपालिका को भी मौन कर दिया गया, जहां पहले से ही अनुकूल न्यायाधीश नियुक्त कर दिए गए थे। 59वां संशोधन अंततः सुप्रीम कोर्ट की शक्तियों को सीमित करने का माध्यम बन गया। विभिन्न संस्थाओं और एजेंसियों का जिस प्रकार दुरुपयोग किया गया, उसे यह समाज, यह देश और इसकी जागरूक जनता कभी नहीं भूल सकती। इसी कारण माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने यह निर्णय लिया है कि भाजपा संविधान हत्या दिवस मनाएगी, ताकि यह स्मृति राष्ट्र के मानस में सदैव जीवित रहे।

आपातकाल के दौरान जो संविधान संशोधन हुए, उनमें 38वां संशोधन प्रमुख था, जिसके तहत अनुच्छेद 130 और 213 के द्वारा राष्ट्रपति और राज्यपाल के अधिकारों को बढ़ा दिया गया। अनुच्छेद 352 द्वारा आपातकाल की उद्घोषणा को न्यायिक समीक्षा से बाहर कर दिया गया। फिर अनुच्छेद 329 में संशोधन कर प्रधानमंत्री को भी न्यायिक समीक्षा के दायरे से बाहर कर दिया। इसके साथ ही अनुच्छेद 323ए और 323बी के माध्यम से प्रशासनिक मामलों को देखने वाले न्यायाधिकरणों को सरकार के नियंत्रण में ला दिया गया। अनुच्छेद 19 के तहत मिलने वाले मौलिक अधिकारों को सीमित कर दिया गया और अनुच्छेद 356 के तहत आपातकाल की अवधि

को बढ़ा दिया गया। संसद की सीमाएं भी बढ़ा दी गईं और व्यापक प्रशासनिक दुरुपयोग हुआ। तिहाड़ जेल में ही 4000 लोग मीसा के तहत बंद थे, जबकि जेल की क्षमता सिर्फ 1200 की थी। एक करोड़ से अधिक लोगों कि जबरन नसबंदी की गईं। लता मंगेशकर जी ने ऐसे गाने गाए, जिनमें पुरुष और महिला दोनों की आवाजें उन्हीं की थीं, क्योंकि किशोर कुमार की आवाज को आकाशवाणी से बैन कर दिया गया था। न्याय का यह काल और लंबा चलता, अगर चाटुकारिता ही अंत का कारण न बनती। लेकिन अंततः दिल्ली में झुग्गियों का विध्वंस जैसी कई घटनाओं को आपातकाल के समर्थन में अंजाम दिया गया।

कांग्रेस पार्टी ने आज तक इस गलती को स्वीकार नहीं किया। यहां तक कि राजीव गांधी ने भी कभी इसे गलत नहीं माना। राजीव गांधी ने दंगों को जस्टिफाई करने की मानसिकता भी दिखाई। जब उन्होंने कहा, ''जब कोई बड़ा पेड़ गिरता है तो जमीन हिलती है।'' इस पूरी स्थिति में सबसे दुखद बात यह रही कि बंदी प्रत्यक्षीकरण यानी हेबियस कॉर्पस की अर्जियों को खारिज करने के लिए भी संविधान में बदलाव कर दिए गए। श्री जयप्रकाश नारायण उस समय के एक दूरदर्शी नेता थे, जिन्होंने उत्पन्न हो रहे खतरे को न केवल पहचाना, बल्कि उसका गंभीर मूल्यांकन भी किया। उनकी तबीयत ठीक नहीं थी, फिर भी जब उन्हें गिरफ्तार करने के लिए पुलिस पहुंची, उन्होंने एक ऐतिहासिक वाक्य कहा ''विनाशकाले विपरीत बुद्धि''। बाद में इंदिरा गांधी को लिखे अपने पत्र में उन्होंने यह भी लिखा ''एक गलत फैसले को सही ठहराने के लिए आप बार-बार गलत निर्णय ले रही हैं। इतिहास आपको कभी माफ नहीं करेगा।'' लोकनायक जयप्रकाश नारायण उस समय समूचे देश की आवाज बन गए। उन्हीं की आवाज ने भारत को दोबारा लोकतंत्र लौटाया। करोड़ों भारतीयों ने आपातकाल के विरुद्ध संघर्ष किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हजारों कार्यकर्ता, जनसंघ और कांग्रेस के असंतुष्ट नेता, सर्वोदय आंदोलन के अनुयायी, गांधीवादी चिंतक, हर वर्ग के लोग जेलों में बंद हुए, सत्याग्रह किया, और बिना डरे, बिना थके, लगातार संघर्ष करते रहे। जनता भी पूरी शक्ति और समर्पण के साथ इन संघर्षशील जनों के साथ खड़ी रही।

जब अभिव्यक्ति का अवसर आया, तब हम सब अपने गाँव से एक ट्रक में सवार होकर टाइम्स ऑफ इंडिया की इमारत के बाहर खड़े थे, जहां चुनाव के परिणाम लिखे जाते थे। तकरीबन सुबह 3 या 4 बजे का समय रहा होगा, जब यह समाचार आया कि इंदिरा गांधी और संजय गांधी दोनों चुनाव हार गए हैं। उस समय जनता के चेहरों पर जो उत्साह और उल्लास था, वह दृश्य आज भी मेरी स्मृति में अमिट है। आज यदि लोकतांत्रिक दलों का उत्थान और पतन स्पष्ट दिखाई देता है, तो उसका इतिहास भी यहीं से प्रारंभ होता है। आपातकाल के पश्चात ही कांग्रेस पार्टी का पतन आरंभ हुआ। उत्तर प्रदेश में एक भी सीट नहीं मिली, राजस्थान में एकाध, मध्य प्रदेश और बिहार में पूर्ण शून्य। कांग्रेस धीरे-धीरे देश की मुख्यधारा से हटकर एक क्षीण और सीमित होती हुई राजनीतिक पार्टी बन गई। जब जनता पार्टी की सरकार गिरी, तब कांग्रेस को पुनः एक अवसर मिला, परंतु वह प्रभाव और जनाधार, जो उसे स्वतंत्रता संग्राम से प्राप्त हुआ था कांग्रेस उसे हमेशा के लिए खो बैठी। आज तक कांग्रेस वह स्थिति प्राप्त नहीं कर सकी है। यह दिन सभी राजनीतिक दलों के लिए एक गहन सीख है कि विविध विचारधाराओं का अस्तित्व ही लोकतंत्र की सुदृढ़ नींव है। विचारधारा कोई भी हो, मार्ग अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन अंतिम लक्ष्य राष्ट्र को महान बनाना ही होना चाहिए। ऐसे देश की रचना कभी नहीं हो सकती, जो केवल एक विचारधारा पर चले, केवल एक नेता के नेतृत्व पर टिका हो। जहां ''मैं ही सही हूं'' की मानसिकता हो और दूसरों को मत देने अथवा अपनी बात कहने का अधिकार भी न हो, यह सोच संविधान की मूल भावना से कतई मेल नहीं खाती।

संविधान ने लोकतंत्र की भावना को मुखर किया, उसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति की और उसे विधिक रूप प्रदान किया। संविधान ने भारत की जनभावनाओं को भली-भांति समझकर, उन्हें विधि की भाषा में रूपांतरित किया है। भारत की जनता मूलतः लोकतांत्रिक मूल्यों और विचारों में विश्वास रखने वाली है। भारतीय परंपरा विभिन्न विचारों, मतों और दृष्टिकोणों का सम्मान करने वाली हजारों वर्षों पुरानी सांस्कृतिक परंपरा है। यदि सभी इतिहास की दृष्टि से अवलोकन करें, तो यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है पंचायती विचार, सरपंच की परंपरा, यह सब भारतीय परंपरा की ही देन हैं। भगवान श्रीकृष्ण कभी राजा नहीं बने बल्कि वे एक गणराज्य के सदस्य थे। बुद्ध के काल में मल्लों का गणराज्य, वैशाली का गणराज्य ये सभी विश्व के पहले लोकतांत्रिक प्रयोग थे। वर्षों से चले आ रहे इस सह-अस्तित्व के भाव ने ही हमारे संविधान की आधारशिला रखी। संविधान सभा में हर प्रांत, हर विचारधारा, हर जनपद से आए प्रतिनिधि शामिल थे। वे अपने क्षेत्रों की भावना लेकर आए थे और उस व्यापक विमर्श के बाद जो अमृत निकला, वही हमारा संविधान है। इसलिए हमारी लोकतंत्र की नींव इतनी गहरी है कि कोई भी तानाशाह अगर उसे हिलाने की कोशिश करेगा, तो अपना भविष्य ही बर्बाद करेगा।

यह दिन केवल स्मरण का दिन ही नहीं है, बल्कि यह दिन एक असफल तानाशाही प्रयास की निंदा करने का भी दिन है। यह दिन युवाओं को लोकतंत्र की मशाल थमाने का दिन है, ताकि वे आगे बढ़ें, सतर्क रहें। शाह आयोग की रिपोर्ट ने उस काल की भयावहता को दर्ज करने की कोशिश की लेकिन देश इतना बड़ा है, और अत्याचार इतने व्यापक स्तर पर हुए कि कोई एक रिपोर्ट सब कुछ दर्ज नहीं कर सकती। शाह आयोग की रिपोर्ट सिर्फ एक संक्षिप्त चित्र है। लेकिन युवाओं को इसे जरूर पढ़ना चाहिए। हर पैराग्राफ, हर पंक्ति जागरूकता बढ़ाएगी और अगर भविष्य में कोई तानाशाह उठने की सोचे, तो वही युवा श्री जयप्रकाश नारायण बनकर सामने खड़े हो जाएं। मैं भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता हूं, हमारे राष्ट्रीय, प्रदेश और जिला स्तर के नेतृत्व ने उस समय संघर्ष किया। कोई पकड़ा गया, कोई भूमिगत रहा, लेकिन सबने आंदोलन में भाग लिया। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी उस संघर्ष पर एक पुस्तक लिखी है, जिसमें विस्तार से बताया गया है कि किस प्रकार से आपातकाल के खिलाफ संघर्ष हुआ और लोकतंत्र को फिर से कैसे स्थापित किया गया। यह बात याद रखी जाए कि राजमाता विजयाराजे सिंधिया जैसी शाही परिवार की महिला को चार मानसिक रोगियों के साथ एक ही जेल में रखा गया था। यही था आपातकाल का चेहरा और आज, जब कोई कहता है अब क्या है? आज क्यों याद कर रहे हो? तो वे नहीं जानते कि तानाशाही की मानसिकता कब व्यक्ति के भीतर से उभरकर बाहर आ जाएगी। कब हमें भी लोकनायक जयप्रकाश नारायण की भांति हाथ में मशाल लेकर निकलना पड़ेगा, यह कोई नहीं जानता। इसका कोई तय समय नहीं होता।

जन प्रबोधन अर्थात जनता के मन में लोकतांत्रिक विचारों को गहराई से स्थापित करना हर नागरिक का कर्तव्य है। संविधान की आत्मा की रक्षा केवल संसद या न्यायपालिका के भरोसे नहीं की जा सकती। संविधान की आत्मा की रक्षा देश की जनता की सामूहिक जिम्मेदारी है। जो भी संविधान के मूल स्वरूप और भावना के साथ खिलवाड़ करेगा, उसे दंडित करने की जिम्मेदारी जनता पर ही है, क्योंकि लोकतंत्र में जनता ही अंतिम निर्णायक होती है। 'संविधान हत्या दिवस' को देशभर में मनाकर हम आने वाली पीढ़ियों, युवाओं और किशोरों को यह लोकतांत्रिक संस्कार सौंप सकते हैं। यह संस्कार अगले 50 वर्षों तक राष्ट्र की चेतना को दिशा देगा और यही हमारा कर्तव्य है। ▪

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी - एक राष्ट्र, एक संविधान के महान सेनानी

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारत की एकता के अमर प्रहरी

हेमंत खंडेलवाल

कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जो अपने विचारों, संघर्षों और बलिदानों से समय की धारा को मोड़ने का संकल्प रखते हैं। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ऐसे ही युगपुरुष थे, जिनकी राष्ट्र भक्ति, दूरदृष्टि और दृढ़ संकल्प ने भारत की एकता- अखंडता को सुदृढ़ किया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ऐसे ही एक युगद्रष्टा थे, जिनका जीवन भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता के लिए समर्पित था। वे केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि शिक्षाविद, समाज सुधारक और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रबल प्रवक्ता थे। 6 जुलाई को उनका जन्मदिवस केवल एक स्मरण तिथि नहीं, बल्कि राष्ट्रनिष्ठा, त्याग और सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

देश की स्वतंत्रता के पश्चात जम्मू-कश्मीर को लेकर जो परिस्थितियाँ निर्मित हुईं, वे राष्ट्र की एकता के लिए चुनौती बन गईं थी। अनुच्छेद 370 और 35ए जैसे प्रावधानों ने जम्मू-कश्मीर को भारत से पृथक करने का प्रयास किया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इस वैचारिक विभाजन का डटकर विरोध किया। उनका स्पष्ट मत था कि ''एक देश में दो प्रधान, दो विधान और दो निशान'' नहीं चल सकते। यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि उनका जीवन दर्शन था। उन्होंने कहा था कि जब कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, तो वहाँ भी भारत के समान संविधान और शासन होना चाहिए। अपने इस सिद्धांत को सत्य सिद्ध करने के लिए उन्होंने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। उनका बलिदान व्यर्थ नहीं गया, वर्षों बाद उनका सपना साकार हुआ जब 2019 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में अनुच्छेद 370 और 35ए को निरस्त किया गया। यह कदम केवल एक संवैधानिक सुधार नहीं था, बल्कि यह भारत की एकता और अखंडता को मजबूत करने का ऐतिहासिक संकल्प था। इस निर्णय के पीछे डॉ. मुखर्जी के राष्ट्रवाद की विचारधारा स्पष्ट रूप से झलकती है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय राजनीति में एक स्पष्ट और सशक्त राष्ट्रीय विचारधारा प्रस्तुत की। जब पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में वैचारिक प्रतिबद्धताएँ राष्ट्रहित से टकराने लगीं, तब उन्होंने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया। यह केवल पद का त्याग नहीं था, बल्कि राष्ट्रहित के लिए एक साहसिक और कर्तव्य निष्ठ कदम था। इसके बाद उन्होंने भारतीय जनसंघ की स्थापना की, जो भविष्य में भारतीय जनता पार्टी के रूप में विकसित होकर देश की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति बनी। डॉ. मुखर्जी का सबसे बड़ा संघर्ष जम्मू-कश्मीर की 'परमिट प्रणाली' के खिलाफ था। यह व्यवस्था कश्मीर में भारतीय नागरिकों की स्वतंत्र आवाजाही को सीमित करती थी, जिससे भारत के अंदरूनी हिस्सों को एक-दूसरे से जोड़ना मुश्किल हो रहा था। 1953 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जम्मू-कश्मीर की यात्रा करने का साहस दिखाया, जिसके पश्चात उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। श्रीनगर की जेल में रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु 23 जून 1953 को हुई। अत्यंत पीड़ादायक है कि न उन्हें समुचित चिकित्सा व्यवस्था प्रदान की गई और न ही उनकी मौत की निष्पक्ष जांच की गई। उनकी माता श्रीमती योगमाया देवी ने इसे 'मेडिकल मर्डर' करार दिया, पर सत्ता तंत्र मौन रहा। डॉ. मुखर्जी का यह बलिदान व्यर्थ नहीं गया। उनके निधन के कुछ सप्ताहों के भीतर ही कश्मीर की परमिट प्रणाली समाप्त कर दी गई और धीरे-धीरे वह व्यवस्था बदली, जिसने देश के भीतर अलगाव और तनाव पैदा किया था। हालांकि कांग्रेस सरकारों ने दशकों तक उनकी चेतावनियों को नजर अंदाज किया, परन्तु उनकी विचारधारा आज भी भारतीय राष्ट्रवाद का आधार है।

2004 के बाद जब देश में कांग्रेस की सत्ता रही, तब जम्मू-कश्मीर को विशेष स्वायत्तता देने की बातें पुनः उठी। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 2010 में जम्मू-कश्मीर की स्वायत्तता की बात कहकर भारत की जनता के हितों के साथ खिलवाड़ किया। कांग्रेस ने पीडीपी की कठपुतली बनकर आतंकवादियों के प्रति नरमी बरती, जिससे कश्मीर में दशकों तक हिंसा और विस्थापन हुआ। हजारों नागरिक शरणार्थी बने और उनकी जिंदगी कठिन हुई। इस दौरान अलगाववादी शक्तियों को बढ़ावा मिला और भारत विरोधी गतिविधियां फलने-फूलने लगीं। इसके विपरीत, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2014 के बाद जम्मू-कश्मीर से आतंकवाद और अलगाववाद को दफन कर देश की एकता को मजबूत किया। डॉ. मुखर्जी के संघर्ष और बलिदान के कारण ही जम्मू-कश्मीर आज भारत का अभिन्न हिस्सा है। भारतीय जनसंघ से भाजपा तक की राजनीति का मूल राष्ट्रवाद रहा है, जिसने देश की अखंडता और सुरक्षा को सर्वोपरि रखा।

शिक्षा के क्षेत्र में भी डॉ. मुखर्जी ने अमूल्य योगदान दिया। उन्होंने उच्च शिक्षा को भारतीय संस्कृति से जोड़ने पर जोर दिया, ताकि देश की युवा पीढ़ी अपने सांस्कृतिक मूल्यों के साथ आधुनिक ज्ञान प्राप्त कर सके। आज नई शिक्षा नीति में भी उनके विचारों की परछाई मिलती है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार की कई जनकल्याणकारी योजनाएं प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, तीन तलाक विरोधी कानून, डॉ. मुखर्जी के सामाजिक दृष्टिकोण और राष्ट्रहित के विचारों का प्रतिफल हैं। ये योजनाएं देश के गरीब और पिछड़े तबकों को सशक्त बनाने का प्रयास करती हैं, जिसका कि डॉ. मुखर्जी ने सदैव समर्थन किया।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी भारत के महान राष्ट्रवादी नेता थे, जिनका जीवन देशभक्ति और समर्पण की मिसाल है। वे पद, प्रतिष्ठा या स्वार्थ से ऊपर उठकर केवल देश की सेवा में लगे रहे। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा राष्ट्रवाद केवल सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि सिद्धांतों और न्याय के लिए निरंतर संघर्ष है। आज जब भारत 2047 में स्वावलंबी और विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है, तब उनकी शिक्षाएं और भी प्रासंगिक हो जाती हैं। डॉ. मुखर्जी का आदर्श और बलिदान हमारे लिए एक अमर प्रेरणा हैं, जो आने वाली पीढ़ियों को एकजुट, मजबूत और आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए प्रेरित करते रहेंगे। ▪

(लेखक-भारतीय जनता पार्टी मध्य प्रदेश के अध्यक्ष व बैतूल विधायक हैं।)

आपातकाल लोकतंत्र पर हमला था जगत प्रकाश नड्डा

देश में कुछ ऐसी घटनाएँ भी हुई हैं, जहाँ संविधान की मूल आत्मा के साथ छेड़छाड़ करने का कुत्सित प्रयास किया गया है। देश उन घटनाओं को लोकतंत्र के काले अध्याय के रूप में देखता है।

कांग्रेस सरकार की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 50 वर्ष पहले आपातकाल की घोषणा की थी। यह केवल एक राजनीतिक घटना नहीं, बल्कि लोकतंत्र पर सीधा हमला और कुठाराघात था।

- **50 वर्ष पहले, तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश पर आपातकाल थोप दिया था। यह एक ऐसा कदम था जिसे देश आज भी लोकतंत्र के काले अध्याय और संविधान की आत्मा पर पड़े गहरे आघात के रूप में याद करता है।**
- **आपातकाल की 50वीं बरसी पर संविधान की हत्या को याद रखना और दूसरों को याद दिलाना जरूरी है, क्योंकि कांग्रेस की तानाशाही मानसिकता आज भी जारी है।**
- **आपातकाल के दौरान आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने एक जिम्मेदार कार्यकर्ता के रूप में तानाशाह सरकार को चुनौती दी और लाखों स्वयंसेवकों के साथ कांग्रेस की सच्चाई हर गाँव-गली तक पहुँचाई।**
- **कांग्रेस अब भी मानती है कि देश की सत्ता पर सिर्फ एक परिवार का हक है। उसने अपने प्रधानमंत्री पर भी सुपर पीएम बैठाया था। एक गरीब परिवार के व्यक्ति का प्रधानमंत्री बनना कांग्रेस को हजम नहीं हो रहा।**
- **2024 के चुनाव से पहले कांग्रेस ने उन पत्रकारों की सूची जारी की, जिनसे उसके प्रवक्ताओं को डिबेट में न जाने को कहा गया। सत्ता में रहते हुए पत्रकारों पर मुकदमे और विपक्ष में रहते हुए उनका बहिष्कार कांग्रेस की दोहरी नीति है।**
- **इंदिरा गांधी ने सत्ता बचाने के लिए संविधान में ऐसे अलोकतांत्रिक संशोधन किए, जिससे उसकी मूल आत्मा ही बदल गई। आपातकाल में हालात ऐसे थे कि अगर किसी नागरिक को गोली भी मार दी जाए, तो वह अदालत नहीं जा सकता था।**
- **कांग्रेस की तानाशाही के खिलाफ संघर्ष सिर्फ राजनीति नहीं, बल्कि भारत की आत्मा और संविधान की रक्षा का आंदोलन था, जिसमें राष्ट्रवादियों ने जान की बाजी लगा दी।**

25 जून 1975 को लगाया गया आपातकाल लोकतंत्र पर सीधा हमला था। इंदिरा गांधी ने आंतरिक अशांति का बहाना बनाकर संविधान को रौंद डाला, प्रेस की स्वतंत्रता छीन ली और विपक्षी नेताओं को जेल में डाल दिया। आज भी कांग्रेस परिवारवाद, व्यक्तिवाद और लोकतांत्रिक मूल्यों के विरुद्ध कार्य कर रही है।

भारत विश्व का सबसे प्राचीन और सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। देश में कुछ ऐसी घटनाएँ भी हुई हैं, जहाँ संविधान की मूल आत्मा के साथ छेड़छाड़ करने का कुत्सित प्रयास किया गया है। देश उन घटनाओं को लोकतंत्र के काले अध्याय के रूप में देखता है। कांग्रेस सरकार की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 50 वर्ष पहले आपातकाल की घोषणा की थी। यह केवल एक राजनीतिक घटना नहीं, बल्कि लोकतंत्र पर सीधा हमला और कुठाराघात था। 25 जून 1975 की आधी रात को, तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आंतरिक अशांति का बहाना बनाकर भारत पर आपातकाल थोप दिया था और संविधान की हत्या कर दी थी। 50

वर्ष बीत जाने के बाद भी कांग्रेस आज उसी मानसिकता के साथ जी रही है। उसकी नीयत आज भी तानाशाही प्रवृत्ति से भरी हुई है।

1975 में कोर्ट ने इंदिरा गांधी को चुनाव में आचार संहिता के उल्लंघन का दोषी ठहराते हुए, 6 वर्षों के लिए किसी भी निर्वाचित पद पर रहने से अयोग्य करार दिया था। रातों-रात प्रेस की बिजली काट दी गई, समस्त विपक्ष को जेल में डाल दिया गया और प्रेस की आजादी छीन ली गई। अनुच्छेद 352 का दुरुपयोग कर लोकतंत्र को रौंदा गया, संसद और न्यायपालिका को अपंग बना दिया गया और 26 जून की सुबह देश पर कांग्रेस की तानाशाही सरकार ने आपातकाल थोप दिया। कांग्रेस की तानाशाही का विरोध केवल राजनीतिक नहीं था, यह भारत की आत्मा और संविधान की रक्षा का आंदोलन था, जिसमें राष्ट्रवादियों ने अपनी जान की बाजी लगा दी। श्री जयप्रकाश नारायण, चौधरी चरण सिंह, श्रद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी, श्री लालकृष्ण आडवाणी जी, राजमाता विजयाराजे सिंधिया जी, श्री मुरली मनोहर जोशी जी सहित पार्टी एवं विचार परिवार के हजारों कार्यकर्ताओं को इंदिरा गांधी की सरकार ने जबरन जेल में डाल दिया था।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने एक जिम्मेदार कार्यकर्ता के रूप में तानाशाही सरकार की आँखों में धूल झोंकते हुए लाखों समर्पित स्वयंसेवक कार्यकर्ताओं के साथ कांग्रेस की सच्चाई को हर गाँव, हर गली, हर घर तक पहुँचाया था। आपातकाल की इन्हीं कहानियों, आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के संघर्ष और अनसुनी घटनाओं को पुस्तक The Emergency: Diaries, Heroes That Forced a Leader ने शब्दों में पिरोया है।

देश में संविधान की हत्या के 50 वर्ष आपातकाल का दंश याद रखना और याद दिलाना, दोनों जरूरी है, क्योंकि कांग्रेस आज भी उसी तानाशाही मानसिकता के साथ जी रही है। हम सबको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए कि किस प्रकार कांग्रेस ने देश के लोकतंत्र को कुचलने की साजिश रची थी। लोकतंत्र के उपासकों ने किस प्रकार अपने प्राणों की परवाह न करते हुए संघर्ष को प्रकाशित कर कांग्रेस की इस साजिश को विफल किया था। ''इंडिया इज इंदिरा और इंदिरा इज इंडिया'' जैसे नारे कांग्रेस की उस मानसिकता को दर्शाते थे, जिसके तहत इंदिरा गांधी ने देश को व्यक्तिवाद और परिवारवाद की प्रयोगशाला बना दिया था।

कांग्रेस समझती है कि इस देश की सत्ता पर केवल एक और एक परिवार का ही हक है। तभी तो उसने अपनी सरकार के प्रधानमंत्री के ऊपर भी सुपर पीएम बिठा दिया था। आज भी कांग्रेस की मानसिकता वैसी ही है। एक गरीब का देश के प्रधानमंत्री पद तक पहुँचना कांग्रेस से हजम नहीं हो रहा है। कांग्रेस-शासित राज्यों में कानून व्यवस्था का हाल आज भी वही है, जो आपातकाल में था। विरोध का दमन, धार्मिक तुष्टिकरण और सत्ता का अहंकार खुले आम दिखता है। इंदिरा गांधी जी ने जस्टिस एच. आर. खन्ना जैसे ईमानदार जज को सीनियर होने के बावजूद, मुख्य न्यायाधीश नहीं बनाया, क्योंकि उन्होंने इंदिरा सरकार के खिलाफ फैसला सुनाया था। कांग्रेस ने यह सुनिश्चित किया था कि जो भी अधिकारी या जज उनके इशारों पर न चले, उन्हें या तो हटा दिया जाए या तबादला कर दिया जाए। इंदिरा गांधी ने अपनी सत्ता को महफूज रखने के लिए संविधान में अलोकतांत्रिक संशोधन कर उसकी मूल आत्मा को ही बदल दिया था। आपातकाल के दौरान यदि किसी नागरिक को गोली मार दी जाए, तब भी उसे अदालत में जाने का अधिकार नहीं था।

आज राहुल गांधी और कांग्रेस संविधान की झूठी दुहाई दे रहे हैं। आपातकाल के दौरान जेलों में बंद लोगों को अपने परिजनों के अंतिम क्रिया-कर्म में शामिल होने तक की अनुमति नहीं दी गई। कांग्रेस ने आज तक आपातकाल लगाने और अपने किए पर कभी माफी नहीं माँगी है। 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस ने बाकायदा बहिष्कृत पत्रकारों की सूची जारी की थी, जिनकी डिबेट में भागीदारी पर कांग्रेस प्रवक्ताओं को रोक दिया गया था। जहाँ एक ओर वे अपने शासन में पत्रकारों पर मुकदमा करते हैं, वहीं दूसरी ओर विपक्ष में होने पर उनका बहिष्कार करते हैं। आज के इस अवसर पर, मैं मेरी ओर से और भारतीय जनता पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ताओं की ओर से उन लोकतंत्र के सच्चे सिपाहियों को श्रद्धांजलि और धन्यवाद अर्पित करता हूँ, जिन्होंने आपातकाल जैसे अभिशाप से देश को मुक्त कराने के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी। उन्होंने न केवल संविधान की रक्षा की, बल्कि देश की भी रक्षा की। ▪

देशभक्तों ने लोकतंत्र बचाया
मुख्यमंत्री डॉ. यादव

गणतंत्र की रक्षा के लिए जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित सभी देशभक्तों ने आपातकाल के संघर्ष में कुर्बानी दी है। इसी का प्रतिफल है कि आज दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र सुरक्षित है। भारत में संघ परिवार ने लोकतंत्र की पुर्नस्थापना का कार्य किया है।

भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी, हमारे मार्गदर्शक श्री लालकृष्ण आडवाणी, पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह तथा श्रद्धेय मोरारजी देसाई सहित विपक्ष के सभी नेताओं ने एक स्वर में आपातकाल का विरोध करते हुए लोकतंत्र की रक्षा के लिए संघर्ष किया। यह स्वाधीनता संग्राम में क्रांतिकारियों द्वारा किए गए संघर्ष और बलिदान की याद दिलाता है। इसीलिए सभी मीसाबंदियों को लोकतंत्र सेनानी नाम मिला है। एशिया में लोकतंत्र कहीं बचा है तो उसमें जनता पार्टी सहित विपक्षी नेताओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। उल्लेखनीय है कि 25 जून 1975 को देश में आपातकाल लागू किया गया था। इसे लोकतंत्र के लिए काला दिन माना जाता है। ▪

आपातकाल: लोकतांत्रिक व्यवस्था पर सबसे बड़ा हमला

विष्णुदत्त शर्मा

कांग्रेस का लोकतंत्र में विश्वास तब तक है जब तक वह सत्ता में है। जब वह सत्ता से बाहर होती दिखाई देती है, वह संविधान और लोकतंत्र की धज्जियाँ उड़ाने से नहीं चूकती। डॉ. राममनोहर लोहिया के ये शब्द 25 जून 1975 को उस समय सत्य सिद्ध हुए, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 50 वर्ष पहले, 25 जून 1975 को देश पर आपातकाल थोप दिया। यह घटना भारतीय लोकतंत्र के इतिहास की सबसे दुखद और शर्मनाक घटनाओं में से एक है। यह केवल एक राजनीतिक निर्णय नहीं था, बल्कि यह भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर सबसे बड़ा हमला था। आपातकाल लगाने का उद्देश्य नेहरू-गांधी परिवार का सत्ता पर वर्चस्व बनाए रखने की लालसा में संविधान को रौंदने का कुत्सित प्रयास था। यह वह समय था जब संविधान को ताक पर रखकर व्यक्तिगत सत्ता की रक्षा के लिए पूरे देश को एक तानाशाही शासन के अधीन कर दिया गया था। 1970 के दशक की शुरुआत में भारत गंभीर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक संकटों से जूझ रहा था। बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और असंतोष के कारण सरकार के खिलाफ जनता में असंतोष बढ़ रहा था। इंदिरा गांधी की सत्ता को सबसे बड़ा झटका तब लगा जब इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 12 जून 1975 को उनके निर्वाचन को अवैध घोषित कर दिया और उन्हें छह वर्षों के लिए चुनाव लड़ने से अयोग्य ठहराया।

इस फैसले के बाद देश भर में इंदिरा गांधी के इस्तीफे की मांग तेज हो गई। जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में विपक्ष ने 'संपूर्ण क्रांति' का नारा दिया। इन सबके बीच 25 जून 1975 की रात को राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने प्रधानमंत्री की सिफारिश पर देश में आपातकाल लागू कर दिया। इंदिरा गांधी ने कैबिनेट को विश्वास में नहीं लिया, आधी रात को राष्ट्रपति से चुपचाप आपातकाल लागू करवाया। कांग्रेस

श्रीमती इंदिरा गांधी ने 50 वर्ष पहले, 25 जून 1975 को देश पर आपातकाल थोप दिया। यह घटना भारतीय लोकतंत्र के इतिहास की सबसे दुखद और शर्मनाक घटनाओं में से एक है।

यह केवल एक राजनीतिक निर्णय नहीं था, बल्कि यह भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर सबसे बड़ा हमला था।

की संस्कृति रही है- परिवार पहले, संविधान बाद में।

'इंडिया इज इंदिरा' नारा कांग्रेस की लोकतंत्र विरोधी सोच का प्रतीक था। एक व्यक्ति, एक परिवार को देश से बड़ा समझना ही कांग्रेस की वैचारिक विकृति है। आपातकाल की घोषणा के साथ ही भारत की लोकतांत्रिक संस्थाएँ रातों रात बंधक बना दी गईं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, और न्यायिक संरक्षण जैसे मौलिक अधिकार स्थगित कर दिए गए। मीडिया पर कठोर सेंसरशिप लागू कर दी गई। विरोध करने वाले हजारों नेताओं, कार्यकर्ताओं, पत्रकारों, साहित्यकारों को बिना मुकदमे के जेलों में ठूंस दिया गया। 'इंदिरा इज इंडिया' और 'इंडिया इज इंदिरा' जैसे नारे लगाने वालों को पुरस्कृत किया गया, जबकि आलोचकों को देशद्रोही बताकर प्रताड़ित किया गया।

आपातकाल के इस काले दौर में वामपंथियों ने इंदिरा गांधी का भरपूर समर्थन किया। इसके बदले में उन्हें प्रशासन और शिक्षा के क्षेत्र में ऊँचे पदों पर बिठाया गया। वे इतिहास, संस्कृति और पाठ्यक्रमों में अपने वैचारिक एजेंडे को लागू करने में सफल रहे। इससे देश की भावी पीढ़ी की सोच को प्रभावित करने की कोशिश की गई। इंदिरा गांधी के पुत्र संजय गांधी ने जनसंख्या नियंत्रण के नाम पर जबरन नसबंदी का अभियान चलाया। लाखों गरीब पुरुषों को जबरदस्ती नसबंदी के लिए बाध्य किया गया। दिल्ली में तुर्क मान गेट जैसी घटनाओं में, जब लोगों ने इसका विरोध किया, तो गोली चलवा दी गई, जिसमें अनेक लोग मारे गए। इस दौरान हजारों झुग्गियाँ और बस्तियाँ उजाड़ दी गईं, जिससे लाखों लोग बेघर हो गए।

वर्ष 1985 में लोकसभा में राजीव गांधी ने कहा-आपातकाल में कुछ भी गलत नहीं था। यह बयान बताता है कि कांग्रेस के डीएनए में लोकतंत्र के लिए कोई सम्मान नहीं, केवल परिवार और सत्ता से प्रेम है। 21 महीनों तक देश

को लोकतंत्र से वंचित रखकर कांग्रेस के एक परिवार की सत्ता बनाए रखने के लिए संविधान का गला घोंटा गया। कांग्रेस ने आपातकाल लगाकर राष्ट्रवादी विचारधारा को कुचलने का कार्य किया। लोकतंत्र को बचाने के लिए लड़ने वालों को जेल में ठूंसा गया। लगभग 1 लाख 40 हजार लोगों को जेल में बंद किया गया और 22 कस्टोडियल डेथ हुईं। संविधान की आत्मा को कुचला गया। मीसा कानून में संशोधन कर प्राकृतिक न्याय की भावना का उल्लंघन किया गया।

कांग्रेस की प्रवृत्ति लोकतंत्र विरोधी रही है- जो विरोध करे, उसे समाप्त कर दो। नेताजी सुभाषचंद्र बोस को कांग्रेस अध्यक्ष रहते हुए इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया गया। सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे लोकप्रिय नेता को प्रधानमंत्री नहीं बनने दिया गया। बाबा साहब अंबेडकर जैसे महापुरुष का कांग्रेस द्वारा निरंतर विरोध और अपमान किया गया।

कांग्रेस ने संविधान में अब तक 75 बार संशोधन किए, कई संशोधन सत्ता को मजबूत करने हेतु थे। अनुच्छेद 356 का दुरुपयोग करते हुए 90 बार चुनी हुई राज्य सरकारों को बर्खास्त किया।1973 में वरिष्ठता की परंपरा को तोड़ते हुए जस्टिस अजीतनाथ रे को चीफ जस्टिस नियुक्त किया गया- न्यायपालिका की स्वतंत्रता पर सीधा प्रहार था। मीसा कानून के जरिए निर्दोष लोगों को कैद किया गया- क्या यही कांग्रेस का न्याय है? शाहबानो मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला पलटकर कांग्रेस ने करोड़ों मुस्लिम महिलाओं के अधिकार छीन लिए। राजीव गांधी ने वोट बैंक के लिए संविधान के साथ सौदा किया, यही कांग्रेस की असली सोच है। राहुल गांधी संसद में संविधान की प्रति लहराते हैं, लेकिन 2013 में उसी संसद के अध्यादेश को फाड़ कर संविधान की अवमानना करते हैं।

कांग्रेस संविधान बचाने की बात करती है, लेकिन इतिहास गवाह है कि वही कांग्रेस बार-बार संविधान को बेरहमी से कुचलती रही है। कांग्रेस के लिए लोकतंत्र सिर्फ एक दिखावा है- असली सत्ता नेहरू-गांधी परिवार के इर्द-गिर्द ही घूमती है।

जहां कांग्रेस ने संविधान के अनुच्छेदों का उपयोग केवल सत्ता में बने रहने के लिए किया, वहीं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार हर अनुच्छेद के महत्व को नागरिकों तक पहुंचाने की जागरूकता अभियान चला रही है। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने जो संविधान देश को दिया, उसे कांग्रेस ने अपने स्वार्थ के लिए मोड़ा, तोड़ा और बदला। मोदी सरकार उसी संविधान को आधार बनाकर हर वर्ग के कल्याण और अधिकारों की गारंटी दे रही है- यही असली सम्मान है बाबा साहेब को। न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुता- ये चार स्तंभ सिर्फ किताबों में नहीं, आज मोदी सरकार में नीति और शासन का आधार बन चुके हैं। कांग्रेस ने इन सिद्धांतों को दिखावे की बातें बनाकर रखा, जबकि मोदी सरकार इन्हें नीति, योजना और क्रियान्वयन के स्तर पर सशक्त कर रही है।

लोकतंत्र सेनानियों का ही संघर्ष है जिसके परिणाम स्वरूप भारत में लोकतंत्र पुर्नस्थापित हुआ। आज देश की प्रगति के पीछे लोकतंत्र सेनानियों का बलिदान आधार का पत्थर है। जिसके कारण लोकतंत्र पुर्नस्थापित हुआ और 2014 में भाजपा के श्री नरेंद्र मोदी जैसे व्यक्तित्व के रूप में भारत को महान नायक मिला जिनके नेतृत्व में लोकतंत्र की जड़ें बहुत मजबूत व गहरी हुईं, तुष्टीकरण संतुष्टीकरण में बदला, पूरा भारत एक हुआ, आतंकवाद की कमर टूटी, 11 वीं अर्थव्यवस्था से देश विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था बना, सीमाएं सुरक्षित हुईं, माताओं बहनों के सम्मान की रक्षा हुई, भ्रष्टाचार, घपले, घोटालों का अंत हुआ, भारत ने आत्मनिर्भर भारत का संकल्प लिया, विकसित भारत-2047 के संकल्प की सिद्धि के लिए रात दिन एक करके सघन प्रयास प्रारंभ कर दिया।

आज जब हम अमृतकाल की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं, हमें यह संकल्प लेना होगा कि ऐसे काले दिन फिर कभी न लौटें। हमें अपनी संवैधानिक संस्थाओं को और सशक्त बनाना है, नागरिक अधिकारों की रक्षा करनी है और लोकतंत्र की नींव को और गहरा करना है। जो काम कांग्रेस ने दशकों तक नहीं किया, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की सरकार ने उसे धरातल पर उतार कर संविधान की आत्मा को सम्मान दिया। आपातकाल के विरुद्ध लोकतंत्र सेनानियों का संघर्ष, बलिदान रंग लाया और भारत माता के सम्मान की रक्षा करने में सफल रहा। ▪

संविधान हत्या दिवस

लोकतंत्र रक्षकों को सलाम

25 जून संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाया जाता है - एक ऐसा दिन जब मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया गया था, प्रेस की स्वतंत्रता को खत्म कर दिया गया था और अनगिनत राजनीतिक नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, छात्रों और आम नागरिकों को जेल में डाल दिया गया था।

भारत के लोकतांत्रिक इतिहास के सबसे काले अध्यायों में से एक, आपातकाल लागू होने के पचास साल पूरे हो गए हैं। भारत के लोग इस दिन को संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाते हैं। इस दिन, भारतीय संविधान में निहित मूल्यों को दरकिनार कर दिया गया, मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया गया, प्रेस की स्वतंत्रता को खत्म कर दिया गया और कई राजनीतिक नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, छात्रों और आम नागरिकों को जेल में डाल दिया गया। ऐसा लग रहा था जैसे उस समय सत्ता में बैठी कांग्रेस सरकार ने लोकतंत्र को गिरफ्त में ले लिया हो!

कोई भी भारतीय कभी नहीं भूल पाएगा कि किस तरह हमारे संविधान की भावना का उल्लंघन किया गया, संसद की आवाज दबा दी गई और अदालतों को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया। 42वां संशोधन उनके छल-कपट का एक प्रमुख उदाहरण है। गरीबों, हाशिए पर पड़े लोगों और दलितों को खास तौर पर निशाना बनाया गया, जिसमें उनकी गरिमा का अपमान भी शामिल है।

हम आपातकाल के खिलाफ लड़ाई में डटे रहने वाले हर व्यक्ति को सलाम करते हैं! इनमें पूरे भारत से, हर क्षेत्र से, अलग-अलग विचारधाराओं से आए लोग थे जिन्होंने एक ही उद्देश्य से एक-दूसरे के साथ मिलकर काम किया, भारत के लोकतांत्रिक ढांचे की रक्षा करना और उन आदर्शों को बनाए रखना जिनके लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। यह उनका सामूहिक संघर्ष ही था जिसने सुनिश्चित किया कि तत्कालीन कांग्रेस सरकार को लोकतंत्र बहाल करना पड़ा और नए चुनाव कराने पड़े, जिसमें वे बुरी तरह हार गए।

हम अपने संविधान में निहित सिद्धांतों को मजबूत करने और एक विकसित भारत के अपने सपने को साकार करने के लिए मिलकर काम करने की अपनी प्रतिबद्धता को भी दोहराते हैं। हम प्रगति की नई ऊंचाइयों को छुएं और गरीबों और वंचितों के सपनों को पूरा करें। ▪

(आपातकाल के 50 वर्ष पूरे होने पर विशेष आलेख)

आपातकाल-लोकतंत्र का काला अध्याय

12 जून 1975 को न्यायमूर्ति जगमोहनलाल सिन्हा ने अपने निर्णय में इंदिरा गांधी की जीत को अवैध करार दिया और 6 साल तक चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित कर दिया। इस ऐतिहासिक निर्णय के बाद इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री नहीं रह सकती थीं। उनकी कुर्सी को गंभीर राजनीतिक संकट खड़ा हो गया।

इससे घबराकर इंदिरा गांधी ने आंतरिक अशांति का बहाना बनाकर मंत्रिपरिषद की अनुशंसा के बगैर ही राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद से अनुच्छेद 352 के तहत देश में आपातकाल लगाने की सिफारिश की, जिसे राष्ट्रपति ने 25 जून 1975 की आधी रात को मंजूरी दे दी।

हितानंद शर्मा

आंतरिक अशांति का बहाना बनाकर 25 जून 1975 की आधी रात को देश पर थोपे गए आपातकाल को 50 वर्ष पूरे हो रहे हैं। भारत की जनता ने तब तानाशाही के विरुद्ध स्वतंत्रता की एक और लड़ाई लड़ी थी। इस बार लड़ाई अपने ही दिग्भ्रमित सत्तालोलुप नेताओं से थी, जिसमें देश एक बार फिर विजेता बनकर उभरा था। पिछले कुछ वर्षों से कुछ विपक्षी नेता संविधान की प्रति हाथ में लिए भाषण देते दिखाई देते रहे हैं। बात-बात में संविधान की दुहाई देने का क्रम चल रहा है। भारत के स्वस्थ और मजबूत लोकतांत्रिक वातावरण में भी 'लोकतंत्र व संविधान' बचाने के लिए सभाओं के प्रहसन चल रहे हैं। आपातकाल के 50 वर्ष पूरे होने पर यह अवसर है जब मुड़कर इतिहास को फिर से देखने की आवश्यकता है।

आपातकाल का निर्णय किसी युद्ध या आंतरिक विद्रोह के कारण नहीं बल्कि एक प्रधानमंत्री के लोकसभा चुनाव रद्द होने और अपनी सत्ता बचाने की हताशा में लिया गया राष्ट्र विरोधी निर्णय था। कांग्रेस पार्टी ने आपातकाल के इस क्रूर काल में न केवल संवैधानिक ढांचे को कुचला बल्कि प्रेस की स्वतंत्रता, न्यायपालिका की निष्पक्षता और नागरिकों के मौलिक अधिकारों को भी भंग किया।

1971 के आम चुनावों में इंदिरा गांधी ने रायबरेली से जीत तो हासिल की लेकिन उनके निकटतम उम्मीदवार राजनारायण ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में याचिका दायर कर चुनाव में भ्रष्टाचार और सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग के आरोप लगाए। इधर देश की अर्थव्यवस्था खराब स्थिति में थी। आर्थिक विकास दर केवल 1.2 प्रतिशत थी। देश का विदेशी मुद्रा भंडार मात्र 1.3 बिलियन डॉलर था (आज 640 बिलियन है)। महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार चरम पर था। 50 प्रतिशत से ज्यादा जनता गरीबी रेखा के नीचे थी। बिहार और गुजरात में छात्रों के नेतृत्व में नवनिर्माण आंदोलन चल रहा था। 8 मई 1974 को जॉर्ज फर्नांडिस के नेतृत्व में देशव्यापी रेल हड़ताल हो चुकी थी। बिहार, गुजरात में राष्ट्रपति शासन के बाद कांग्रेस चुनाव हार चुकी थी। इस सबसे कांग्रेस की केंद्र सरकार परेशान हो चुकी थी।

12 जून 1975 को न्यायमूर्ति जगमोहनलाल सिन्हा ने अपने निर्णय में इंदिरा गांधी की जीत को अवैध करार दिया और 6 साल तक चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित कर दिया। इस ऐतिहासिक निर्णय के बाद इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री नहीं रह सकती थीं। उनकी कुर्सी को गंभीर राजनीतिक संकट खड़ा हो गया। इससे घबराकर इंदिरा गांधी ने आंतरिक अशांति का बहाना बनाकर मंत्रिपरिषद की अनुशंसा के बगैर ही राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद से अनुच्छेद 352 के तहत देश में आपातकाल लगाने की सिफारिश की, जिसे राष्ट्रपति ने 25 जून 1975 की आधी रात को मंजूरी दे दी।

आज संविधान की प्रतियां हाथ में लहराने

का नाटक करने वालों को यह स्मरण रखना ही होगा कि आपातकाल वास्तव में भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था को कुचलने का प्रयास था। यह संविधान की हत्या की सोची-समझी रणनीति थी। इंदिरा गांधी ने आंतरिक अशांति की आड़ लेकर संविधान के अनुच्छेद 352 का दुरुपयोग किया जबकि न तो उस समय बाहरी आक्रमण या युद्ध की स्थिति थी, न विद्रोह ही हुआ था। आपातकाल किसी राष्ट्रीय संकट का परिणाम नहीं था, बल्कि यह एक डरी हुई प्रधानमंत्री की सत्ता बचाने की जिद थी।

संविधान की शपथ लेकर इंदिरा गांधी देश की प्रधानमंत्री बनी थीं, किन्तु उसी संविधान की आत्मा को कुचलते हुए एक झटके में उन्होंने लोकतंत्र को तानाशाही में बदलकर रख दिया और पूरी शासन व्यवस्था को कठपुतली की तरह उपयोग किया। कांग्रेस सरकार ने विधायिका और न्यायपालिका को बंधक बनाकर सत्ता के आगे घुटने टेकने को विवश कर दिया था। प्रेस की स्वतंत्रता पर कुठाराघात किया गया। बड़े-बड़े समाचार पत्र संस्थानों की बिजली काट दी गई। समाचार पत्रों के प्रकाशन पर सेंसरशिप लगा दी गई और पत्रकारों को जेल में डाल दिया गया।

21 महीने के आपातकाल का क्रूर समय नागरिकों पर हुए अत्याचारों की दारुण गाथा है। जहां विरोध में स्वर उठे वहां क्रूरता के साथ दमन किया गया। लोकतंत्र में आस्था रखने वाली हर आवाज को दबाया गया। मीसा जैसे काले कानून में लगभग एक लाख लोगों को बिना किसी सुनवाई के जेलों में डाला गया। जयप्रकाश नारायण, अटलबिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, राजनाथ सिंह जैसे अनेक वरिष्ठ विपक्षी नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, पत्रकारों यहां तक कि छात्रों तक को जेल में बंद करा दिया। जेलों में अमानवीय यातनाएं दी गईं। बीमार होने पर दवाएं तक नहीं दी गईं। महिला बंदियों के साथ असम्मानजनक और अमानवीय व्यवहार किया गया।

लोकतंत्र की रक्षा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका और संघर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है। डरी हुई सरकार ने आपातकाल लगाने के पांच दिन बाद ही सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस को गिरफ्तार कर लिया। जयप्रकाश नारायण ने अपनी गिरफ्तारी से पहले लोक संघर्ष समिति का नेतृत्व संघ के पूर्णकालिक नानाजी देशमुख को सौंप दिया था, बाद में उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। आरएसएस, जनसंघ, एवीबीपी और कई अन्य संगठनों पर प्रतिबंध लगाकर कांग्रेस द्वारा कठोर दमन चक्र चलाया गया। एक लाख स्वयंसेवक एवं विचार परिचार के कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह किया। 25 हजार कार्यकर्ताओं को मीसा में बंदी बना लिया गया। 100 कार्यकर्ता इस संघर्ष में बलिदान हो गए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उस समय साधारण कार्यकर्ता हुआ करते थे और उन्हीं की तरह लाखों स्वयंसेवकों ने आपातकाल विरोधी आंदोलन जारी रखा। रातों-रात रेलों में आपातकाल विरोधी पर्चे बांटे, मीसाबंदियों के परिवारों की देखरेख की, भूमिगत रहते हुए आंदोलन की गति बनाए रखी और कांग्रेस की सच्चाई घर-घर तक पहुंचाई। अंततः जनाक्रोश और नागरिकों के बढ़ते दबाव के कारण जनवरी 1977 में चुनावों की घोषणा हुई और मार्च 1977 में हुए चुनावों में जनता पार्टी को जबरदस्त समर्थन मिला। इंदिरा गांधी स्वयं रायबरेली से चुनाव हार गईं। लोकतंत्र फिर प्रतिष्ठित हुआ।

इंदिरा इज इंडिया, इंडिया इज इंदिरा जैसे नारों से आपातकाल के समय में कांग्रेस ने देश को व्यक्ति पूजा और परिवारवाद की प्रयोगशाला बना दिया। बिना किसी संवैधानिक दायित्व के संजय गांधी देश की नीतियों पर निर्णय ले रहे थे। वह आपातकाल में सत्ता का वास्तविक केंद्र थे। देश के नागरिकों पर आपातकाल थोपने वाली कांग्रेस आज भी इसी परिवारवाद के सीमित सांचे में सिमटकर रह गई है। इंदिरा गांधी की तानाशाही का सबसे भयावह चेहरा यह था कि उन्होंने अपने पुत्र के माध्यम से सत्ता को वंशवाद की जकड़ में पूरी तरह से कैद कर लिया था। सत्ता लोलुपता में कांग्रेस ने लोकसभा का कार्यकाल 5 से बढ़ाकर 6 वर्ष कर दिया।

आपातकाल इतिहास की एक राजनीतिक घटना मात्र नहीं हैं, बल्कि उस दूषित मानसिकता का प्रमाण है, जो संविधान और लोकतंत्र को केवल अपनी सत्ता पाने और बचाए रखने के लिए इस्तेमाल करती है। लोकतंत्र के साथ विश्वासघात करने के बाद भी कांग्रेस ने न तो कभी माफी मांगी और न ही कोई पश्चाताप ही प्रकट किया।

बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर ने जनता को अधिकार देने के लिए जिस संविधान का निर्माण किया, कांग्रेस ने उसी की गलत व्याख्या कर जनता के अधिकारों को छीना। स्वतंत्रता के बाद ऐसा पहली बार हुआ जब सरकार ने राष्ट्र के शत्रु नहीं राष्ट्र की जनता को ही बंदी बना लिया। आपातकाल लोकतंत्र का काला अध्याय है। आपातकाल का स्मरण रखना इसलिए आवश्यक है, ताकि भविष्य में संविधान और लोकतंत्र को सुरक्षित रखा जा सके, क्योंकि यह प्रत्येक भारतीय का नैतिक दायित्व भी है। ▪

(लेखक भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के प्रदेश संगठन महामंत्री हैं)

आओ! मर्दों नामर्द बनो

अटल बिहारी वाजपेयी

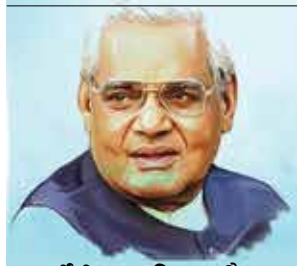

मर्दों ने काम बिगाड़ा है,
मर्दों को गया पछाड़ा है,
झगड़े-फसाद की जड़ सारे,
जड़ से ही गया उखाड़ा है,

मर्दों की तूती बन्द हुई,
औरत का बजा नगाड़ा है,
गर्मी छोड़ो अब सर्द बनो।

गुलछर्रे खूब उड़ाए हैं,
रस्से भी खूब तुड़ाए हैं,
चूँ चपड़ चलेगी तनिक नहीं,
सर सब के गए मुड़ाए हैं,

उलटी गंगा की धारा है,
क्यों तिल का ताड़ बनाए है,
तुम दवा नहीं, हमदर्द बनो।

औरत ने काम सम्हाला है,
सब कुछ देखा है, भाला है,
मुँह खोलो तो जय-जय बोलो,
वर्ना तिहाड़ का ताला है,

ताली फटकारो, झख मारो,
बाकी ठन-ठन गोपाला है,
गर्दिश में हो तो गर्द बनो।

पौरुष पर फिरता पानी है,
पौरुष कोरी नादानी है,
पौरुष के गुण गाना छोड़ो,
पौरुष बस एक कहानी है,

पौरुषविहीन के पौ बारा,
पौरुष की मरती नानी है,
फाइल छोड़ो, अब फर्द बनो।

चौकड़ी भूल, चौका देखो,
चूल्हा फूँको, मौका देखो,
चलती चक्की के पाटों में
पिसती जीवन नौका देखो,

घर में ही लुटिया डूबी है,
चुटिया में ही धोखा देखो,
तुम कलाँ नहीं बस खुर्द बनो।

(आपातकाल में लिखी गई कविता)

भारत की सुरक्षा एवं मोदी सरकार

चाणक्य नीति में कहा कि ''शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चिंता प्रवर्तते'' शास्त्रों की चर्चा भी तभी संभव है जब राष्ट्र सभी प्रकार से सुरक्षित हो। सिद्धांत कितना भी श्रेष्ठ हो उसकी सफलता उस सिद्धांत का अनुसरण करने वालों की शक्ति पर ही निर्भर करती है।

शिवप्रकाश

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी सरकार के 11 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय जनता पार्टी संकल्प से सिद्धि अभियान चला रही है। संपूर्ण देश में मोदी सरकार की सफलता पर प्रेस वार्ताएं, प्रदर्शनी, विचार संगोष्ठी, जनसभाएं एवं ग्राम स्तर पर चौपाल कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। सोशल मीडिया द्वारा योजनाओं की जानकारी एवं अनेक प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी हो रहा है। गरीब कल्याण, ढांचागत विकास, अन्तर्वाह्य सुरक्षा, आर्थिक प्रगति, सांस्कृतिक उत्थान एवं विदेशों में बढ़ता भारतीय सम्मान सभी क्षेत्रों में ऐतिहासिक उपलब्धियां 11 वर्ष में प्रगति की गवाह है। भारत सहित विश्व की अनेक संस्थाओं एवं प्रमुख व्यक्तियों ने इस ऐतिहासिक सफलता की प्रशंसा की है। रक्षा क्षेत्र में भी इसी प्रकार की उपलब्धियां ऐतिहासिक है।

चाणक्य नीति में कहा कि ''शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चिंता प्रवर्तते'' शास्त्रों की चर्चा भी तभी संभव है जब राष्ट्र सभी प्रकार से सुरक्षित हो। सिद्धांत कितना भी श्रेष्ठ हो उसकी सफलता उस सिद्धांत का अनुसरण करने वालों की शक्ति पर ही निर्भर करती है। इसी कारण विद्वानों ने शक्ति को ही शांति का आधार बताया है। राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर अपनी कविता ''क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो'' इस सिद्धांत को ही प्रतिपादित करते हैं।

भारतीय जनसंघ ने अपने 1964 के पटना अधिवेशन में प्रस्ताव पारित करते हुए मांग की थी कि भारत को परमाणु बम बनाने के सभी प्रयत्न करने चाहिए। ''सिद्धांत एवं नीतियां'' नामक दस्तावेज में भी परमाणु अस्त्रों का निर्माण करने की बात की थी। प्रस्ताव प्रतिपादन करते समय कहा गया था कि हमारे आराध्य सभी देवी-देवता धर्म संस्थापना के लिये शस्त्रधारी है। इसलिए भारत माता भी परमाणु बम धारी होनी चाहिए। इसी नीति का अनुसरण करते हुए श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने 1999 में पोखरण परमाणु विस्फोट कर विश्व में भारत के सम्मान को बढ़ाने का कार्य किया था। 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार बनने के बाद देश अपने हितों की सुरक्षा करने में समर्थ बने इस प्रकार की नीति पर चला। आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति इसी का उदाहरण है। जहाँ कांग्रेस सरकार में आतंकियों के लिए जी जैसे सम्मानपूर्वक शब्दों का उपयोग एवं बिरयानी खिलाना जैसे उपक्रम चल रहे थे वहीं मोदी सरकार में सेना और सुरक्षा बलों को आतंक से लड़ने के लिए छूट एवं सुरक्षा बलों को आवश्यक सुरक्षा उपकरण उपलब्ध करवाये गए।

रक्षा क्षेत्र का बजट 2013-14 में 2.53 लाख करोड़ था अब 2025-26 के लिए वह बढ़कर 6.81 लाख करोड़ अर्थात तीन गुना से अधिक हो गया है। 2015 कैग रिपोर्ट के अनुसार भारतीय सेना के पास केवल 20 दिन का गोलाबारूद उपलब्ध था। व्यक्तिगत सैनिक स्तर पर, सैनिकों को अब स्वदेशी रूप से निर्मित उच्च गुणवत्ता वाली बुलेट प्रूफ जैकेट, उन्नत हेलमेट, नई बैटल ड्रेस यूनिफॉर्म (NBDU), नाइट विजन डिवाइस (NVDs) और थर्मल इमेजर उपलब्ध करायी गई। मोदी सरकार के आने के बाद सेना के समन्वय के लिए लंबित मांग सीडीएस की नियुक्ति का निर्णय हुआ। ऑपरेशन सिन्दूर में तीनों सेनाओं के समन्वय में हमने इस निर्णय की भूमिका को अनुभव किया है। शस्त्रों की खरीद के लंबे समय से लंबित निर्णयों का भी शीघ्र निस्तारण होते हुए हम देख चुके हैं। फ्रांस से आने वाले राफेल की खरीद इसी प्रक्रिया का परिणाम है।

एस-400, सुखोई-30, इजराईल से ड्रोन, हैमर मिसाईल, चिनूक हेलिकॉप्टर, LCH प्रचंड

(लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर), Tejas Fighter Jet (पूर्ण स्वदेशी विमान), पिनाका राकेट सिस्टम (Multi Barrel Rocket launcher), वरुणास्त्र (Anti Submarine Missile) आदि की उपलब्धता के कारण भारतीय सेना विश्व की श्रेष्ठतम सेनाओं में गिनी जाती है। ऑपरेशन सिन्दूर में निर्धारित लक्ष्य पर मार एवं शत्रु के ड्रोन एवं मिसाईल को मार गिराने में हम सक्षम हुए है।

11 वर्ष के सफलतम कालखंड में केवल विदेशों से शस्त्र खरीद ही नहीं हमने स्वयं के आत्मनिर्भर होने के मंत्र को भी पहचाना है। अब हम भारत में उन्नत एवं आधुनिक स्वदेशी शस्त्रों का निर्माण भी कर रहे हैं। स्वदेशी विमान वाहक पोत आईएनएस विक्रांत का निर्माण, आकाश एयर डिफेंस सिस्टम, रुस्तम यूएवी ड्रोन्स का डीआरडीओ द्वारा लखनऊ में निर्माण, रूस के साथ ब्रह्मोस सुपर सोनिक क्रूज मिसाइल, टाटा-डसाल्ट के साथ राफेल के मुख्य भाग का हैदराबाद में हम निर्माण करने वाले हैं। रक्षा उत्पादन में पिछले 10 वर्षों में 174 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। रक्षा उत्पादन 2014-15 में 46529 करोड़ की तुलना में 2023-24 में 127265 करोड़ हुआ है।

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी-17 नवंबर 2021 ("Rashtra Raksha Samarpan Parv" झांसी में) के अपने संबोधन में कहा कि-

''भारत अपनी रणनीतिक व सुरक्षा आवश्यकताएँ अन्य देशों पर निर्भर होकर पूरा नहीं कर सकता... सरकार निरंतर आत्मनिर्भर भारत की दिशा में प्रयासरत है।''

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की नीति के कारण अब हम खरीदने अर्थात आयात करने वाले देश नहीं हम बेचने वाले अर्थात निर्यात करने वाले देश बन गए हैं। 2004 से 2014 अर्थात 10 वर्षों में हमने 4312 करोड़ का निर्यात किया था। 2014 से 24 में 88,319 करोड़ का हुआ है। 2024 -25 में केवल एक वर्ष में ही हमने 23622 करोड़ का निर्यात किया है। आयात में 21 प्रतिशत की कमी करके 11 वर्षों में निर्यात में 34 प्रतिशत की वृद्धि करने में देश सक्षम हुआ है। आज हम लगभग 80 से अधिक देशों में रक्षा उत्पादों का निर्यात कर रहे हैं। ऑपरेशन सिंदूर में हमारे स्वदेशी शस्त्रों की सफलता को देखकर विश्व में हमारे शस्त्रों की मांग भी बढ़ गयी है।

देश को नक्सल मुक्त करने के मोदी सरकार के संकल्प ने देश के सामान्य नागरिकों में सरकार के प्रति विश्वास जगाया है। नक्सली हिंसा में लिप्त आतंकी अपनी अंतिम सांस गिन रहे हैं। 2014 में नक्सल आतंकवाद से प्रभावित जिलों की संख्या 126 थी। 11 वर्षों बाद 2025 में वह संख्या मात्र 6 रह गई है। बड़े-बड़े इनामी नक्सली आतंकी मुठभेड़ में मारे गए हैं। सरकार के नक्सल मुक्त देश के संकल्प से लगता है कि भावी पीढ़ी नक्सलवाद नाम ही भूल जाएगी।

प्रत्येक प्रकार की गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए 2 सितंबर 2022 को कोच्चि में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय नौसेना के नए ध्वज का अनावरण किया, जिसमें औपनिवेशिक सेंट जॉर्ज क्रॉस को हटाकर छत्रपति शिवाजी महाराज की राजमुद्रा से प्रेरित अष्टकोणीय प्रतीक को स्थान दिया गया। इसमें अशोक स्तंभ, लंगर और नौसेना का आदर्श वाक्य ''शंनो वरुणः'' अंकित है, जो भारत की समुद्री विरासत और आत्मगौरव का प्रतीक है। नए भारत का संकल्प-घर में घुसकर आतंकियों को मारेंगे केवल कहना मात्र नहीं, सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक एवं ऑपरेशन सिंदूर में हमने यह करके दिखाया है।

खून एवं पानी एक साथ नहीं बहेगा सिंधु नदी समझौता रद्द कर हमने आतंक के प्रति अपने दृष्टिकोण को विश्व के सामने स्पष्ट किया है। पूर्व सैनिकों के कल्याण, अग्नि वीर योजना, विजयदशमी पर राफेल जैसे शस्त्रों का पूजन एवं दीपावली त्योहार में सैनिकों के मध्य प्रधानमंत्री जी की उपस्थिति, सीमावर्ती सैनिक चौकियों पर रक्षामंत्री राजनाथ सिंह जी का प्रवास यह सभी उपक्रम हमारे सुरक्षित भारत के संकल्प को प्रकट करते हैं।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद की स्थिति, पाकिस्तान के आतंकी चेहरे को बेनकाब करने, आतंकवाद के प्रति भारत के दृष्टिकोण को विश्व के सम्मुख रखने के लिए सर्वदलीय प्रतिनिधि मण्डल देश की एकजुटता को प्रकट करने का कूटनीतिक सराहनीय प्रयास है।

भारत को सुरक्षा कवच प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के यह प्रयास देश की जनता में यह विश्वास जगाने में सफल हुए हैं कि मोदी के नेतृत्व में देश सुरक्षित हाथों में है। ▪

(लेखक- भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री हैं।)

"ग्रैंड क्रॉस ऑफ द ऑर्डर ऑफ मकारियोस III" 140 करोड़ भारतीयों का सम्मान है- पीएम मोदी

The Grand Cross of the ऑर्डर of मकारिओस-थ्री

यह सम्मान, केवल मेरा, नरेंद्र मोदी का सम्मान नहीं है। यह 140 करोड़ भारत वासियों का सम्मान है। उनके सामर्थ्य और आकांक्षाओं का ये सम्मान है। ये हमारे देश के सांस्कृतिक भाईचारे और ''वसुधैव कुटुंबकम'' की विचारधारा का सम्मान है। यह अवॉर्ड, भारत और साइप्रस के मैत्रीपूर्ण संबंधों को, हमारे साझा मूल्यों, और हमारी पारस्परिक समझ को समर्पित करता हूँ।

यह अवार्ड शांति, सुरक्षा, संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता और हमारे लोगों की समृद्धि के लिये हमारी अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

मैं इस सम्मान को भारत और साइप्रस के संबंधों के प्रति एक जिम्मेदारी के रूप में इसका महत्व समझता हूँ और मैं उस भाव से इसको लेता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी सक्रिय साझेदारी आने वाले समय में और भी नई ऊंचाइयों को छुएगी।

हम मिलकर न केवल अपने देशों के विकास को मजबूत करेंगे, बल्कि एक शांतिपूर्ण और सुरक्षित वैश्विक वातावरण के लिए उसके निर्माण के लिए भी मिलकर के योगदान देंगे। ▪

मोदी जी दिलों पर राज करते हैं

सीए अखिलेश जैन

उतार-चढ़ाव से भरी भारतीय राजनीति में वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का विशेष स्थान है। मोदी जी की कार्यशैली ने मोदी जी का भारतीय राजनीति के साथ-साथ विश्व के राजनैतिक मंच पर अपना विशेष स्थान बना लिया है। यह 140 करोड़ लोगों के लिए बहुत गर्व की, बहुत बड़े सम्मान की बात है।

और विशेष स्थान हो भी क्यों नहीं?

140 करोड़ भारतवासियों का देश जिसमें अनेकों धर्म, भाषा, रहन-सहन, भोजन, पूजन पद्धति से लेकर वेशभूषा, आय के साधनों तक में भारी अंतर है, इतने अंतरों के बाद भी सबका नेता एक - नरेंद्र मोदी, अर्थात् सभी मान्यताओं में फर्क के बाद भी नेता के मुद्दे पर पूरा देश एक साथ मोदी जी के साथ खड़ा है।

ऐसा क्यों?

12 वर्ष का गुजरात के मुख्यमंत्री का कार्यकाल व 11 वर्ष का भारत के प्रधानमंत्री का कार्यकाल अपने आप में बहुत कुछ कहता है। निश्चित रूप से मोदी जी भारतीय जनता पार्टी के नेता हैं। पर मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री पार्टी का नहीं राज्य का, देश का होता है।

तुष्टिकरण, परिवारवाद, भ्रष्टाचार, लिंग भेद, भाषा भेद, राज्य भेद जैसी संकुचित विचारधाराओं से ऊपर उठकर कार्य करने वाले प्रधानमंत्री के लिए 140 करोड़ लोगों का देश एक है, अपना घर है। भारत के पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक के लिए प्रधानमंत्री जी के निर्णयों में एकरुपता है। देश को बांटने वाली बाधाओं को मोदी जी ने ही खत्म किया है। यह मोदी जी का ही निर्णय है जिसके कारण मुस्लिम बहनों को तीन तलाक की तलवार से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्ति मिली। देश को सबका साथ- सबका विकास- सबका विश्वास- सबका प्रयास का महामंत्र मिला। देश के गरीब नागरिक, जिनके लिए बैंक के दरवाजे हमेशा बंद थे, मोदी जी के राज में न केवल बैंक उनके घर गई बल्कि बैंक खातों में सरकार ने आपदा में राशि भी पहुंचाई। पहली बार देश ने ''आत्मनिर्भर भारत'' मेक इन

इंडिया का सपना साकार होते देखा। देश के करोड़ों गरीबों को पक्की छत मिली। पहली बार महिलाओं का लोकसभा-विधानसभा में आरक्षण सुनिश्चित हुआ। पहली बार राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा मिला। पहली बार गरीब का इलाज सुनिश्चित हुआ। पहली बार एक देश-एक कर व्यवस्था लागू हुई। पहली बार जम्मू-कश्मीर के विकास में बाधक बेड़ियों को हटाया गया। पहली बार देश ने हर गांव तक बिजली पहुंचाने के संकल्प को पूरा करने में सफलता पाई। पहली बार देश ने भाई- भतीजावाद, तुष्टीकरण, भ्रष्टाचार से मुक्त सरकार को आजमाया। पहली बार देश ने आतंकवाद पर कड़ा प्रहार देखा। पहली बार देश ने रक्षा उत्पादन में आयात को निर्यात में बदलते देखा। पहली बार देश ने अर्थव्यवस्था को छलांग लगाते हुए देखा। पूरे विश्व में भारतीयों ने भारतीय होना गौरव की बात है, अनुभव किया।

इस तरह आप देखेंगे कि मोदी जी ने हर वह काम किया जिसका देश की जनता को मोदी जी से आशा, अपेक्षा व विश्वास था।

पर मोदीजी ने तो जनता की आशा, अपेक्षा व विश्वास की सीमाओं से परे जाकर काम किया। या जनता को उम्मीद से कहीं ज्यादा विनम्रता पूर्वक वापस लौटाया।

अंधकार व निराशा के गर्त से उठाने के लिए मोदी जी सहारा बने। खोया आत्मविश्वास जगाने में मोदी जी कामयाब हुए। तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था का लाभ उन गरीब परिवारों को हुआ जो गरीबी रेखा से नीचे गुजर बसर करते थे एवं कभी गरीबी रेखा से ऊपर आने का विचार भी मन में लाने का साहस ना था। आज 25 करोड़ से अधिक लोग गरीबी रेखा से ऊपर आने में सफल हुए हैं।

मोदी जी के राज में पहली बार भारत ने वादे नहीं, नारे नहीं, धरातल पर काम होते देखा।

मोदी जी की कार्यशैली, निर्णय लेने की क्षमता व दूरदर्शिता, मोदी जी को विशिष्टता प्रदान करती है। यह विशिष्टता ही लोगों को मजबूर करती है कि मोदी जी दिलों पर राज करें।

जनता के दिलों पर राज करना किसी राजनेता की असाधारण क्षमता का परिचायक है। यह सिद्ध करता है कि मोदी जी प्रधानमंत्री बनकर नहीं जनता के भाई, बेटे, हमदर्द बनकर काम करते हैं। जनता की अपेक्षाओं को अच्छे से पहचानते हैं।

मोदी जी का प्रधानमंत्री पद जनता की सेवा के लिए है। प्रधानमंत्री पद को मोदी जी ने जनता की सेवा का माध्यम बनाकर प्रधानमंत्री व आम जनता के बीच के अंतर को पाटने में सफलता पाई है। मोदी जी ने प्रधानमंत्री को आम जनता का प्रतिनिधि सिद्ध किया है। मोदी जी ने जनता की आशाओं, अपेक्षाओं और विश्वास पर खरे उतर कर जनता के दिलों में स्थान अर्जित किया है और यही वह मूल कारण है जिसके कारण मोदी जी जनता के दिलों पर राज करते हैं।

मोदी जी प्रधानमंत्री पद से ऊपर उठ कर जनता के दिलों में बसेरा करते हैं। ▪

(लेखक भाजपा मध्य प्रदेश के कोषाध्यक्ष हैं)

योग को जन-आंदोलन बनाएं-प्रधानमंत्री

वो दिन जब संयुक्त राष्ट्र में भारत ने प्रस्ताव रखा कि 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता मिले और तब कम से कम समय में दुनिया के 175 देश हमारे इस प्रस्ताव के साथ खड़े हुए।

ये सिर्फ एक प्रस्ताव का समर्थन भर नहीं था, ये मानवता के भले के लिए दुनिया का सामूहिक प्रयास था।

- **योग ने समस्त विश्व को एकजुट किया है।**
- **योग सब के लिए है, सीमाओं से, पृष्ठभूमि से, उम्र या क्षमता से परे है।**
- **योग हमें विश्व के साथ एकरूपता की दिशा में ले जाता है, यह हमें सिखाता है कि हम अलग-थलग नहीं, बल्कि प्रकृति का ही हिस्सा हैं।**
- **योग एक ऐसी प्रणाली है जो हमें ''मैं से हम'' की ओर ले जाती है।**
- **योग मानवता के लिए सांस लेने, संतुलन बनाए रखने और फिर से संपूर्ण बनने के लिए आवश्यक पौज बटन है।**
- **योग दिवस को मानवता के लिए योग 2.0 के आरंभ के रूप में मनाएं, जहां आंतरिक शांति वैश्विक नीति बन जाती है।**

11 वीं बार पूरा विश्व 21 जून को एक साथ योग कर रहा है। योग का सीधा-साधा अर्थ होता है जुड़ना और ये देखना सुखद है कि कैसे योग ने पूरे विश्व को जोड़ा है। बीते एक दशक में योग की यात्रा को जब देखता हूं , तो बहुत कुछ याद आता है। वो दिन जब संयुक्त राष्ट्र में भारत ने प्रस्ताव रखा कि 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता मिले और तब कम से कम समय में दुनिया के 175 देश हमारे इस प्रस्ताव के साथ खड़े हुए। आज की दुनिया में ऐसी एकजुटता, ऐसा समर्थन सामान्य घटना नहीं है। ये सिर्फ एक प्रस्ताव का समर्थन भर नहीं था, ये मानवता के भले के लिए दुनिया का सामूहिक प्रयास था। आज 11 साल बाद, हम देख रहे हैं कि योग दुनियाभर में करोड़ों लोगों की जीवन शैली का हिस्सा बन चुका है। दिव्यांग साथी ब्रेल में योग शास्त्र पढ़ते हैं, वैज्ञानिक अंतरिक्ष में योग करते हैं, गांव-गांव में युवा साथी योग ओलंपियाड में भाग लेते हैं। नेवी के सभी जहाजों में भी बहुत शानदार योगा कार्यक्रम चल रहा है। चाहे सिडनी ओपेरा हाउस की सीढ़ियाँ हों, या एवरेस्ट की चोटी हो, या फिर समंदर का विस्तार हो, हर जगह से एक ही संदेश आता है-

योग सभी का है, और सभी के लिए है। Yoga is for Everyone, Beyond Boundaries, Beyond Backgrounds, Beyond age or ability.

विशाखापट्टनम प्रकृति और प्रगति, दोनों की संगम स्थली है।

योगांध्रा अभियान से दो करोड़ से ज्यादा लोग जुड़े हैं। पब्लिक पार्टिसिपेशन की यही वो स्पिरिट है, जो विकसित भारत का मुख्य आधार है। जब जनता खुद आगे बढ़कर किसी मुहिम को थाम लेती है, किसी लक्ष्य को Own कर लेती है, तो उस लक्ष्य की प्राप्ति से कोई रोक नहीं पाता। जनता-जनार्दन की ये सद्इच्छा और प्रयास हर तरफ नजर आ रहे हैं।

The theme of this year's International Day of Yoga is 'Yoga for One Earth, One Health'. This theme reflects a deep truth. The health of every entity on Earth is interconnected. Human well-being depends on the health of the soil that grows our food, on the rivers that give us water, on the health of the animals that share our eco-systems, on the plants that nourish us. Yoga awakens us to this inter-connected-ness. Yoga leads

us on a journey towards oneness with the world. It teaches us that we are not isolated individuals but part of nature. Initially we learn to take good care of our own health and wellness. Gradually, our care and concern extends to our environment, society and planet. Yoga is a great personal discipline. At the same time, it is a system that takes us from Me to We.

'Me to We' का ये भाव ही भारत की आत्मा का सार है। जब व्यक्ति अपने हित से ऊपर उठकर समाज की सोचता है, तभी पूरी मानवता का हित होता है। भारत की संस्कृति हमें सिखाती है, सर्वे भवन्तु सुखिनः, यानी सभी का कल्याण ही मेरा कर्तव्य है। 'मैं से हम' की ये यात्रा ही सेवा, समर्पण और सह-अस्तित्व का आधार है। यही सोच सामाजिक समरसता को बढ़ावा देती है।

दुर्भाग्य से आज पूरी दुनिया किसी न किसी तनाव से गुजर रही है। कितने ही क्षेत्रों में अशांति और अस्थिरता बढ़ रही है। ऐसे में योग से हमें शांति की दिशा मिलती है।Yoga is the pause button that humanity needs to breathe to balance to become whole gain.

मैं विश्व समुदाय से इस महत्वपूर्ण अवसर पर एक आग्रह करूंगा। Let this Yoga Day mark the beginning of Yoga for Humanity 2.0, where Inner Peace becomes Global Policy. जहां योग सिर्फ personal practice न रहे, बल्कि global partnership का माध्यम बने। जहां हर देश, हर समाज, योग को जीवनशैली और लोकनीति का हिस्सा बनाए। जहां हम मिलकर एक शांत, संतुलित और sustainable विश्व को गति दें। जहां योग, विश्व को टकराव से सहयोग, और तनाव से समाधान की ओर ले जाए।

विश्व में योग के प्रसार के लिए भारत, योग की साइंस को आधुनिक रिसर्च से और अधिक सशक्त कर रहा है। देश के बड़े-बड़े मेडिकल संस्थान योग पर रिसर्च में जुटे हैं। योग की वैज्ञानिकता को आधुनिक चिकित्सा पद्धति में स्थान मिले, ये हमारा प्रयास है। हम देश के मेडिकल और रिसर्च इंस्टीट्यूशन्स में, योगा के क्षेत्र में एविडेंस बेस्ड थेरेपी को भी प्रोत्साहित कर रहे हैं। इस दिशा में दिल्ली के एम्स ने भी बहुत अच्छा काम करके दिखाया है। एम्स की रिसर्च में सामने आया है कि योग की Cardiac और न्यूरोलॉजी डिस्ऑर्डर के उपचार और वूमन हेल्थ और Mental Well-being में अहम् भूमिका है।

National Ayush Mission के जरिए भी योग और वेलनेस के मंत्र को आगे बढ़ाया जा रहा है। डिजिटल टेक्नोलॉजी ने भी इसमें बड़ी भूमिका निभाई है। Yoga Portal और YogAndhra Portal के जरिए, देशभर में 10 लाख से अधिक इवेंट्स का रजिस्ट्रेशन हुआ है। देश के कोने-कोने में इतनी सारी जगहों पर आयोजन हो रहे हैं। ये भी दिखाता है कि योग का दायरा कितना ज्यादा बढ़ रहा है।

आज हील इन इंडिया का मंत्र भी दुनिया में काफी पॉपुलर हो रहा है। भारत-दुनिया के लिए हीलिंग का बेस्ट डेस्टिनेशन बन रहा है। योग की इसमें भी बड़ी भूमिका है। योग के लिए Common Yoga Protocol बनाया गया है। Yoga Certification Board के साढ़े छह लाख से अधिक trained वॉलंटियर्स, करीब 130 मान्यता प्राप्त संस्थान और मेडिकल कॉलेजों में 10 दिन का योग मॉड्यूल, ऐसे अनेक प्रयास, एक होलिस्टिक इकोसिस्टम तैयार कर रहे हैं। देशभर में हमारे जो आयुष्मान आरोग्य मंदिर हैं, वहां trained योग टीचर तैनात किए जा रहे हैं। दुनियाभर के लोगों को भारत के इस वेलनेस इकोसिस्टम का फायदा मिले, इसलिए विशेष ई-आयुष वीजा दिए जा रहे हैं।

योग दिवस पर मैं ओबेसिटी की तरफ भी फिर से सभी का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। बढ़ती ओबेसिटी पूरी दुनिया के लिए एक बड़ा चैलेंज है। मैंने मन की बात कार्यक्रम में भी, इस पर विस्तार से चर्चा की थी। इसके लिए अपने खान-पान में 10 परसेंट ऑयल कम करने का चैलेंज भी शुरु किया था। मैं एक बार फिर देशवासियों से, दुनियाभर के लोगों को इस चैलेंज से जुड़ने का आह्वान करता हूं। अपने खाने में कैसे हम कम से कम 10 परसेंट ऑयल कंजम्शन कम करें, इसके लिए जागरूकता फैलानी है। ऑयल की खपत कम करना, unhealthy diet से बचना और योग करना, ये बेहतर फिटनेस की जड़ी बूटी है।

हम सब मिलकर योग को एक जन आंदोलन बनाएं। एक ऐसा आंदोलन, जो विश्व को शांति, स्वास्थ्य और समरसता की ओर ले जाए। जहां हर व्यक्ति दिन की शुरुआत योग से करे और जीवन में संतुलन पाए। जहां हर समाज योग से जुड़े और तनाव से मुक्त हो। जहां योग मानवता को एक सूत्र में पिरोने का माध्यम बने। और जहां 'Yoga for One Earth, One Health' एक वैश्विक संकल्प बन जाए। ▪

दुनिया ने योग को आत्मसात किया-विष्णुदत्त शर्मा

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर भाजपा द्वारा प्रदेशभर में मंडल और बूथ स्तर पर योग के कार्यक्रम आयोजित किए गए। विश्व के 180 से अधिक देशों ने योग कर स्वस्थ रहने का संदेश दिया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी जब पहली बार प्रधानमंत्री बने थे तब उन्होंने दुनिया के देशों को स्वस्थ रहने के लिए योग को अपनाने की सलाह दी थी और दुनिया के देशों ने हमारी भारतीय संस्कृति के प्रतीक योग को आत्मसात किया। आज पूरे विश्व में योग की यश-पताका फहरा रही है। यूं तो अनादिकाल से ही योग भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। किसी भी धार्मिक अथवा आध्यात्मिक साधना की सिद्धि से पूर्व योगाभ्यास द्वारा शरीर को साधने का कार्य योग द्वारा किया जाता है। महर्षि पतंजलि सहित अनेक योगशास्त्रियों ने योग के सरलीकरण का सम्मानीय कार्य किया, ताकि आम जनमानस के लिए योग सुलभ हो सके। वर्तमान कालखण्ड में भारत के गौरव की यश-पताका को निरन्तर विश्व में लहराने वाले यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस भारतीय ज्ञान-मनीषा को समूची दुनिया में लोकप्रिय एवं नवीन पहचान दिलाने का कार्य किया है। आज पूरा विश्व योग के साथ ही भारत के वैभव और निरन्तर प्रगति की मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहा है। मोदी जी के प्रयासों से ही विश्व योग दिवस मनाया जा रहा है। ▪

योग से सकारात्मक बदलाव जगत प्रकाश नड्डा

योग हमारी एक अत्यंत प्राचीन विद्या है, जो जीवन को उत्कर्ष की ओर ले जाने में सहायक सिद्ध हुई है। योग कोई पीटी या एक्सरसाइज नहीं है, न ही यह कोई शारीरिक प्रशिक्षण मात्र है। योग का अर्थ होता है -जोड़।

योग जीवन के विभिन्न पक्षों को जोड़ने वाली एक संपूर्ण पद्धति है। योग शरीर, मन, आत्मा और मस्तिष्क, इन सभी का आपस में जोड़ है।

- **यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान पर पूरी दुनिया द्वारा स्वीकार किये गए अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की यात्रा 11वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। इन दस वर्षों में पूरी दुनिया में योग के प्रति जागरुकता और सद्भावना का वातावरण बना है।**
- **योग शरीर, मन, आत्मा और मस्तिष्क, इन सभी का आपस में जोड़ है। यह केवल एक शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह मानसिक व्यायाम भी है। साथ ही, यह हमारे 'स्व' यानी आत्म-चेतना को पहचानने का माध्यम भी है।**
- **योग हमें एक स्वस्थ शरीर, संतुलित मस्तिष्क और सकारात्मक वातावरण में कार्य करने की क्षमता प्रदान करता है। केवल एक दिन योग करने से उद्देश्य की पूर्ति नहीं होगी। इसे हमें अपने दैनिक जीवन की दिनचर्या में शामिल करना होगा।**
- **योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन की दिशा देने वाली एक संपूर्ण विद्या है, जिसे अपनाकर हम अपने जीवन को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकते हैं।**
- **2017 की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में यह तय किया गया कि स्वास्थ्य तंत्र एकांगी नहीं होगा, बल्कि एलोपैथी के साथ आयुष पद्धतियों (आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध, होम्योपैथी) को भी जोड़ा जाएगा।**
- **दिल्ली एम्स में ''सेंटर फॉर इंटिग्रेटेड मेडिसिन'' स्थापित किया गया है, जहां हाइपरटेंशन, डाइबीटीज, किडनी फेल्यर और कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से जूझ रहे मरीजों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने पर कार्य हो रहा है।**
- **माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आयुष मंत्रालय ने जिस तरह योग को आगे बढ़ाया और इसे जन-जन से जोड़ने का कार्य किया है, वह अप्रतिम है। इसका लक्ष्य केवल स्वस्थ शरीर ही नहीं, बल्कि स्वस्थ मन और स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण है।**
- **अधिक से अधिक लोग योग से जुड़ें, स्वयं को पहचानें, और शारीरिक एवं मानसिक संतुलन के साथ अपने जीवन को उत्कर्ष की दिशा में आगे बढ़ाएं, यही योग का मूल उद्देश्य है।**

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की यात्रा के 10 वर्ष पूरे कर चुके हैं और हम 11वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इन दस वर्षों में हमने देखा है कि न केवल हमारे देश में, बल्कि पूरी दुनिया में योग के प्रति जागरुकता और सद्भावना का वातावरण बना है। 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' मनाने की कल्पना और इसकी पहल आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा वर्ष 2014 में की गई थी। उसी वर्ष दिसंबर 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की थी। इस प्रस्ताव को 170 से भी अधिक देशों का समर्थन प्राप्त हुआ था। तब से हर वर्ष 21 जून को पूरे विश्व में योग दिवस मनाया जाता है। अधिक से अधिक लोगों ने इसमें भाग लेकर अपना सहयोग दिया है। योग ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में, मानसिक

तनाव को कम करने में और व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य किया है। हर वर्ष योग दिवस के कार्यक्रम में भाग लेने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। योग दिवस पर देश-विदेश के लाखों स्थानों पर करोड़ों लोग योग में भाग ले रहे हैं। यह बहुत ही सकारात्मक वातावरण में, सकारात्मक ऊर्जा और योगदान के साथ मनाया जाने वाला आयोजन है।

योग हमारी एक अत्यंत प्राचीन विद्या है, जो जीवन को उत्कर्ष की ओर ले जाने में सहायक सिद्ध हुई है। योग कोई पीटी या एक्सरसाइज नहीं है, न ही यह कोई शारीरिक प्रशिक्षण मात्र है। योग का अर्थ होता है -जोड़। योग जीवन के विभिन्न पक्षों को जोड़ने वाली एक संपूर्ण पद्धति है। योग शरीर, मन, आत्मा और मस्तिष्क, इन सभी का आपस में जोड़ है। यह केवल एक शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह मानसिक व्यायाम भी है। साथ ही, यह हमारे 'स्व' यानी आत्म-चेतना को पहचानने का माध्यम भी बनता है। योग आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का मार्ग है। योग का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है - ध्यान। इसमें हम अपने 'स्व' को पहचानने का प्रयास करते हैं।

यह केवल इस स्थूल शरीर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उससे आगे जाकर अपने भीतर झांकने, आत्म-बोध प्राप्त करने की प्रक्रिया है। जब शरीर, मन और आत्मा एक लय में आ जाते हैं, तो शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक संतुलन भी स्वतः स्थापित होता है। योग हमें एक स्वस्थ शरीर, संतुलित मस्तिष्क और सकारात्मक वातावरण में कार्य करने की क्षमता प्रदान करता है। इसलिए अधिक से अधिक लोग योग से जुड़ें, स्वयं को पहचानें, और शारीरिक एवं मानसिक संतुलन के साथ अपने जीवन को उत्कर्ष की दिशा में आगे बढ़ाएं, यही योग का मूल उद्देश्य है। हम सभी सिर्फ योग दिवस पर योगाभ्यास तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि इसे अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएँगे। केवल एक दिन योग करने से उद्देश्य की पूर्ति नहीं होगी। इसे हमें अपने दैनिक जीवन की दिनचर्या में शामिल करना होगा।

हम सभी सोचें कि योग को अपने दैनिक जीवन में किस प्रकार शामिल करें। यह केवल व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन की दिशा देने वाली एक संपूर्ण विद्या है, जिसे अपनाकर हम अपने जीवन को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकते हैं। सभी योग को अपने जन्मदिवस जैसे विशेष अवसरों से जोड़ेंगे और इसे एक नियमित अभ्यास के रूप में अपने जीवन में अपनाएंगे।

एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति, जिसे हम आधुनिक चिकित्सा विज्ञान कहते हैं, उसमें भी हमने समग्र स्वास्थ्य दृष्टिकोण (Holistic Health Approach) को अपनाया है। वर्ष 2017 की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में हमने यह निर्णय लिया कि हमारा स्वास्थ्य तंत्र एकांगी न होकर समग्र होगा और विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों को आपस में जोड़ा जाएगा। इसी सोच के तहत, एलोपैथी के साथ-साथ आयुष (आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध, होम्योपैथी) को भी जोड़ा गया। यही कारण है कि अब अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में, जहाँ आधुनिक चिकित्सा उपलब्ध है, वहीं आयुष विभाग को भी शामिल किया गया है। दिल्ली के एम्स में अब ''सेंटर फॉर इंटिग्रेटेड मेडिसिन'' के नाम से एक विशेष केंद्र संचालित किया जा रहा है। इस केंद्र में उच्च हाइपरटेंशन, डाइबीटीज, किडनी फेल्यर, कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से जूझ रहे मरीजों के लिए, उनके इम्यून सिस्टम को सशक्त करने पर गहन कार्य किया जा रहा है। साथ ही, यह केंद्र यह भी प्रयास कर रहा है कि हृदय संबंधी समस्याओं को किस प्रकार संतुलित और सुरक्षित तरीके से नियंत्रित किया जा सके।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आयुष मंत्रालय ने जिस तरह योग को आगे बढ़ाया और इसे जन-जन से जोड़ने का कार्य किया है, वह अप्रतिम है। इसका लक्ष्य केवल स्वस्थ शरीर ही नहीं, बल्कि स्वस्थ मन और स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण है। इस दिशा में हम सभी मिलकर कार्य कर रहे हैं।

योग केवल 21 जून तक सीमित नहीं है। योग को हमें अपने जन्मदिवस और पूरे जीवन से जोड़ना है। दृढ़ विश्वास है कि सभी इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएँगे और योग दिवस को सफल बनाएँगे। ▪

हमारे लिए संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार के समान - डॉ. मोहन यादव

योग एक ऐसी दिव्य अवस्था है जब चेतना और परम चेतना का मिलन होता है। इस अवस्था को प्राप्त करने का अवसर हर जीव के पास है। योग सनातन हिन्दू धर्म और संस्कृति का सम्पूर्ण मानवता के लिए अमूल्य उपहार है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के अथक प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया। साथ ही इस बात का समर्थन किया कि योग जीवन के सभी पहलुओं के बीच संतुलन स्थापित करने के साथ स्वास्थ्य और कल्याण के लिए समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। उन्होंने पूरी दुनिया में समग्र स्वास्थ्य क्रांति के नये युग का सूत्रपात किया। आज पूरा वैश्विक समुदाय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का आभार व्यक्त कर रहा है। हम 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मना रहे हैं। यह एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग, विषय को समर्पित है। योग, धर्म, जाति और रंग की सीमाओं से परे है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस भारत का गौरव बढ़ाने वाला दिवस है साथ ही पूरे विश्व को परम चेतना के प्रति जागृत करने का क्रांतिकारी कदम भी है। महर्षि पतंजलि ने योग सूत्र में योग को मन के विचलन पर नियंत्रण की विधा बताया है। आज का दिन भारत के मूल दर्शन, जीवन शैली और हजारों वर्षों पुरानी हमारी योग परंपरा से पूरी दुनिया को परिचित कराने का गौरवशाली दिवस है। योग के माध्यम से निरोग के साथ-साथ हमारा मन शांत होता है, शांति से संतोष प्राप्त होता है और संतोष से हम अहिंसा की ओर बढ़ते हैं। अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए हम अपनी मूल अवधारणा वसुधैव कुटुम्बकम् की ओर अग्रसर होते हैं। महर्षि पतंजलि ने योग साधना के माध्यम से हमें अष्टांग सूत्र प्रदान किया। ▪

भाजपा ने दशकों तक बेदाग रहकर देश की सेवा करने वाले नेता देश को दिए

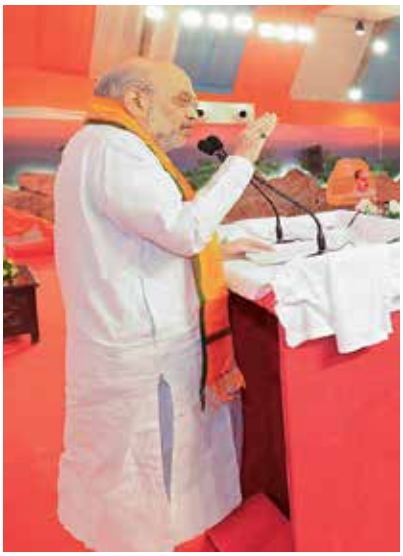

- केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने मध्य प्रदेश के नर्मदापुरम में भारतीय जनता पार्टी, मध्य प्रदेश सांसद-विधायक प्रशिक्षण वर्ग के उद्घाटन समारोह को संबोधित किया।
- श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी, अटल जी, आडवाणी जी से लेकर नरेंद्र मोदी जी तक, भाजपा ने दशकों तक बेदाग रहकर देश की सेवा करने वाले नेता देश को दिए हैं।
- सुरक्षित, विकसित और समृद्ध महान भारत की परिकल्पना भाजपा के मूल में समाहित है और मोदी सरकार इसे जमीन पर उतार रही है।
- मोदी सरकार के 11 वर्ष अंत्योदय के 11 वर्ष हैं - 26 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाया गया, 7 करोड़ लोगों को घर, बिजली, पानी, शौचालय, स्वास्थ्य बीमा और किसानों को 6000 की सहायता प्रदान की गई।

धारा 370 के खिलाफ आंदोलन से लेकर राम जन्मभूमि आंदोलन तक, भाजपा ने कभी चुनाव जीतना अपना उद्देश्य नहीं बनाया।

भारत की समृद्धि का मार्ग अंत्योदय है, समाज के सबसे गरीब व्यक्ति को मुख्यधारा में लाकर देश को समृद्ध बनाना ही हमारा लक्ष्य है।

- मोदी सरकार के 11 वर्ष राष्ट्रीय सुरक्षा के 11 वर्ष हैं, मोदी जी ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब यदि कोई भारत की भूमि या भारतवासियों पर हमला करेगा, तो उसे घर में घुसकर सजा दी जाएगी।
- 11 वर्षों के अंदर विचारधारा के आधार पर काम करने वाली पार्टी कैसे काम करती है, यह हमारी सरकार ने करके दिखाया है। जनसंघ से लेकर भाजपा तक न हमारी विचारधारा बदली न हमारे संकल्प बदले।
- आने वाले दशकों में देश में हर जगह सिर्फ और सिर्फ भाजपा ही होगी और आज भारत के नक्शे पर जहाँ कमल नहीं है, वहाँ भी कमल जरूर खिलेगा।
- जनता जो हमें सम्मान दे रही है, वह हमारा व्यक्तिगत सम्मान नहीं, बल्कि पार्टी का सम्मान है, यह भाव प्रत्येक कार्यकर्ता में होना चाहिए।
- जिन सभी मुद्दों के लिए हमारे कार्यकर्ता हमारी स्थापना से संघर्ष करते थे, वे आज मोदी सरकार में पूरे हो गए हैं।
- सामाजिक और राजनीतिक जीवन में वही लोग परिवर्तन ला सकते हैं, जो आजीवन विद्यार्थी बनकर सीखने की भावना बनाए रखते हैं।

सामाजिक और राजनीतिक जीवन में वही लोग परिवर्तन ला सकते हैं, जो आजीवन विद्यार्थी बनकर सीखने की भावना बनाए रखते हैं। भाजपा के नेता पार्टी के मूल

उद्देश्य, संस्कृति और संस्कारों को आगे बढ़ाएं। जनता जो हमें सम्मान दे रही है, वह हमारा व्यक्तिगत सम्मान नहीं, बल्कि पार्टी का सम्मान है, यह भाव प्रत्येक कार्यकर्ता में होना चाहिए।

निजी प्रवृत्तियों से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में सोचना प्रत्येक नेता का कर्तव्य है। भाजपा की उत्पत्ति, कार्य संस्कृति, सिद्धांत और उपलब्धियों को समझे बिना कोई भी भाजपा का प्रभावी कार्यकर्ता नहीं बन सकता। भाजपा की स्थापना उस समय हुई, जब कांग्रेस पर नेहरू जी का एकाधिकार हो गया था और कांग्रेस ने बिना चुनाव कराए ही शासन करना प्रारंभ कर दिया था। नेहरू जी की नीतियों के केंद्र में भारत की हजारों वर्षों पुरानी संस्कृति नहीं थी, बल्कि पश्चिमी प्रभाव ही था। भारतीय मूल्यों और तत्वों के अभाव को देखकर डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी ने सरकार से इस्तीफा देकर भारतीय जनसंघ की स्थापना की। नेहरू-लियाकत समझौते के विरोध में उन्होंने त्यागपत्र दिया। इस देश की भूमि, परंपरा, सामाजिक जीवन और संस्कृति के विचार को ध्यान में रखकर जनसंघ की स्थापना की गई थी। जनसंघ का उद्देश्य सत्ता प्राप्ति नहीं, बल्कि देश को सही मार्गदर्शन देना था।

11 सदस्यों से शुरू हुई जनसंघ आज भाजपा के माध्यम से 11 करोड़ सदस्यों की पार्टी बन चुकी है। 1950 से 2025 तक की इस यात्रा में हम उन महान उद्देश्यों की प्राप्ति को देख सकते हैं। भाजपा की आत्मा उसके कार्यकर्ताओं में बसती है और हम जीत के लिए नहीं, सिद्धांतों के लिए संघर्ष करते हैं। देश में विचारधारा के आधार पर पहली बार किसी राजनीतिक दल की स्थापना हुई और इसके मूल में अंत्योदय का सिद्धांत रखा गया। सुरक्षित, समृद्ध और विकसित राष्ट्र की परिकल्पना भाजपा के मूल में समाहित है। जिस भाजपा का कभी राजीव गांधी जी ने ''हम दो, हमारे दो'' कहकर मजाक उड़ाया था, आज उसी कांग्रेस को दस वर्षों तक विपक्ष का दर्जा भी नहीं मिल सका।

श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी से लेकर नरेंद्र मोदी जी तक, भाजपा में ऐसे कार्यकर्ता हुए हैं, जिन्होंने अंतिम सांस तक विचारधारा के लिए कार्य किया। देश को कांग्रेस से सदाचार और भाजपा से दुराचार की अपेक्षा नहीं है। एक देश में दो विधान, दो निशान और दो प्रधानमंत्री नहीं होंगे, इसके लिए श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी ने संघर्ष किया और धारा 370 के विरोध में शहादत दी।

धारा 370 के खिलाफ आंदोलन से लेकर राम जन्मभूमि आंदोलन तक, भाजपा ने कभी चुनाव जीतना अपना उद्देश्य नहीं बनाया। भारत की समृद्धि का मार्ग अंत्योदय है, समाज के सबसे गरीब व्यक्ति को मुख्यधारा में लाकर देश को समृद्ध बनाना ही हमारा लक्ष्य है।

बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, जिन्हें कभी बीमारू राज्य कहा जाता था, में जैसे-जैसे भाजपा की सरकार बनी, वे राज्य समृद्धि की ओर अग्रसर हुए। हमने दीनदयाल उपाध्याय जी के राष्ट्रवाद के सिद्धांत से कभी समझौता नहीं किया। विकेन्द्रित विकास की अवधारणा अंत्योदय से जुड़ी होती है, जो समृद्ध राज्य की आधारशिला और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पोषण करती है। श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी, अटल जी, आडवाणी जी से लेकर नरेंद्र मोदी जी तक, भाजपा ने दशकों तक बेदाग रहकर देश की सेवा करने वाले नेता दिए हैं। 11 वर्षों के अंदर विचारधारा के आधार पर काम करने वाली पार्टी कैसे काम करती है, यह हमारी सरकार ने करके दिखाया है। जनसंघ से लेकर भाजपा तक न हमारी विचारधारा बदली न हमारे संकल्प बदले।

मोदी जी की सरकार बनते ही भाजपा कार्यकर्ताओं की वर्षों की तपस्या का फल मिला। श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी और दीनदयाल उपाध्याय जी का सपना साकार हुआ। पहली बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनी। 11 वर्षों में 26 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला गया, 4 करोड़ से अधिक लोगों को घर, पानी, बिजली, गैस, शौचालय और 5 लाख का आयुष्मान भारत स्वास्थ्य कवर तथा किसानों को सालाना 6,000 सहायता दी गई। कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि धारा 370 हटाई जा सकती है, लेकिन मोदी जी ने यह कर दिखाया। नक्सलवाद समाप्ति के कगार पर है, पूर्वोत्तर में अशांति का दौर समाप्त हो गया। जम्मू-कश्मीर में अब कोई नौजवान बंदूक नहीं उठाता। हमने उरी और पुलवामा आतंकी हमले का सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक से करारा जवाब दिया और पहलगाम हमले के जवाब में पाकिस्तान में घुसकर आतंकियों के अड्डे ध्वस्त कर दिए। मोदी सरकार के 11 वर्ष राष्ट्र सुरक्षा के 11 वर्ष हैं। मोदी जी ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब यदि कोई भारत की भूमि या भारतवासियों पर हमला करेगा, तो उसे घर में घुसकर सजा दी जाएगी। आजादी के बाद देशहित में सबसे बड़ा निर्णय सिंधु जल समझौता समाप्त करने का रहा, जो नेहरू जी के समय एकतरफा था।

मोदी जी के नेतृत्व में भारत 11वें स्थान से छलांग लगाकर चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बनी है और जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने वाली है। एक समृद्ध राष्ट्र की परिकल्पना को साकार किया गया है। चाहे वह इंफ्रास्ट्रक्चर हो,GST, R&D, अटल टिंकरिंग लैब्स, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचना हो या सुपर कंप्यूटर, जो 60 वर्षों में नहीं हो पाया, वह 11 वर्षों में संभव हुआ। आने वाले दशकों में देश में हर जगह सिर्फ और सिर्फ भाजपा ही होगी और आज भारत के नक्शे पर जहाँ कमल नहीं है, वहाँ भी कमल जरूर खिलेगा।

आज 81 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज, 15 करोड़ घरों में नल से जल, 12 करोड़ से अधिक शौचालय, 68 लाख रेहड़ी-पटरी वालों को ऋण और 60 प्रतिशत मंत्रिमंडल में SC/ST/OBC प्रतिनिधित्व है। 55 करोड़ से अधिक जनधन खाते खोले गए हैं। हर गाँव तक बिजली पहुंच चुकी है। हर दिन एक यूनिकॉर्न स्टार्टअप बन रहा है। विश्व भर के कुल डिजिटल ट्रांजैक्शनों में 49 प्रतिशत अकेले भारत में होते हैं। 142 वन्दे भारत ट्रेन, 162 नए एयरपोर्ट बने हैं और नक्सली हिंसा लगभग समाप्त हो गई है।

एक विचारधारा आधारित पार्टी सत्ता में आए तो देश कैसे चलता है, यह हमने पिछले 11 वर्षों में सिद्ध कर दिया है। 550 वर्षों बाद राम जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर बना। काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, महाकाल लोक, नई संसद, कर्तव्य पथ, सुभाष बाबू की प्रतिमा और सेंगोल की संसद में स्थापना, सब भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान के प्रतीक हैं। मोदी जी को अनेक देशों का सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिला है। नई शिक्षा नीति में भाषाओं और कलाओं को सम्मान मिला है। मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई अब भारतीय भाषाओं में हो रही है, मध्य प्रदेश पहला राज्य है जहाँ इसे लागू किया गया। जिन सभी मुद्दों के लिए हमारे कार्यकर्ता हमारी स्थापना से संघर्ष करते थे, वे आज मोदी सरकार में पूरे हो गए हैं।

भाजपा कार्यकर्ताओं को संवाद की परंपरा बनाए रखनी चाहिए।

भाजपा की पाँच निष्ठाएँ हैं -
राष्ट्रवाद,
लोकतंत्र,
सामाजिक-आर्थिक विषयों पर गांधीवादी दृष्टिकोण,
पंथनिरपेक्षता,
और मूल्यों पर आधारित राजनीति।

इन्हीं सिद्धांतों पर अटल जी ने पहले अधिवेशन में प्रस्ताव पारित किया था। 2047 तक भारत विश्व का नंबर 1 राष्ट्र बनेगा और भारत माता को सम्पूर्ण तेज के साथ विश्व में स्थापित होते हम देख सकेंगे। संवाद, सिद्धांतों पर आचरण और अपने से नीचे के कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ाने का प्रयास ही भाजपा की पहचान होनी चाहिए। ▪

जम्मू-कश्मीर के विकास को नई गति

- प्रधानमंत्री ने दुनिया के सबसे ऊंचे रेलवे आर्च ब्रिज-चिनाब पुल और भारत के पहले केबल-स्टेड रेल पुल अंजी ब्रिज का उद्घाटन किया।
- विशाल अवसंरचना परियोजनाओं का उद्घाटन जम्मू और कश्मीर की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ है।
- हमने हमेशा गहरी श्रद्धा के साथ कश्मीर से कन्याकुमारी तक कहते हुए मां भारती का आव्हान किया है, यह हमारे रेलवे नेटवर्क में भी एक वास्तविकता बन गई है।
- उधमपुर-श्रीनगर-बारामुल्ला रेल लाइन परियोजना एक नए, सशक्त जम्मू और कश्मीर का प्रतीक है और भारत की बढ़ती ताकत का एक शानदार उद्घोष है।
- चिनाब और अंजी पुल जम्मू और कश्मीर के लिए समृद्धि के प्रवेश द्वार के रूप में काम करेंगे।
- जम्मू और कश्मीर भारत का मुकुट रत्न है।
- भारत आतंकवाद के आगे नहीं झुकेगा, जम्मू और कश्मीर के युवाओं ने अब आतंकवाद को करारा जवाब देने का मन बना लिया है।
- जब भी पाकिस्तान ऑपरेशन सिंदूर का नाम सुनेगा, उसे अपनी शर्मनाक हार की याद आ जाएगी।

मां भारती का वर्णन करते हुए हम श्रद्धाभाव से कहते आए हैं- कश्मीर से कन्याकुमारी। ये अब रेलवे नेटवर्क के लिए भी हकीकत बन गया है। उधमपुर, श्रीनगर, बारामुला, ये रेल लाइन प्रोजेक्ट, ये सिर्फ नाम नहीं है।

ये जम्मू कश्मीर के नए सामर्थ्य की पहचान है। भारत के नए सामर्थ्य का जयघोष है। चिनाब ब्रिज और अंजी ब्रिज का लोकार्पण हुआ। दो नई वंदे भारत ट्रेनें जम्मू कश्मीर को मिली हैं। जम्मू में नए मेडिकल कॉलेज का शिलान्यास हुआ है।

माता वैष्णो देवी के आशीर्वाद से वादी-ए-कश्मीर भारत के रेल नेटवर्क से जुड़ गई है। मां भारती का वर्णन करते हुए हम श्रद्धाभाव से कहते आए हैं- कश्मीर से कन्याकुमारी। ये अब रेलवे नेटवर्क के लिए भी हकीकत बन गया है। उधमपुर, श्रीनगर, बारामुला, ये रेल लाइन प्रोजेक्ट, ये सिर्फ नाम नहीं है। ये जम्मू कश्मीर के नए सामर्थ्य की पहचान है। भारत के नए सामर्थ्य का जयघोष है। चिनाब ब्रिज और अंजी ब्रिज का लोकार्पण हुआ। दो नई वंदे भारत ट्रेनें जम्मू कश्मीर को मिली हैं। जम्मू में नए मेडिकल कॉलेज का शिलान्यास हुआ है। 46 हजार करोड़ रुपये के प्रोजेक्टस जम्मू और कश्मीर के विकास को नई गति देंगे।

जम्मू कश्मीर की अनेक पीढ़ियां रेल कनेक्टिविटी का सपना देखते-देखते गुजर गईं। जम्मू कश्मीर के लाखों लोगों का सपना पूरा हुआ। और ये भी हकीकत है, जितने अच्छे काम हैं ना, वो मेरे लिए ही बाकी रहे हैं।

ये हमारी सरकार का सौभाग्य है कि इस प्रोजेक्ट ने हमारे कार्यकाल में गति पकड़ी और हमने इसे पूरा करके दिखाया। बीच में कोविड के कालखंड के कारण भी अनेक मुसीबतें आई, लेकिन हम डटे रहे।

रास्ते में आने-जाने की मुश्किलें, मौसम की परेशानी, लगातार पहाड़ों से गिरते पत्थर, ये प्रोजेक्ट पूरा करना मुश्किल था, चुनौतीपूर्ण था। लेकिन हमारी सरकार ने चुनौती को ही चुनौती देने का रास्ता चुना है। जम्मू कश्मीर में बन रहे अनेकों ऑल वेदर इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट इसका उदाहरण हैं। कुछ महीने पहले ही सोनमर्ग टनल शुरू हुई है। चिनाब और अंजी ब्रिज पर चलते हुए मैंने भारत के बुलंद इरादों को, हमारे इंजीनियर्स, हमारे श्रमिकों के हुनर और हौसलों को जीया है। चिनाब ब्रिज, दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। लोग फ्रांस में, पैरिस में एफिल टावर देखने के लिए जाते हैं। और ये ब्रिज एफिल टावर से भी बहुत ऊंचा है। अब लोग चिनाब ब्रिज के जरिए कश्मीर देखने तो जाएंगे ही, ये ब्रिज भी अपने आप में एक आकर्षक टूरिस्ट डेस्टिनेशन बनेगा। सब लोग

सेल्फी प्वाइंट पर जाकर के सेल्फी निकालेंगे। हमारा अंजी ब्रिज भी इंजीनियरिंग का बेहतरीन नमूना है। ये भारत का पहला केबल सपोर्टेड रेलवे ब्रिज है। ये दोनों ब्रिज सिर्फ ईंट, सीमेंट, स्टील और लोहे के ढांचे नहीं हैं, ये पीर पंजाल की दुर्गम पहाड़ियों पर खड़ी, भारत की शक्ति का जीवंत प्रतीक है। ये भारत के उज्ज्वल भविष्य की सिंह गर्जना है। ये दिखाता है, विकसित भारत का सपना जितना बड़ा है, उतना ही बुलंद हमारा हौसला है, हमारा सामर्थ्य है। और सबसे बड़ी बात नेक इरादा है, अपार पुरुषार्थ है।

चिनाब ब्रिज हो या फिर अंजी ब्रिज, ये जम्मू की और कश्मीर की, दोनों क्षेत्रों की समृद्धि का जरिया बनेंगे। इससे टूरिज्म तो बढ़ेगा ही, इकॉनॉमी के दूसरे सेक्टर्स को भी लाभ होगा। जम्मू और कश्मीर की रेल कनेक्टिविटी, दोनों क्षेत्रों के कारोबारियों के लिए नए अवसर बनाएगी। इससे यहां की इंडस्ट्री को गति मिलेगी, अब कश्मीर के सेब कम लागत में देश के बड़े बाजारों तक पहुंच पाएंगे और समय पर पहुंच पाएंगे। सूखे मेवे हों या पश्मीना शॉल, यहां का हस्तशिल्प अब आसानी से देश के किसी भी हिस्से तक पहुंच पाएगा। इससे जम्मू कश्मीर के लोगों को देश के दूसरे हिस्सों में आना-जाना भी बहुत आसान होगा।

यहां संगलदान के एक स्टूडेंट ने अखबार में कमेंट में कहा कि उसके गांव के उन्हीं लोगों ने अब तक ट्रेन देखी थी, जो गांव से बाहर गए थे। गांव के ज्यादातर लोगों ने ट्रेन का सिर्फ वीडियो ही देखा था। उन्हें अब तक यकीन ही नहीं हो रहा, कि असली ट्रेन उनकी आंखों के सामने से गुजरेगी। एक बिटिया ने कहा- अब मौसम नहीं तय करेगा कि रास्ते खुलेंगे या बंद रहेंगे, अब ये नई ट्रेन सेवा, हर मौसम में लोगों की मदद करती रहेगी।

जम्मू-कश्मीर, मां भारती का मुकुट है। ये मुकुट एक से बढ़कर एक खूबसूरत रत्नों से जड़ा हुआ है। ये अलग-अलग रत्न जम्मू-कश्मीर का सामर्थ्य हैं। यहां की पुरातन संस्कृति, यहां के संस्कार, यहां की आध्यात्मिक चेतना, प्रकृति का सौंदर्य, यहां की जड़ी-बूटियों का संसार, फलों और फूलों का विस्तार, यहां के युवाओं में जो टैलेंट है, वो मुकुट मणि की तरह चमकता है।

मैं पूरे समर्पण भाव के साथ जम्मू-कश्मीर के विकास में जुटा हूं।

जम्मू-कश्मीर, भारत की शिक्षा और संस्कृति का गौरव रहा है। आज भारत, दुनिया के बड़े नॉलेज हब्स में से एक, हमारा जम्मू कश्मीर बन रहा है, तो इसमें जम्मू कश्मीर की भागीदारी भी भविष्य में भी बढ़ने वाली है। यहां IIT, IIM, AIIMS और NIT जैसे संस्थान हैं। जम्मू और श्रीनगर में सेंट्रल यूनिवर्सिटीज हैं। जम्मू और कश्मीर में रिसर्च इकोसिस्टम का भी विस्तार हो रहा है।

यहां पढ़ाई के साथ-साथ दवाई के लिए भी अभूतपूर्व काम हो रहे हैं। बीते कुछ सालों में ही, दो स्टेट लेवल के कैंसर संस्थान बने हैं। पिछले पाँच वर्षों में यहां सात नए मेडिकल कॉलेज शुरू किए गए हैं। जब मेडिकल कॉलेज खुलता है तो उससे मरीजों के साथ ही उस क्षेत्र के युवाओं को भी सबसे ज्यादा फायदा मिलता है। जम्मू-कश्मीर में अब MBBS सीटों की संख्या 500 से बढ़कर 1300 तक पहुंच गई है। अब रियासी जिले को भी नया मेडिकल कॉलेज मिलने जा रहा है। श्री माता वैष्णो देवी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एक्सीलेंस, ये आधुनिक अस्पताल तो है, ये दान-पुण्य करने की हमारी जो संस्कृति है, उसका भी उदाहरण है। इस मेडिकल कॉलेज को बनाने में जो राशि लगी है, उसके लिए भारत के कोने-कोने से, माता वैष्णों देवी के चरणों में आने वाले लोगों ने दान दिया हुआ है। इस अस्पताल की क्षमता भी 300 बेड से बढ़ाकर 500 बेड की जा रही है। कटरा में माता वैष्णो देवी के दर्शन करने आने वाले लोगों को भी इससे बहुत सहूलियत रहने वाली है।

केंद्र में भाजपा-एनडीए की सरकार को अब 11 साल हो रहे हैं। ये 11 साल, गरीब कल्याण के नाम समर्पित रहे हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना से 4 करोड़ गरीबों का पक्के घर का सपना पूरा हुआ है। उज्ज्वला योजना से 10 करोड़ रसोइयों, उसमें धुएं का अंत हुआ है, हमारी बहनों को, बेटियों को, उनकी सेहत की रक्षा हुई है। आयुष्मान भारत योजना से 50 करोड़ गरीबों को 5 लाख रुपए तक का मुफ्त इलाज मिला है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना से हर थाली में भरपेट अनाज सुनिश्चित हुआ है। जनधन योजना से पहली बार 50 करोड़ से ज्यादा गरीबों के लिए बैंक का दरवाजा खुला है। सौभाग्य योजना से अंधेरे में जी रहे ढाई करोड़ परिवारों में बिजली की रोशनी पहुंची है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत बने 12 करोड़ शौचालयों ने खुले में शौच की मजबूरी से मुक्ति दिलाई है। जल जीवन मिशन से 12 करोड़ नए घरों में नल से जल पहुंचने लगा है, महिलाओं का जीवन आसान हुआ है। पीएम किसान सम्मान निधि से 10 करोड़ छोटे किसानों को सीधी आर्थिक सहायता मिली है।

सरकार के ऐसे अनेक प्रयासों से पिछले 11 साल में 25 करोड़ से ज्यादा गरीबों ने, गरीबी को हमारे ही गरीब भाई-बहनों ने, गरीबी के खिलाफ जंग लड़ी और 25 करोड़ गरीब, गरीबी को परास्त करकर के, विजयी होकर के, गरीबी से बाहर निकले हैं। अब वो नए मध्यम वर्ग का हिस्सा बने हैं। जो लोग अपने आप को समाज व्यवस्था के एक्सपर्ट मानते हैं, बड़े एक्सपर्ट मानते हैं, जो लोग अगले पिछले की राजनीति में डूबे रहते हैं, जो लोग दलितों के नाम पर राजनीतिक रोटियां सेकते रहे हैं, जरा जिन योजनाओं का मैंने सिर्फ उल्लेख किया है, उसकी तरफ नजर कर लीजिए। कौन लोग हैं जिनको ये सुविधाएं मिली हैं, वो कौन लोग हैं जो आजादी के 7-7 दशक तक इन प्राथमिक सुविधाओं से वंचित रहे थे। ये मेरे दलित भाई-बहन हैं, ये मेरे आदिवासी भाई-बहन हैं, ये मेरे पिछड़े भाई-बहन हैं, ये पहाड़ों पर गुजारा करने वाले, ये जंगलों में बसने वाले, झुग्गी-झोपड़ी में जिंदगी पूरी करने वाले, ये वो परिवार हैं, जिनके लिए मोदी ने अपने 11 साल खपा दिए हैं। केंद्र सरकार का प्रयास है कि गरीबों को, नए मध्यम वर्ग को ज्यादा से ज्यादा ताकत दे। वन रैंक वन पेंशन हो, 12 लाख रुपए तक की सैलरी को टैक्स फ्री करना हो, घर खरीदने के लिए आर्थिक सहायता देना हो, सस्ती हवाई यात्रा के लिए मदद देनी हो, हर तरह से सरकार, गरीब और मध्यम वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है।

गरीबों को गरीबी से मुक्ति पाने के लिए उनकी मदद करना, लेकिन ईमानदारी से जीने वाले, देश के लिए समय-समय पर टैक्स देने वाले, मध्यम वर्ग की ताकत बढ़ाना, इसके लिए भी आजादी में पहली बार इतना काम हुआ है, जो हमने करके दिखाया है।

हम अपने यहां नौजवानों के लिए लगातार रोजगार के नए अवसर बढ़ा रहे हैं। और इसका एक अहम जरिया है-टूरिज्म। टूरिज्म से रोजगार मिलता है, टूरिज्म लोगों को जोड़ता है। लेकिन दुर्भाग्य से हमारे पड़ोस का देश, मानवता का विरोधी, मेलजोल का विरोधी, टूरिज्म का विरोधी, इतना ही नहीं वो ऐसा देश है, गरीब की रोजी-रोटी का भी विरोधी है। 22 अप्रैल को पहलगाम में जो कुछ हुआ, वो इसी का उदाहरण है। पाकिस्तान ने पहलगाम में इन्सानियत और कश्मीरियत, दोनों पर वार किया। उसका इरादा भारत में दंगे कराने का था। उसका इरादा कश्मीर के मेहनतकश लोगों की कमाई को रोकना था। इसलिए पाकिस्तान ने टूरिस्ट्स पर हमला किया। वो टूरिज्म, जो बीते 4-5 साल में लगातार बढ़ रहा था, हर साल यहां रिकॉर्ड संख्या में टूरिस्ट आ रहे थे। जिस टूरिज्म से, जम्मू कश्मीर के गरीबों के घर चलते हैं, उसको पाकिस्तान ने निशाना बनाया। कोई घोड़े चलाने वाला, कोई पोर्टर, कोई गाइड, कोई गेस्ट हाउस वाला, कोई दुकान-ढाबा चलाने वाला, पाकिस्तान

की साजिश इन सबको तबाह करने की थी। आतंकियों को चुनौती देने वाला नौजवान आदिल, वो भी तो वहां मेहनत-मजदूरी करने गया था, लेकिन अपने परिवार की देख रेख कर सके, इसलिए मेहनत कर रहा था। आतंकियों ने उस आदिल को भी मार दिया।

पाकिस्तान की इस साजिश के खिलाफ जिस प्रकार जम्मू-कश्मीर के लोग उठ खड़े हुए हैं, जम्मू कश्मीर की आवाम ने इस बार जो ताकत दिखाई है, ये सिर्फ पाकिस्तान नहीं, दुनियाभर की आतंकवादी मानसिकता को, जम्मू कश्मीर के लोगों ने कड़ा संदेश दिया है। जम्मू-कश्मीर का नौजवान अब आतंकवाद को मुंहतोड़ जवाब देने का मन बना चुका है। ये वो आतंकवाद है, जिसने घाटी में स्कूल जलाए, और सिर्फ स्कूल यानी इमारत नहीं जलाई थी, दो-दो पीढ़ी का भविष्य जला दिया था। अस्पताल तबाह किए। जिसने कई पीढ़ियों को बर्बाद किया। यहां जनता अपनी पसंद के नुमाइंदे चुन सके, यहां चुनाव हो सकें, ये भी आतंकवाद के चलते बड़ी चुनौती बन गया था।

बरसों तक आतंक सहने के बाद जैसे जम्मू-कश्मीर ने इतनी बर्बादी देखी थी कि जम्मू कश्मीर के लोगों ने सपने देखना ही छोड़ दिया था, आतंकवाद को ही अपना भाग्य मान लिया था। जम्मू-कश्मीर को इस स्थिति से निकालना जरूरी था, और हमने ये करके दिखाया है। आज जम्मू-कश्मीर का नौजवान नए सपने भी देख रहा है और उन्हें पूरे भी कर रहा है। अब कश्मीर का नौजवान बाजारों को, शॉपिंग मॉल्स को, सिनेमा हॉल को गुलजार देखकर के खुश है। यहां के लोग जम्मू कश्मीर को फिर से फिल्मों की शूटिंग का प्रमुख केंद्र बनते देखना चाहते हैं, इस क्षेत्र को स्पोर्ट्स का हब बनते देखना चाहते हैं। यही भाव हमने अभी माता खीर भवानी के मेले में भी देखा है। जिस तरह हजारों लोग माता के दर पर पहुंचे, वो नए जम्मू कश्मीर की तस्वीर दिखाता है। अब अमरनाथ यात्रा भी है। ईद की उमंग भी। विकास का जो वातावरण जम्मू-कश्मीर में बना था, वो पहलगाम के हमले से डिगने वाला नहीं है। जम्मू-कश्मीर के आप सभी लोगों को, और आप सबसे नरेंद्र मोदी का वायदा है, मैं यहां विकास को रुकने नहीं दूंगा, यहां के नौजवानों को सपने पूरा करने से कोई भी बाधा अगर रूकावट बनती है, तो उस बाधा को पहले मोदी का सामना करना पड़ेगा।

6 मई की रात, पाकिस्तान के आतंकियों पर कयामत बरसी थी। अब पाकिस्तान कभी भी ऑपरेशन सिंदूर का नाम सुनेगा, तो उसे अपनी शर्मनाक शिकस्त याद आएगी। पाकिस्तानी फौज और आतंकियों ने कभी सोचा भी नहीं था कि भारत, पाकिस्तान में सैंकड़ों किलोमीटर अंदर जाकर के आतंकवादियों पर इस तरह वार करेगा। बरसों की मेहनत से उन्होंने आतंक की जो इमारतें बनाईं थीं, वो कुछ मिनटों में ही खंडहर में बदल गईं हैं। और ये देख पाकिस्तान बुरी तरह बौखला गया था, और उसने अपना गुस्सा जम्मू के, पूंछ के, दूसरे जिलों के लोगों पर भी निकाला। पूरी दुनिया ने देखा कि पाकिस्तान ने कैसे यहां घर उजाड़े, बच्चों पर गोले फेंके, स्कूल-अस्पताल तबाह किए, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों पर शेलिंग की। आपने जिस तरह पाकिस्तान के हमलों का मुकाबला किया, वो हर देशवासी ने देखा है।

जिन लोगों की क्रॉस बॉर्डर फायरिंग में मृत्यु हुई है, उनके परिवार के सदस्य को कुछ दिन पहले ही नियुक्ति पत्र सौंपे गए हैं। शेलिंग से प्रभावित 2 हजार से ज्यादा परिवारों की तकलीफ भी हमारी अपनी तकलीफ है। इन परिवारों को शेलिंग के बाद अपने घर की मरम्मत के लिए आर्थिक मदद दी गई थी। अब केंद्र सरकार ने ये तय किया है, कि इस मदद को और बढ़ाया जाए।

जिन घरों में बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है, उन्हें अब 2 लाख रुपए और जो घर आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुए हैं, उन्हें 1 लाख रुपए की सहायता अलग से दी जाएगी, अतिरिक्त दी जाएगी। यानी अब उन्हें पहली बार की मदद के बाद ये एक्सट्रा धनराशि मिलेगी।

सरकार बॉर्डर किनारे बसे लोगों को देश का प्रथम प्रहरी मानती है। बीते दशक में सरकार ने बॉर्डर के जिलों में विकास और सुरक्षा के लिए अभूतपूर्व काम किया है, इस दौरान करीब दस हजार नए बंकर्स बनाए गए हैं। इन बंकरों ने ऑपरेशन सिंदूर के बाद बने हालात में लोगों का जीवन बचाने में बड़ी मदद की है। जम्मू और कश्मीर डिविजन के लिए दो बॉर्डर बटालियन बनाई गई है। दो वूमन बटालियन बनाने का भी काम पूरा कर लिया गया है।

इंटरनेशनल बॉर्डर के पास जो बहुत दुर्गम इलाके हैं, वहां भी सैकड़ों करोड़ रुपए खर्च करके नया इंफ्रा बनाया जा रहा है। कठुआ से जम्मू हाईवे को सिक्स लेन का एक्सप्रेसवे बनाया जा रहा है, अखनूर से पूंछ हाईवे का भी चौड़ीकरण किया जा रहा है। वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के तहत भी बॉर्डर के गांवों में विकास के काम को और गति दी जा रही है। जम्मू-कश्मीर के 400 ऐसे गांव जहां ऑल वेदर कनेक्टिविटी नहीं थी, उन्हें 1800 किलोमीटर की नई सड़कें बिछाकर जोड़ा जा रहा है। इस पर भी सरकार 4200 करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च करने जा रही है।

ऑपरेशन सिंदूर ने आत्मनिर्भर भारत की ताकत दिखाई है। आज दुनिया भारत के डिफेंस इकोसिस्टम की चर्चा कर रही है। और इसके पीछे एक ही कारण है, हमारी सेनाओं का 'Make in India' पर भरोसा। सेनाओं ने जो कर दिखाया, अब वही हर भारतवासी को दोहराना है। इस साल के बजट में हमने मिशन मैन्युफैक्चरिंग की घोषणा की है। इस मिशन के तहत सरकार मैन्युफैक्चरिंग को नई उड़ान देने का काम कर रही है। जम्मू-कश्मीर के युवाओं इस मिशन का हिस्सा बनिए। देश को आपकी आधुनिक सोच चाहिए, देश को आपके इनोवेशन की जरूरत है। आपके आइडिया, आपकी स्किल, भारत की सुरक्षा को, भारत की अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाई देंगे। पिछले दस वर्षों में भारत एक बड़ा डिफेंस एक्सपोर्टर बना है। अब हमारा लक्ष्य है, दुनिया के टॉप डिफेंस एक्सपोर्टर्स में भारत का नाम भी शामिल हो। इस लक्ष्य की ओर हम जितना तेजी से बढ़ेंगे, उतनी ही तेजी से भारत में रोजगार के लाखों नए अवसर पैदा होंगे।

हमें एक और संकल्प लेना है, जो सामान भारत में बना हो, जिसमें हमारे देशवासियों का पसीना लगा हो, हम सबसे पहले उसे ही खरीदें और यही राष्ट्रभक्ति है, यही राष्ट्र की सेवा है। सीमा पर हमें हमारी सेनाओं का मान बढ़ाना है और बाजार में हमें मेड इन इंडिया का गौरव बढ़ाना है।

एक सुनहरा और उज्ज्वल भविष्य इंतजार कर रहा है। सरकार विकास के कार्यों में जुटी हैं। शांति और खुशहाली के जिस रास्ते पर हम आगे बढ़ रहे हैं, हमें उसे लगातार मजबूत करना है। मां वैष्णो के आशीर्वाद से विकसित भारत, विकसित जम्मू-कश्मीर का ये संकल्प सिद्धि तक पहुंचे। ▪

- 21 जून को देश और दुनिया भर में करोड़ों लोगों ने 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' में हिस्सा लिया।
- विशाखापत्तनम के समुद्र तट पर तीन लाख लोगों ने एक साथ योग किया और दो हजार से अधिक आदिवासी छात्रों ने 108 मिनट तक 108 सूर्य नमस्कार किए।
- अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत की 64 प्रतिशत से अधिक आबादी अब किसी न किसी सामाजिक सुरक्षा योजना का लाभ उठा रही है।
- आपातकाल लगाने वालों ने न केवल हमारे संविधान की हत्या की, बल्कि उनकी मंशा न्यायपालिका को भी अपना गुलाम बनाए रखने की थी।
- हमें उन सभी लोगों को हमेशा याद रखना चाहिए जिन्होंने आपातकाल का डटकर मुकाबला किया। यह हमें अपने संविधान को मजबूत और स्थायी बनाए रखने के लिए निरंतर सतर्क रहने की प्रेरणा देता है।
- बोडोलैंड आज देश में एक नए चेहरे, नई पहचान के साथ खड़ा है। बोडोलैंड अब देश के खेल मानचित्र पर अपनी चमक बिखेर रहा है।
- मेघालय की महिलाएं अब स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से Eri Silk हेरिटेज को बड़े पैमाने पर आगे बढ़ा रही हैं।

संविधान के रक्षकों को नमन

देश पर Emergency थोपे जाने के 50 वर्ष कुछ दिन पहले ही पूरे हुए है। हम देशवासियों ने 'संविधान हत्या दिवस' मनाया है।

हमें हमेशा उन सभी लोगों को याद करना चाहिए, जिन्होंने Emergency का डटकर मुकाबला किया था। इससे हमें अपने संविधान को सशक्त बनाए रखने के लिए निरंतर सजग रहने की प्रेरणा मिलती है।

21 जून को देश-दुनिया के करोड़ों लोगों ने 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' में हिस्सा लिया। आपको याद है,10 साल पहले इसका प्रारंभ हुआ। अब 10 साल में ये सिलसिला हर साल पहले से भी ज्यादा भव्य बनता जा रहा है। ये इस बात का भी संकेत है कि ज्यादा से ज्यादा लोग अपने दैनिक जीवन में योग को अपना रहे है। हमने इस बार योग दिवस की कितनी ही आकर्षक तस्वीरें देखी हैं। विशाखापत्तनम के समुद्र तट पर तीन लाख लोगों ने एक साथ योग किया। विशाखापत्तनम से ही एक और अद्भुत दृश्य सामने आया, दो हजार से ज्यादा आदिवासी छात्रों ने 108 मिनट तक 108 सूर्य नमस्कार किए। सोचिए, कितना अनुशासन, कितना समर्पण रहा होगा। हमारे नौसेना के जहाजों पर भी योग की भव्य झलक दिखी। तेलंगाना में तीन हजार दिव्यांग साथियों ने एक साथ योग शिविर में भाग लिया। उन्होंने दिखाया कि योग किस तरह सशक्तिकरण का माध्यम भी है। दिल्ली के लोगों ने योग को स्वच्छ यमुना के संकल्प से जोड़ा और यमुना तट पर जाकर योग किया। जम्मू-कश्मीर में चिनाब ब्रिज, जो दुनिया का सबसे ऊँचा रेलवे ब्रिज है, वहाँ भी लोगों ने योग किया। हिमालय की बर्फीली चोटियाँ और ITBP के जवान, वहाँ भी योग दिखा, साहस और साधना साथ-साथ चले। गुजरात के लोगों ने भी एक नया इतिहास रचा। वडनगर में 2121 (इक्कीस सौ इक्कीस) लोगों ने एक साथ भुजंगासन किया और नया रिकॉर्ड बना दिया। न्यूयॉर्क, लंदन, टोक्यो, पेरिस, दुनिया के हर बड़े शहर से योग की तस्वीरें आई और हर तस्वीर में एक बात खास रही, शांति, स्थिरता और संतुलन। इस बार की theme भी बहुत विशेष थी, 'Yoga for One Earth, One Health', यानि, एक पृथ्वी - एक स्वास्थ्य। ये सिर्फ एक नारा नहीं है, ये एक दिशा है जो हमें वसुधैव कुटुंबकम् का अहसास कराती है। इस बार के योग दिवस की भव्यता ज्यादा से ज्यादा लोगों को योग को अपनाने के लिए जरूर प्रेरित करेगी।

जब कोई तीर्थयात्रा पर निकलता है, तो एक ही भाव सबसे पहले मन में आता है, चलो, बुलावा आया है। यही भाव हमारे धार्मिक यात्राओं की आत्मा है। ये यात्राएं शरीर के अनुशासन का, मन की शुद्धि का, आपसी प्रेम और भाईचारे का, प्रभु से जुड़ने का माध्यम

है। इनके अलावा, इन यात्राओं का एक और बड़ा पक्ष होता है। ये धार्मिक यात्राएं सेवा के अवसरों का एक महाअनुष्ठान भी होती है। जब कोई भी यात्रा होती है तो जितने लोग यात्रा पर जाते हैं उससे ज्यादा लोग तीर्थयात्रियों की सेवा के काम में जुटते हैं। जगह-जगह भंडारे और लंगर लगते हैं। लोग सड़कों के किनारे प्याऊ लगवाते हैं। सेवा-भाव से ही Medical Camp और सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है। कितने ही लोग अपने खर्च से तीर्थयात्रियों के लिए धर्मशालाओं की, और, रहने की व्यवस्था करते हैं।

लंबे समय के बाद कैलाश मानसरोवर यात्रा का फिर से शुभारंभ हुआ है। कैलाश मानसरोवर यानी भगवान शिव का धाम। हिन्दू, बौद्ध, जैन, हर परंपरा में कैलाश को श्रद्धा और भक्ति का केंद्र माना गया है।

3 जुलाई से पवित्र अमरनाथ यात्रा शुरू होने जा रही है और सावन का पवित्र महीना भी कुछ ही दिन दूर है। अभी कुछ दिन पहले हमने भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा भी देखी है। ओडिशा हो, गुजरात हो, या देश का कोई और कोना, लाखों श्रद्धालु इस यात्रा में शामिल होते हैं। उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम, ये यात्राएं 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के भाव का प्रतिबिंब है। जब हम श्रद्धा भाव से, पूरे समर्पण से और पूरे अनुशासन से अपनी धार्मिक यात्रा सम्पन्न करते हैं तो उसका फल भी मिलता है। मैं यात्राओं पर जा रहे सभी सौभाग्यशाली श्रद्धालुओं को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। जो लोग सेवा भावना से इन यात्राओं को सफल और सुरक्षित बनाने में जुटे हैं, उन्हें भी साधुवाद देता हूँ।

अब मैं आपको देश की दो ऐसी उपलब्धियों के बारे में बताना चाहता हूँ, जो आपको गर्व से भर देंगी। इन उपलब्धियों की चर्चा वैश्विक संस्थाएं कर रही हैं। WHO यानी 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' और ILO यानी International Labour Organization ने देश की इन उपलब्धियों की भरपूर सराहना की है। पहली उपलब्धि तो हमारे स्वास्थ्य से जुड़ी है। आप में से बहुत से लोगों ने आँखों की एक बीमारी के बारे में सुना होगा -Trachoma, ये बीमारी Bacteria से फैलती है। एक समय था जब ये बीमारी देश के कई हिस्सों में आम थी। ध्यान नहीं दिया जाए, तो इस बीमारी से धीरे-धीरे आँखों की रोशनी तक चली जाती थी। हमने संकल्प लिया कि Trachoma को जड़ से खत्म करेंगे। और मुझे आपको ये बताते हुए बहुत खुशी है कि - 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' यानी WHO ने भारत को Trachoma free घोषित कर दिया है। अब भारत Trachoma मुक्त देश बन चुका है। ये उन लाखों लोगों की मेहनत का फल है, जिन्होंने बिना थके, बिना रुके, इस बीमारी से लड़ाई लड़ी। ये सफलता हमारे health workers की है। 'स्वच्छ भारत' अभियान से भी इसे मिटाने में बड़ी मदद मिली। 'जल जीवन Mission' का भी इस सफलता में बड़ा योगदान रहा। आज जब घर-घर नल से साफ पानी पहुँच रहा है, तो ऐसी बीमारियों का खतरा कम हो गया है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' WHO ने भी इस बात की सराहना की है कि भारत ने बीमारी से निपटने के साथ-साथ उसके मूल कारणों को भी दूर किया है।

आज भारत में ज्यादातर आबादी किसी-ना-किसी social Protection benefit का फायदा उठा रही है और अभी हाल ही में International Labour Organization – ILO की बड़ी अहम Report आई है। इस Report में कहा गया है कि भारत की 64 प्रतिशत (sixty four percent) से ज्यादा आबादी को अब कोई-ना-कोई Social Protection Benefit जरूर मिल रहा है। सामाजिक सुरक्षा - ये दुनिया की सबसे बड़ी coverage में से एक है। आज देश के लगभग 95 करोड़ (ninety-five crore) लोग किसी-न-किसी social security योजना का लाभ पा रहे हैं, जबकि, 2015 तक 25 करोड़ से भी कम लोगों तक सरकारी योजनाएं पहुँच पाती थी।

भारत में स्वास्थ्य से लेकर सामाजिक सुरक्षा तक, हर क्षेत्र में देश saturation की भावना से आगे बढ़ रहा है। ये सामाजिक न्याय की भी उत्तम तस्वीर है। इन सफलताओं ने एक विश्वास जगाया है, कि आने वाला समय और बेहतर होगा, हर कदम पर भारत और भी सशक्त होगा।

जन-भागीदारी की शक्ति से, बड़े-बड़े संकटों का मुकाबला किया जा सकता है। मैं आपको एक audio सुनाता हूँ, इस audio में आपको उस संकट की भयावहता का अंदाजा लगेगा। वो संकट कितना बड़ा था, पहले वो सुनिए, समझिए।

Audio. मोरारजी भाई देसाई

आखिर ये जो जुल्म हुआ दो साल तक, जुल्म तो 5-7 साल से शुरू हो गया था। मगर वो शिखर पर पहुँच गया है दो साल में, जब emergency लोगों पर थोप दी और अमानुषीय बर्ताव लोगों के साथ किया गया। लोगों के स्वतंत्रता के हक छीन लिए गए, अखबारों को कोई स्वतंत्रता न रही। न्यायालय बिल्कुल निर्बल बना दिए गए। और जिस ढंग से एक लाख से ज्यादा लोगों को jail में बंद कर दिये, और फिर अपने मनमानी राज की ओर से होती रही। उसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में भी मिलना मुश्किल है।

ये आवाज देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमान मोरारजी भाई देसाई की है। उन्होंने संक्षेप में, लेकिन बहुत ही स्पष्ट तरीके से Emergency के बारे में बताया। आप कल्पना कर सकते हैं, वो दौर कैसा था! Emergency लगाने वालों ने ना सिर्फ हमारे संविधान की हत्या की बल्कि उनका इरादा न्यायपालिका को भी अपना गुलाम बनाए रखने का था। इस दौरान लोगों को बड़े पैमाने पर प्रताड़ित किया गया था। इसके ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिन्हें कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। George Fernandez साहब को जंजीरों में बांधा गया था। अनेक लोगों को कठोर यातनाएं दी गई। 'मीसा (MISA)' के तहत किसी को भी ऐसे ही गिरफ्तार कर लिया जाता था। Students को भी परेशान किया गया। अभिव्यक्ति की आजादी का भी गला घोंट दिया गया।

उस दौर में जो हजारों लोग गिरफ्तार किए गए, उन पर ऐसे ही अमानवीय अत्याचार हुए। लेकिन ये भारत की जनता का सामर्थ्य है, वो झुकी नहीं, टूटी नहीं और लोकतंत्र के साथ कोई समझौता उसने स्वीकार नहीं किया। आखिरकार, जनता-जनार्दन की जीत हुई- आपातकाल हटा लिया गया और आपातकाल थोपने वाले हार गए। बाबू जगजीवन राम जी ने इस बारे में बहुत ही सशक्त तरीके से अपनी बातें रखी थी।

पिछला चुनाव, चुनाव नहीं था। भारत की जनता का एक महान अभियान था।

उस समय की परिस्थितियों को बदल देने का तानाशाही की धारा को मोड़ देने का और भारत में प्रजातंत्र के बुनियाद को मजबूत कर देने का अटल जी ने भी तब अपने ही अंदाज में जो कुछ कहा था, वो भी हमें जरूर सुनना चाहिए -

देश में जो कुछ हुआ, उसे केवल चुनाव नहीं कह सकते। एक शांतिपूर्ण क्रांति हुई है। लोकशक्ति की लहर ने लोकतंत्र की हत्या करने वालों को इतिहास के कूड़ेदान में फेंक दिया है।

देश पर Emergency थोपे जाने के 50 वर्ष कुछ दिन पहले ही पूरे हुए है। हम देशवासियों ने 'संविधान हत्या दिवस' मनाया है। हमें हमेशा उन सभी लोगों को याद करना चाहिए, जिन्होंने Emergency का डटकर मुकाबला किया था। इससे हमें अपने संविधान को सशक्त बनाए रखने के लिए निरंतर सजग रहने की प्रेरणा मिलती है।

आप एक तस्वीर की कल्पना कीजिए। सुबह की धूप पहाड़ियों को छू रही है, धीरे-धीरे उजाला मैदानों की ओर बढ़ रहा है, और उसी

रौशनी के साथ बढ़ रही है फुटबॉल प्रेमियों की टोली। सीटी बजती है और कुछ ही पलों में मैदान तालियों और नारों से गूंज उठता है। हर Pass, हर Goal के साथ लोगों का उत्साह बढ़ रहा है। आप सोच रहे होंगे कि ये कौन सी खूबसूरत दुनिया है?

ये तस्वीर असम के एक प्रमुख क्षेत्र बोडोलैंड की वास्तविकता है। बोडोलैंड आज अपने एक नए रूप के साथ देश के सामने खड़ा है। यहां के युवाओं में जो ऊर्जा है, जो आत्मविश्वास है, वो फुटबॉल के मैदान में सबसे ज्यादा दिखता है। बोडो Territorial Area में, बोडोलैंड CEM Cup का आयोजन हो रहा है। ये सिर्फ एक Tournament नहीं है, ये एकता और उम्मीद का उत्सव बन गया है। 3 हजार 700 से ज्यादा टीमें, करीब 70 हजार खिलाड़ी, और उनमें भी बड़ी संख्या में हमारी बेटियों की भागीदारी। ये आँकड़े बोडोलैंड में बड़े बदलाव की गाथा सुना रहे हैं। बोडोलैंड अब देश के खेल नक्शे पर, Sports के map पर, अपनी चमक और बढ़ा रहा है।

एक समय था जब संघर्ष ही यहाँ की पहचान थी। तब यहाँ के युवाओं के लिए रास्ते सीमित थे। लेकिन आज उनकी आँखों में नए सपने हैं और दिलों में आत्मनिर्भरता का हौंसला है। यहाँ से निकले फुटबॉल खिलाड़ी अब बड़े स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं। हालीचरण नारजारी, दुर्गा बोरो, अपूर्वा नारजारी, मनबीर बसुमतारी - ये सिर्फ फुटबॉल खिलाड़ियों के नाम नहीं हैं - ये उस नई पीढ़ी की पहचान है जिन्होंने बोडोलैंड को मैदान से राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाया। इनमें से कई ने सीमित संसाधनों में अभ्यास किया, कई ने कठिन परिस्थितियों में अपने रास्ते बनाए, और आज इनका नाम लेकर देश के कितने ही नन्हें बच्चे अपने सपनों की शुरुआत करते हैं।

अगर हमें अपने सामर्थ्य का विस्तार करना है तो सबसे पहले हमें अपनी Fitness और Wellbeing पर ध्यान देना होगा। वैसे साथियों, Fitness के लिए, Obesity कम करने के लिए मेरा एक सुझाव आपको याद है ना ! खाने में 10 प्रतिशत तेल कम करो, मोटापा घटाओ। जब आप Fit होंगे, तो जीवन में और ज्यादा Super Hit होंगे।

हमारा भारत जिस तरह अपनी क्षेत्रीय, भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के लिए जाना जाता है उसी तरह, कला, शिल्प और कौशल की विविधता भी हमारे देश की एक बड़ी खूबी है। आप जिस क्षेत्र में जाएंगे, वहाँ की कुछ-न-कुछ खास और local चीज के बारे में आपको पता चलेगा । हम अक्सर 'मन की बात' में देश के ऐसे unique products के बारे में बात

WHETHER IT IS ODISHA, GUJARAT, OR ANY OTHER CORNER OF THE COUNTRY...

करते हैं। ऐसा ही एक product है मेघालय का एरी सिल्क (Eri Silk)। इसे कुछ दिन पहले ही GI Tag मिला है। एरी सिल्क (Eri Silk) मेघालय के लिए एक धरोहर की तरह है। यहाँ की जनजातियों ने, खासकर खासी (Khasi) समाज के लोगों ने पीढ़ियों से इसे सहेजा भी है, और अपने कौशल से समृद्ध भी किया है। इस सिल्क की कई ऐसी खूबियाँ हैं, जो इसे बाकी fabric से अलग बनाती हैं। इसकी सबसे खास बात है इसे बनाने का तरीका, इस सिल्क को जो रेशम के कीड़े बनाते हैं, उसे हासिल करने के लिए कीड़ों को मारा नहीं जाता है, इसलिए इसे, अहिंसा सिल्क भी कहते हैं।

आजकल दुनिया में ऐसे products की demand तेजी से बढ़ रही है, जिनमें हिंसा न हो, और प्रकृति पर उनका कोई दुष्प्रभाव न पड़े, इसलिए, मेघालय का एरी सिल्क (Eri Silk) global market के लिए एक perfect product है। इसकी एक और खास बात है, ये सिल्क (Silk) सर्दी में गरम करता है, और गर्मियों में ठंडक देता है। इसकी ये खूबी इसे ज्यादातर जगहों के लिए अनुकूल बना देती है। मेघालय की महिलाएं अब Self Help Group के जरिए अपनी इस धरोहर को और बड़े scale पर आगे बढ़ा रही हैं। मैं मेघालय के लोगों को एरी सिल्क (Eri Silk) को GI Tag मिलने पर बधाई देता हूँ। मैं आप सबसे भी appeal करूंगा, आप भी एरी सिल्क (Eri Silk) से बने कपड़ों को जरूर try करें और हाँ - खादी, handloom handicraft, Vocal for Local, इन्हें भी आपको हमेशा याद रखना है। ग्राहक भारत में बने product ही खरीदें, और व्यापारी भारत में बने product ही बेचें तो 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान को नई ऊर्जा मिलेगी।

Women Led Development का मंत्र भारत का नया भविष्य गढ़ने के लिए तैयार है। हमारी माताएं, बहनें, बेटियां आज सिर्फ अपने लिए ही नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए नई दिशा बना रही हैं। आप तेलंगाना के भद्राचलम की महिलाओं की सफलता के बारे में जानेंगे तो आपको भी अच्छा लगेगा। ये महिलाएं कभी खेतों में मजदूरी करती थीं। रोजी रोटी के लिए दिन-भर मेहनत करती थी। आज वही महिलाएं, millets, श्रीअन्न से biscuit बना रही हैं। ''भद्राद्री मिलेट मैजिक'' नाम से ये बिस्किट हैदराबाद से लंदन तक जा रहे है। भद्राचलम की इन महिलाओं ने Self Help Group से जुड़कर ट्रेनिंग ली।

इन महिलाओं ने एक और सराहनीय काम किया है। इन्होंने ''गिरी सैनिटरी पैड्स'' बनाना शुरू किया। सिर्फ तीन महीने में 40,000 पैड्स तैयार किए और उन्हें स्कूलों और आसपास के ऑफिसों में पहुँचाया-वो भी बहुत ही सस्ती कीमत पर।

कर्नाटका के कलबुर्गी की महिलाओं की उपलब्धि भी बेहतरीन है। इन्होंने ज्वार की रोटी को एक ब्रांड बना दिया है। इन्होंने जो कॉपरेटिव बनाई है, उसमें हर रोज तीन हजार से ज्यादा रोटियाँ बन रही हैं। इन रोटियों की खुशबू अब सिर्फ गाँव तक सीमित नहीं है। बेंगलुरु में Special Counter खुल चुका है। Online Food Platforms पर order आ रहे हैं। कलबुर्गी की रोटी अब बड़े शहरों के किचन तक पहुँच रही है। इसका बहुत शानदार असर इन महिलाओं पर पड़ा है, उनकी आय बढ़ रही है।

अलग-अलग राज्यों की इन गाथाओं में अलग-अलग चेहरे हैं। लेकिन उनकी चमक एक जैसी है। ये चमक है आत्मविश्वास की, आत्मनिर्भरता की। ऐसा ही एक चेहरा है, मध्यप्रदेश की सुमा उइके, सुमा जी का प्रयास बहुत सराहनीय है। उन्होंने बालाघाट जिले के कटंगी ब्लॉक में, Self Help Group

IN JAMMU AND KASHMIR, PEOPLE PERFORMED YOGA ON THE CHENAB BRIDGE...

से जुड़कर मशरूम की खेती और पशुपालन की training ली। इससे उन्हें आत्मनिर्भरता की राह मिल गई। सुमा उइके की आय बढ़ी तो उन्होंने अपने काम का विस्तार भी किया। छोटे से प्रयास से शुरू हुआ ये सफर अब 'दीदी कैंटीन' और 'Thermal Therapy Centre' तक पहुँच चुका है। देश के कोने-कोने में ऐसी ही अनगिनत महिलाएं, अपना और देश का भाग्य बदल रही हैं।

पिछले दिनों मुझे वियतनाम के बहुत से लोगों ने विभिन्न माध्यमों से अपने संदेश भेजे। इन संदेशों की हर पंक्ति में श्रद्धा थी, आत्मीयता थी। उनकी भावनाएं मन को छूने वाली थी। वो लोग भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों 'Relics' के दर्शन कराने के लिए भारत के प्रति अपना आभार प्रकट कर रहे थे। उनके शब्दों में जो भाव थे, वो किसी औपचारिक धन्यवाद से बढ़कर थे।

मूल रूप से भगवान बुद्ध के इन पवित्र अवशेषों की खोज आंध्र प्रदेश में पालनाडू जिले के नागार्जुनकोंडा में हुई थी। इस जगह का बौद्ध धर्म से गहरा नाता रहा है। कहा जाता है कि कभी इस स्थान पर श्रीलंका और चीन सहित दूर-दूर के लोग आते थे।

पिछले महीने भगवान बुद्ध के इन पवित्र अवशेषों को भारत से वियतनाम ले जाया गया था। वहाँ के 9 अलग-अलग स्थानों पर इन्हें जनता के दर्शन के लिए रखा गया। भारत की ये पहल एक तरह से वियतनाम के लिए राष्ट्रीय उत्सव बन गई। आप कल्पना कर सकते हैं, करीब 10 करोड़ लोगों की आबादी वाले वियतनाम में डेढ़ करोड़ से ज्यादा लोगों ने भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों के दर्शन किए। social media पर जो तस्वीरें और video मैंने देखे, उन्होंने ये एहसास कराया कि श्रद्धा की कोई सीमा नहीं होती। बारिश हो, तेज धूप हो, लोग घंटों कतारों में खड़े रहे। बच्चे, बुजुर्ग, दिव्यांगजन सभी भाव-विभोर थे। वियतनाम के राष्ट्रपति, उप-प्रधानमंत्री, वरिष्ठ मंत्री, हर कोई नत-मस्तक था। इस यात्रा के प्रति वहाँ के लोगों में सम्मान का भाव इतना गहरा था कि वियतनाम सरकार ने इसे 12 दिन के लिए और आगे बढ़ाने का आग्रह किया था और इसे भारत ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

भगवान बुद्ध के विचारों में वो शक्ति है, जो देशों, संस्कृतियों और लोगों को एक सूत्र में बांधती है। इससे पहले भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेष थाईलैंड और मंगोलिया ले जाए गए थे, और वहाँ भी श्रद्धा का यही भाव देखा गया। मेरा आप सभी से भी आग्रह है कि अपने राज्य के बौद्ध स्थलों की यात्रा अवश्य करें। ये एक आध्यात्मिक अनुभव होगा, साथ ही हमारी सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने का एक सुंदर अवसर भी बनेगा।

इस महीने हम सबने 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया। मुझे आपके हजारों संदेश मिले। कई लोगों ने अपने आस-पास के उन साथियों के बारे में बताया जो अकेले ही पर्यावरण बचाने के लिए निकल पड़े थे और फिर उनके साथ पूरा समाज जुड़ गया। सबका यही योगदान, हमारी धरती के लिए बड़ी ताकत बन रहा है। पुणे के श्री रमेश खरमाले जी, उनके कार्यों को जानकर, आपको बहुत प्रेरणा मिलेगी। जब हफ्ते के अंत में लोग आराम करते हैं, तो रमेश जी और उनका परिवार कुदाल और फावड़ा लेकर निकल पड़ते हैं। जानते हैं कहाँ? जुन्नर की पहाड़ियों की ओर। धूप हो या ऊंची चढ़ाई, उनके कदम रुकते नही। वो झाड़ियाँ साफ करते हैं, पानी रोकने के लिए trench खोदते हैं और बीज बोते हैं। उन्होंने सिर्फ दो महीनों में 70 trench बना डाले। रमेश जी ने कई सारे छोटे तालाब बनाए हैं, सैकड़ों पेड़ लगाए हैं। वो एक Oxygen Park भी बनवा रहे हैं। नतीजा ये हुआ कि यहाँ अब पक्षी लौटने लगे हैं, वन्य जीवन को नई सांसें मिल रही हैं।

पर्यावरण के लिए एक और सुंदर पहल देखने को मिली है, गुजरात के अहमदाबाद शहर में। यहाँ नगर निगम ने 'Mission for Million Trees' अभियान शुरू किया है। लक्ष्य है - लाखों पेड़ लगाना। इस अभियान की एक खास बात है 'सिंदूर वन'। यह वन Operation Sindoor के वीरों को समर्पित है। सिंदूर के पौधे उन बहादुरों की याद में लगाए जा रहे हैं, जिन्होंने देश के लिए सब कुछ समर्पित कर दिया। यहाँ एक और अभियान को नई गति दी जा रही है एक पेड़ माँ के नाम इस अभियान के तहत देश में करोड़ों पेड़ लगाए जा चुके हैं। आप भी अपने आपके गाँव या शहर में चल रहे ऐसे अभियान में जरूर हिस्सा लीजिए। पेड़ लगाइए, पानी बचाइए, धरती की सेवा कीजिए, क्योंकि जब हम प्रकृति को बचाते हैं, तो असल में हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित करते हैं।

महाराष्ट्र के एक गाँव ने भी बड़ी शानदार मिसाल पेश की है। छत्रपति संभाजी नगर जिले की ग्राम पंचायत है 'पाटोदा'। ये Carbon Neutral गाँव पंचायत है। इस गाँव में कोई अपने घर के बाहर कचरा नहीं फेंकता। हर घर से कचरा इकट्ठा करने की पूरी व्यवस्था है। यहाँ गंदे पानी का Treatment भी होता है। बिना साफ किए कोई पानी नदी में नहीं जाता। यहाँ उपलों से अंतिम संस्कार होता है और उस राख से दिवंगत के नाम पर पौधा लगाया जाता है। इस गाँव में साफ-सफाई भी देखते ही बनती है। छोटी-छोटी आदतें जब सामूहिक संकल्प बन जाती हैं, तो बड़ा बदलाव तय हो जाता है।

इस समय सबकी निगाहें International Space Centre पर भी है। भारत ने एक नया इतिहास रचा है। मेरी Group Captain शुभांशु शुक्ला से बात भी हुई है। आपने भी शुभांशु से मेरी बातचीत को जरूर सुना होगा। अभी, शुभांशु को कुछ और दिन International Space Centre रहना। हम इस Mission के बारे में और बातें करेंगे, लेकिन, 'मन की बात' के अगले Episode में। अब समय है, इस Episode में आपसे विदा लेने का। लेकिन साथियो, जाते-जाते मैं आपको एक खास दिन की याद दिलाना चाहता हूँ। 1 जुलाई, को हम दो बेहद महत्वपूर्ण Professions का सम्मान करते हैं, Doctors और CA, ये दोनों ही समाज के ऐसे स्तम्भ हैं, जो हमारी जिंदगी को बेहतर बनाते हैं। Doctor हमारे स्वास्थ्य के रक्षक हैं और CA (Chartered Accountant) आर्थिक जीवन के मार्गदर्शक हैं। मेरी सभी Doctors और Chartered Accountants को ढेर सारी शुभकामनाएं। ▪

27 फरवरी, 1931 के दिन चन्द्रशेखर आजाद अपने साथी सुखदेव राज के साथ बैठकर विचार-विमर्श कर रहे थे कि तभी वहां अंग्रेजों ने उन्हें घेर लिया।

चन्द्रशेखर आजाद ने सुखदेव को तो भगा दिया पर खुद अंग्रेजों का अकेले ही सामना करते रहे, अंत में जब अंग्रेजों की एक गोली उनकी जांघ में लगी तो अपनी बंदूक में बची एक गोली को उन्होंने खुद ही मार ली और अंग्रेजों के हाथों मरने की बजाय खुद ही को ही समाप्त कर लिया।

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में देश के कई क्रांतिकारी वीर-सपूतों की याद आज भी हमारी रुह में जोश और देशप्रेम की एक लहर पैदा कर देती है एक वह समय था जब लोग अपना सब कुछ छोड़कर देश को आजाद कराने के लिए बलिदान देने को तैयार रहते थे। देशभक्ति की जो मिसाल हमारे देश के क्रांतिकारियों ने पैदा की थी उसी का परिणाम है कि आज हम सुख चैन से स्वतंत्र देश के नागरिक के रूप में आजाद हैं। वीरता और पराक्रम की कहानी हमारे देश के वीर क्रांतिकारियों ने रखी थी वह आजादी की लड़ाई की विशेष कड़ी थी, जिसके बिना आजादी मिलना नामुमकिन थी। देशप्रेम, वीरता और साहस की एक ऐसी ही मिसाल थे। शहीद क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद, 25 साल की उम्र में भारत माता के लिए शहीद होने वाले योद्धा थे। इस महापुरुष के बारें में जितना कहा जाए उतना कम है। आजाद प्रखर देशभक्त थे।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म मध्यप्रदेश के जिला अलीराजपुर ग्राम भाबरा में 23 जुलाई सन् 1906 को हुआ। आजाद के पिता पंडित सीताराम तिवारी संवत् 1956 में अकाल के समय अपने पैतृक निवास बदरका, वर्तमान उन्नाव जिला, उत्तरप्रदेश को छोड़कर कुछ दिनों मध्य प्रदेश अलीराजपुर रियासत में नौकरी करते रहे, फिर जाकर भाबरा गाँव में बस गये। उनकी माँ का नाम जगरानी देवी था। आजाद का प्रारंभिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थित भाबरा गाँव में बीता। अतएव बचपन में आजाद ने भील बालकों के साथ खूब धनुष बाण चलाये। यहीं बालक चन्द्रशेखर का बचपन बीता। इस प्रकार उन्होंने निशानेबाजी बचपन में ही सीख ली थी। बालक चन्द्रशेखर आज़ाद का मन अब देश को आजाद कराने के अहिंसात्मक उपायों से हटकर सशस्त्र क्रान्ति की ओर मुड़ गया। उस समय बनारस क्रान्तिकारियों का गढ़ था। वह मन्मथनाथ गुप्त और प्रणवेश चटर्जी के संपर्क में आये और क्रान्तिकारी दल के सदस्य बन गये। क्रान्तिकारियों का वह दल हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघर्ष के नाम से जाना जाता था।

असहयोग आंदोलन से जागे देश में दमन-चक्र जारी था, सत्याग्रहियों के बीच निकल पड़े, प्रस्तरखंड उठाया बेंत बरसाने वालों में से एक सिपाही के सिर में दे मारा, पेशी होने पर अपना नाम आजाद, काम आजादी के कारखाने में मजदूरी और निवास जेलखाने में बताया। गुस्साए अंग्रेज मजिस्ट्रेट ने पंद्रह बेंतों की सख्त सजा सुनाई, हर सांस में वंदेमातरम का निनाद करते हुए उन्होंने यह परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद

अचूक निशानेबाज आजाद ने अपना पावन शरीर मातृभूमि के शत्रुओं को फिर कभी छूने नहीं दिया। क्रांति की जितनी योजनाएं बनीं सभी के सूत्रधार आजाद थे, कानपुर में भगत सिंह से भेंट हुई, साथियों के अनुरोध पर आजाद एक रात घर गए और सुषुप्त मां एवं जागते पिता को प्रणाम कर कर्तव्य पथ पर वापस आ गए। सांडर्स का वध-विधान पूरा कर राजगुरु, भगतसिंह और आजाद फरार हो गए, 8 अप्रैल 1929 को श्रमिक विरोधी ट्रेड डिस्प्यूट बिल का परिणाम सभापति द्वारा खोलते ही इसके लिए नियुक्त दर्शक दीर्घा में खड़े दत्त और भगत सिंह को असेंबली में बम के धमाके के साथ इंकलाब जिंदाबाद का नारा बुलंद करते गिरफ्तार कर लिया गया। भगत सिंह को छुड़ाने की योजना चन्द्रशेखर ने बनाई, पर बम जांचते वोहरा सहसा शहीद हो गए, घर में रखा बम दूसरे दिन फट जाने से योजना विफल हो गई, हमारी आजादी की नींव में उन सूरमाओं का इतिहास अमर है जिन्होंने हमें स्वाभिमान पूर्वक अपने इतिहास और संस्कृति की संरक्षा की अविचल प्रेरणा प्रदान की है।

27 फरवरी, 1931 के दिन चन्द्रशेखर आजाद अपने साथी सुखदेव राज के साथ बैठकर विचार विमर्श कर रहे थे कि तभी वहां अंग्रेजों ने उन्हें घेर लिया। चन्द्रशेखर आजाद ने सुखदेव को तो भगा दिया पर खुद अंग्रेजों का अकेले ही सामना करते रहे, अंत में जब अंग्रेजों की एक गोली उनकी जांघ में लगी तो अपनी बंदूक में बची एक गोली को उन्होंने खुद ही मार ली और अंग्रेजों के हाथों मरने की बजाय खुद को ही समाप्त कर लिया। कहते हैं मौत के बाद अंग्रेजी अफसर और पुलिस वाले चन्द्रशेखर आजाद की लाश के पास जाने से भी डर रहे थे, चंद्रशेखर आजाद को वेश बदलने में बहुत माहिर माना जाता था, वह रूसी क्रांतिकारियों की कहानी से बहुत प्रेरित थे। चन्द्रशेखर आजाद की वीरता की कहानियां कई हैं जो आज भी युवाओं में देश प्रेम की लहर पैदा कर देती हैं, देश को अपने इस सच्चे वीर स्वतंत्रता सेनानी पर हमेशा गर्व रहेगा।

चन्द्रशेखर आजाद ने वीरता की नई परिभाषा लिखी। उनके बलिदान के बाद उनके द्वारा प्रारम्भ किया गया आन्दोलन और तेज हो गया, उनसे प्रेरणा लेकर हजारों युवक स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। आजाद की शहादत के सोलह वर्षों बाद 15 अगस्त सन् 1947 को हिन्दुस्तान की आजादी का उनका सपना पूरा तो हुआ। परन्तु चन्द्रशेखर आजाद, आजाद भारत को देख न सके। ▪

तिलकजी ने मराठा अंग्रेजी में और केसरी मराठी में समाचार पत्र प्रकाशित किये। मराठी व अंग्रेजी के दोनों समाचार पत्र राष्ट्रवादी विचारों के उद्घोषक बन गये। हिन्दू समाज की कुरीतियों के बारे में तिलकजी ने लेख लिखे। जन सामान्य में सामाजिक, राजनैतिक चेतना जागृत करने के लिए उन्होंने केसरी के माध्यम से सार्वजनिक गणेशोत्सव मनाने का परामर्श दिया।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रणेता तिलकजी

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रतीक के नाते हम लोकमान्य तिलक का स्मरण करते हैं। इस महापुरूष का जन्म 23 जुलाई 1856 को रत्नागिरी में हुआ। गंगाधर शास्त्री और पार्वती बाई उनके माता-पिता थे। लोकमान्य गंगाधर तिलक की धार्मिक और संस्कृत की शिक्षा घर पर हुई। बाद में यह परिवार पूना चला आया। इनकी शिक्षा पूना के मराठी और इंग्लिश स्कूल से हुई। उच्च शिक्षा के लिए मुंबई के एलिफिस्टिन कॉलेज के विद्यार्थी बने उन्होंने संस्कृत में कविताएं भी की। ग्रेजुएट होने के बाद एलएलबी के अध्ययन काल में उन्होंने हिन्दू विधि शास्त्र का विशद अध्ययन किया। वे आगरकर के संपर्क में आये और न्यू इंग्लिश स्कूल की स्थापना की। इसके बाद चिपलुनकर का सहयोग मिला। तिलकजी ने मराठा अंग्रेजी में और केसरी मराठी में समाचार पत्र प्रकाशित किये। मराठी, अंग्रेजी के दोनों समाचार पत्र राष्ट्रवादी विचारों के उद्घोषक बन गये। दोनों समाचार पत्रों की सामग्री समान रहती थी।

हिन्दू समाज की कुरीतियों के बारे में तिलकजी ने लेख लिखे। जन सामान्य में सामाजिक, राजनैतिक चेतना जागृत करने के लिए उन्होंने केसरी के माध्यम से सार्वजनिक गणेशोत्सव मनाने का परामर्श दिया। अभी तक महाराष्ट्र के घरों में गणेश पूजन की परम्परा थी। इस उत्सव के माध्यम से राजनैतिक आंदोलन को ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचाने की पहल प्रारंभ हुई।

आज न केवल सार्वजनिक गणेशोत्सव महाराष्ट्र में वरन् पूरे देश में मनाया जाता है। संस्कृति के माध्यम से राष्ट्र चेतना का अभियान तिलकजी ने सफल करके दिखाया।

1896-97 में महाराष्ट्र सहित मप्र, बिहार, पंजाब में भीषण अकाल पड़ा। प्लेग से लोग मरने लगे। लोगों को सहायता पहुंचाने में तिलक जी ने सक्रिय भूमिका निभाई, 1897 में महारानी विक्टोरिया के राज्यरोहण की हीरक जयंती मनाई गई। अधिकारी रैण्ड जिसने पूना में भेदभाव और ज्यादती की। 21 जून को पूना के गर्वमेंट हाउस में समारोह था।

कार्यक्रम की समाप्ति के बाद अंग्रेज अफसर रैण्ड टम-टम से चल पड़ा। इसके बाद लेफ्टिनेंट आयस्टन पत्नी के साथ दूसरी टम-टम से चला। रास्ते में उन पर पिस्तौल से गोलियां दागी गई। जनता पर अत्याचार का बदला क्रांतिकारियों ने ले लिया। उस समय केसरी में भवानी की तलवार शीर्षक कविता प्रकाशित हुई, जिसका सारांश यह था कि दुष्टों को मारकर मैंने भूमि का भार कम किया, मैंने स्वराज्य स्थापना और स्वधर्म रक्षा से देश को मुक्त किया।

तिलकजी पर राजद्रोह का मुकदमा चला। उन्हें कारावास की सजा मिली। उनके ऊपर दूसरा राजद्रोह का मुकदमा लादा गया। उन्हें देश निकाला दिया गया रंगून माण्डलें जेल में तिलकजी को रखकर यातनाएं दी गई। जून 1914 से तिलकजी को माण्डले जेल से मुक्ति मिली। इसके बाद से पूरे देश ने तिलकजी को राष्ट्रनायक मान लिया।

स्वतंत्रता का उद्घोष जो राष्ट्र चेतना का मंत्र बन गया। उससे यह जाहिर हो गया कि लोकमान्य तिलक प्रखर देशभक्त और राष्ट्रवादी नेता है। एक जनवरी 1917 को तिलकजी कानपुर गये, वहां उनका देवता के समान स्वागत हुआ, स्थान-स्थान पर उनकी आरती उतारी गई।

कानपुर के परेड ग्राउण्ड पर बीस हजार लोगों की सभा में उनका अभिनंदन किया गया। हिन्दी नहीं जानने के कारण उन्होंने अंग्रेजी में भाषण देते हुए दिव्य उद्घोष किया कि स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। कांग्रेस में राष्ट्रवादी विचार का नेतृत्व तिलक जी ने किया। उनके विचारों से क्रांतिकारियों ने भी प्रेरणा ली। संस्कृति से ही राष्ट्र चेतना प्रखर हो सकती है, इसलिए उन्होंने धार्मिक त्यौहारों को राजनैतिक जागृति का माध्यम बनाया। ▪

क्या है सेक्यूलरिज्म?

पं. दीनदयाल उपाध्याय

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत वर्ष को एक सेक्यूलर स्टेट घोषित किया गया है तथा तबसे यह शब्द लोगों की जुबान पर इतना चढ़ गया है कि क्या बड़े-बड़े नेता और क्या गाँव-गाँव, गली-गली में बातचीत के स्वर को ऊँचा करके ही भाषण की हवस मिटाने वाले छुट भैये, सभी दिन में चार बार सेक्यूलर स्टेट की दुहाई देकर अपनी बात मनवाने का तथा दूसरों को उसके विरुद्ध बताकर गलत सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। सुनते-सुनते शब्द तो कानों में रम गया है, किंतु अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि भारत सरकार बोलने वाले नेता तथा सुनने वाली जनता सेक्यूलर शब्द का क्या अर्थ समझती हैं। विधान परिषद् में सेक्यूलर स्टेट का नाम लेने पर जब एक सदस्य ने पं. जवाहरलाल नेहरू से सेक्यूलर स्टेट का मतलब पूछा तो उन्होंने भी अर्थ बताने के स्थान पर सम्मानीय सदस्य को डाँटकर शब्द कोष देखने के लिए कहा। फलतः समस्या सुलझ नहीं पाई और आज भी लोग सेक्यूलर शब्द से भिन्न-भिन्न अर्थ लगाते हैं। सेक्यूलर के लिए भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त पर्यायों से यह भिन्नता स्पष्ट हो जाती है। लौकिक, धर्महीन, धर्मरहित, धर्मनिरपेक्ष, अधार्मिक, अधर्मी, निधर्मी, असांप्रदायिक आदि अनेक शब्दों का सेक्यूलर के पर्याय इस नाते प्रयोग होता है। निश्चित ही उपर्युक्त सभी शब्द समानार्थक नहीं हैं। उनमें मत भिन्नता ही नहीं है अपितु वे विरोध की सीमा-रेखा को भी स्पर्श कर जाते हैं। अपने राज्य के स्वरूप के संबंध में इतना वैषम्य वास्तव में हितावह नहीं है। अच्छा हो कि हम सेक्यूलर शब्द के ठीक अर्थ समझ लें, कम से कम जिस अर्थ में हम भारत को सेक्यूलर स्टेट बनाना चाहते हैं, उसका तो निर्णय कर ही लेना चाहिए।

रोमन साम्राज्य की प्रतिक्रिया

नेहरूजी के आदेशानुसार यदि डिक्शनरी का सहारा लिया जाए तो समस्या विशेष नहीं सुलझती, क्योंकि कोष में सेक्यूलर के अर्थ हैं अर्थात् अपना सौ वर्षों में एक बार होने वाला लौकिक। इनमें से लौकिक अर्थ सर्व साधारण व्यवहार में आता है तथा स्प्रिचुअल के विरोध में इसका प्रयोग होता है। सेक्यूलर स्टेट को कल्पना के विकास के पीछे भी यही भाव है। क्योंकि सेक्यूलर स्टेट की कल्पना का उदय पवित्र रोमन साम्राज्य के विरोध में से हुआ है। यूरोप के सभी देश किसी समय रोम के पोप के अधीन थे तथा प्रत्येक देश का राजा पोप के नाम पर ही शासन करता था। किंतु धीरे-धीरे रोमन कैथोलिक मत और पोप दोनों या इनमें से किसी एक के प्रति अविश्वास और विरोध की भावना बढ़ने लगी। फलतः प्रोटेस्टेंड मत का जन्म हुआ तथा फ्रांस की क्रांति के कारण और उसके परिणामस्वरूप जनता के घोष समानता और स्वतंत्रता और बंधुत्व हुए। साथ ही राष्ट्रीयता के बढ़ते हुए ईसाई मत में अनेक चर्चों की स्थापना ईसाई मत के सामान्य जीवन पर घटते हुए प्रभाव ने पवित्र रोमन साम्राज्य को विघटित करके, ऐसे राज्य की कल्पना को जन्म दिया जिसमें सभी मतों के मानने वाले नागरिकता के समान अधिकारों का उपयोग कर सकें तथा राज्य जनता के मत में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप न करें। लोगों की दृष्टि अधिकाधिक भौतिकवादी होने के कारण लोगों की दृष्टि में राज्य का महत्व केवल लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र रह गया है तथा आत्मा संबंधी सभी प्रश्नों की व्यक्तिगत इच्छा-अनिच्छा पर छोड़ देना उचित समझा।

आज भी लोग सेक्यूलर शब्द से भिन्न-भिन्न अर्थ लगाते हैं। सेक्यूलर के लिए भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त पर्यायों से यह भिन्नता स्पष्ट हो जाती है।

लौकिक, धर्महीन, धर्मरहित, धर्मनिरपेक्ष, अधार्मिक, अधर्मी, निधर्मी, असांप्रदायिक आदि अनेक शब्दों का सेक्यूलर के पर्याय इस नाते प्रयोग होता है। निश्चित ही उपर्युक्त सभी शब्द समानार्थक नहीं हैं। उनमें मत भिन्नता ही नहीं है अपितु वे विरोध की सीमा-रेखा को भी स्पर्श कर जाते हैं।

लौकिक और पारलौकिक

यूरोप में सेक्यूलर स्टेट की कल्पना के विकास का संक्षिप्त विवरण ऊपर दिया है। स्प्रिचुअल और टेंपोरल (सेक्यूलर) दो

भिन्न-भिन्न क्षेत्र करके राज्य की ओर केवल सेक्यूलर आवश्यकताओं की पूर्ति का भार देकर भी यूरोप का कोई राज्य मत विशेष के पक्षपात की नीति से मुक्त नहीं हो पाया है। इंग्लैंड का राजा अभी भी (धर्मरक्षक) कहा जाता है तथा उसके लिए आवश्यक है कि वह मानने वाला प्रोटेस्टेंट ही हो, राज्य की ओर से गिरजे और पादरियों को वेतन और सहायता भी मिलती है। अमेरिका में भी प्रेसीडेंट के लिए शपथ लेते समय विशिष्ट धार्मिक विधि को पूरा करना आवश्यक है।

भारतवर्ष में वास्तविक रूप से तो राज्य की कल्पना के अंतर्गत लौकिक राज्य की ही कल्पना है। हमारे यहाँ धर्मगुरु को कभी राजा का स्थान नहीं मिला है। राजा स्वयं किसी भी मत का मानने वाला क्यों न हो, सदा सभी मतावलंबियों के प्रति न्याय और समानता का व्यवहार करता था। हाँ आज के सेक्यूलरिज्म की कल्पना के अनुसार पक्षपात रहित रहने का अर्थ किसी की मदद न करना नहीं था अपितु सबकी मदद करना था। अतः राज्य सब मतावलंबियों की समान रूप से सहायता करता था। इस सहायता के पीछे यह भाव निहित था कि प्रथम तो बिना पारलौकिक उन्नति के लौकिक उन्नति व्यर्थ है तथा दूसरे राजा का कर्तव्य है कि प्रजा की सब प्रकार की उन्नति का प्रबंध करे। और पारलौकिक क्षेत्र में यह प्रबंध सब मतों को समान सहायता देते हुए उनके आपसी संबंधों को सद्भावनापूर्ण बनाते हुए ही होता था। अतः किसी मत का राज्य न कायम करते हुए भी ''यतो अयुदयनि श्रेयस प्राप्ति स धर्मः'' की व्याख्या के अनुसार धर्म का विकास करते हुए धर्मराज्य की अवश्य ही स्थापना की जाती थी।

धर्म जीवन है

आज भारतवर्ष के नेतागण यद्यपि पश्चिमी आदर्शों को अपनाकर भावी भारत की रचना करना चाहते हैं और उसके अनुसार पश्चिम के अर्थ में सेक्यूलर स्टेट का अर्थ लौकिक राज्य ही लगाया जा सकता है, किंतु भारतीय जनता धर्मराज्य या रामराज्य की भूखी है और वह केवल लौकिक उन्नति में ही संतोष नहीं कर सकती। भारतीयता की स्थापना भी केवल एकांगी उन्नति से नहीं हो सकती क्योंकि हमने लौकिक और पारलौकिक उन्नति को एक दूसरे का पूरक ही नहीं तो एक दूसरे से अभिन्न माना है। किंतु पारलौकिक उन्नति के क्षेत्र में राज्य की ओर से किसी एक मत की कल्पना अनुचित होगी, अतः ऐसा वातावरण उत्पन्न करना होगा जिसमें सभी मत बढ़ सकें तथा एक सद्विप्राः बहुधा वदन्ति के सिद्धांत का पालन कर सकें। फलतः हमारे राज्य के लिए लौकिक राज्य सेक्यूलर स्टेट को ठीक पर्याय होने पर भी मौजूद नहीं होगा।

धर्म शब्द की उपर्युक्त परिभाषा एवं ''धारणध्दर्ममित्याहुः धर्मोधारयते प्रजा'' आदि परिभाषाओं के अनुसार यह शब्द अंग्रेजों के रिलीजन का पर्यायवाची न होकर उससे भिन्न है तथा व्यापक अर्थवाला है। हमारे यहाँ बिना धर्म के तो किसी के भाव की, उसके अस्तित्व की ही कल्पना कठिन है। फलतः हम समझते हैं कि हमारा राज्य धर्म को तिलांजलि नहीं दे सकता; अतः अधार्मिक, धर्मनिरपेक्ष, धर्मरहित, धर्महीन, धर्म विरत आदि सभी शब्द न तो हमारे राज्य के आदर्श को ही प्रकट करते हैं और न सेक्यूलर स्टेट ठीक पर्याय हो ही सकते हैं।

मत और धर्म के भेद

अंग्रेजों के रिलीजन शब्द का पर्यायवाची शब्द यहाँ मत है तथा एक मत के माननेवाले को संप्रदाय कहा जाता है, जैसे शैव संप्रदाय, वैष्णव संप्रदाय, खिस्ती संप्रदाय आदि। निश्चित ही पहले और आज भी राज्य इनमें से किसी एक संप्रदाय का नहीं हो सकता। राज्य की दृष्टि से तो सबके लिए ही समान होनी चाहिए। फलतः हम कह सकते हैं कि राज्य को सांप्रदायिक न होकर असांप्रदायिक होना चाहिए। यही राज्य का सही आदर्श है। ऐसा राज्य किसी संप्रदाय विशेष के प्रति पक्षपात या किसी के प्रति घृणा का व्यवहार न करते हुए भी जीवन की लौकिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हुए धर्मराज्य हो सकता है।

असांप्रदायिक कहें

असांप्रदायिक शब्द से राज्य के ठीक-ठीक आदर्श का ही बात नहीं होता अपितु सेक्यूलर के शाब्दिक नहीं तो पाश्चात्य व्यवहारिक अर्थ के भी यह बहुत निकट है। रूस को छोड़कर किसी राज्य ने कभी रिलीजन (मत) को समाप्त नहीं किया और आज तो रूस में भी पूजा स्वातंत्र्य को मान लिया है यद्यपि राज्य की ओर से किसी को कोई सुविधा नहीं मिलेगी। शेष सभी राज्यों में सभी संप्रदायों को अपने मत के द्वारा आत्मिक, शारीरिक स्वतंत्रता है तथा इंग्लैंड के राजा को छोड़कर शेष कहीं किसी संप्रदाय विशेष के प्रति पक्षपात नहीं है। अतः उन राज्यों को भी पवित्र रोमन साम्राज्य के विरोध में चाहे लौकिक समझा जाए, किंतु असांप्रदायिक कहना ही अधिक युक्ति संगत होगा। असांप्रदायिक शब्द के द्वारा हमारे नेताओं का अर्थ भी अधिक स्पष्ट होता है क्योंकि आज सेक्यूलर शब्द का प्रयोग केवल पाकिस्तान से, जिसने अपने आपको इस्लामी राज्य घोषित किया है भिन्नता दिखाना ही है। भारत इस्लामी राज्य के समान किसी एक संप्रदाय का राज्य नहीं है यही हमारे नेता प्रकट करना चाहते हैं और इसके लिए उन्होंने सेक्यूलर शब्द को चुना है। आज यद्यपि सांप्रदायिक और राष्ट्रीय शब्दों का ठीक-ठीक ज्ञान न होने के कारण सेक्यूलर शब्द का नाम लेकर रेडियो से गीता और रामायण आदि का पाठ बंद करना आदि अनेक कार्य कर दिए जाते हैं। फिर भी भारतीय राज्य का आदर्श घोषित करते समय हमारे नेताओं के मस्तिष्क में जो प्रधान धारणा रही वह असांप्रदायिक शब्द से ही अधिक व्यक्त होती है। उपर्युक्त सभी कारणों में से असांप्रदायिक शब्द ही सेक्यूलर का निकटतम भाषांतर है और उसी का प्रयोग किया जाना चाहिए। ▪

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गरीब कल्याण के 11 साल पूर्ण होने पर प्रदर्शनी का उद्घाटन एवं अवलोकन किया।

▪ संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने श्रीराम मंदिर में पुष्प अर्पित किये।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विश्व पर्यावरण दिवस पर "एक पेड़ मां के नाम" अभियान का शुभारंभ किया।

▪ प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह एवं प्रदेश सह प्रभारी श्री सतीश उपाध्याय ने "एक पेड़ मां के नाम" अभियान के तहत पौधारोपण किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सांसद एवं विधायकों के प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश कार्यालय में संगठनात्मक कार्यक्रमों को लेकर कार्यशाला को संबोधित किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सदानीरा समागम का शुभारंभ किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राज्य स्तरीय गौ-शाला सम्मेलन को संबोधित किया।

MPIDC
MP INDUSTRIAL DEVELOPMENT CORPORATION LTD.

मध्यप्रदेश में उद्योग और समृद्धि का नया युग

इन्वेस्ट मध्यप्रदेश
अनंत संभावनाएं

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2025

₹30.77 लाख करोड़ के रिकॉर्ड निवेश प्रस्ताव

21.40 लाख नये रोज़गार

25000+	60+ देश	9	300+	600+	5000+	500+
रजिस्ट्रेशन	100+ प्रतिनिधि	पार्टनर देश	कम्पनियां	बीटजी मीटिंग	बीटबी मीटिंग	प्रवासियों की भागीदारी

प्रदेश की क्षमताओं में निवेशकों के विश्वास
के लिए हृदय से आभार...

DI8018/25